कविकुलकल्पतरु

श्रीमत्कविकुल भूषण चिन्तामणि महा

राजरचित

जिसमें

काव्य गुण, उदाहरण सहित अलङ्कार, काव्य
दोष, शब्दार्थ, और श्रीमहारानी राधिका जी
की स्तुति कथन अरु अन्य नायिका वृत्तान्तभाव
अष्टादश चेष्टा और शृंगारादि क वर्णित हैं

वही

भाषा काव्य रसिकों के पठनार्थ पण्डितमहेशदत्त
केद्वारा यथा विधि शुद्ध होकर

स्थान लखनऊ
मुन्शी नवलकिशोर के पाषाण यन्त्रालय में अति स्वच्छता पूर्वक छपा

जनवरी सन १८७५ ई०

श्रीगणेशायनमः॥

अथ श्री चिंतामनि कवि रचित भाषा कवि

॥*॥कुल कल्पतरु लिख्यते

॥अथ कवित्त॥

श्रीगण नायक संडके अग्र गह्यौ सुर सिंधु सरोज रह्यौ फवि॥हाथनि अंकुश पाश अभय वर तुंदिल अंगनि में उमगी छवि॥मा नौं दयामय सबकौं अंकुर दंत की दीपति यौं बरनै कवि॥कुंभ सिंदूर लसै मनि सुंदर मानौं उदय गिरि अंगनि मे रवि॥१॥मेटै घ नावलि सी विघनाव लि तीषन कानन पौ न उदारसौं॥सेवकौं नित देत अभय फ ल लैवारसौं कल्पद्रुम डारसौं॥श्रीगिरिजा हरजू को दुलारो यहै भजनीय जो चित्त वि चारसौं॥लागि सदा मनि सिंधुर आनन सुंदर इंदुरके असवारसौं॥२॥दोहा॥जेसुर बानी ग्रंथहैं तिनको समुझ विचार॥चिंता मनि कवि कहतहै भाषा कवित विचार॥ ३॥बनकहाउ रस मे जुहै कवित कहावै सो इ॥गद्य पद्य द्वैभांति कौं सुरबानी मे होइ॥ ४॥छंद निबद्ध सुपद्य कहि गद्य होत बिन

छंद ॥ भाषा छंद निबद्ध सुनि सुकवि होत र सानंद ॥ ५ ॥ मेरे पिंगल ग्रंथते समुझो छंद विचार ॥ रीति सुभाषा कवित की बरनत बुध अनुसार ॥ ६ ॥ सगुना लंकारन सहित दोष रहित जो होइ ॥ शब्द अर्थ ताको कवित कहत विबुध सब कोइ ॥ ७ ॥ जे रस अंगीके धरम ते गुन बरने जात ॥ आत्मा के ज्यौं सूरतादि के निश्चल अवदात ॥ ८ ॥ सबै अर्थ न बुव रीये जीवित रस जियजानि ॥ अलंकार र हारादि ते उपमादिक मन आनि ॥ ९ ॥ श्लेषा दि गन सब्बा दिक से मानो चित्त ॥ बरनो रीति सुभाव ज्यौ वृत्ति हृत्ति सी मित्त ॥ १० ॥ पद र अनगुन विश्रामसौं सज्जा सज्जा जानि रस आस्वादन भेदजे पाक पाक से मानि ११ ॥ कवित पुरुषकी साजु सब समुझ लोक की रीति ॥ गुन विचार अब करत हौं सुनौ सुकवि करि प्रीति ॥ १२ ॥ प्रथम कहत माधु र्ये पुनि ओज प्रसाद बखानि त्रिविधै गुन तिनमैं सबै सुकवि लेत मनमानि ॥ १३ ॥ जो संयोग सिंगारमैं सुखद द्रवावै चित्त ॥ सो माधुर्य बखानियै यहई लख कवित्त ॥ १४ ॥

सौं संयोग सिंगारतें करुणा मध्य अधिका
इ॥ विप्रलंभ अरु सांतरस तामें अधिका व
नाइ॥ १५॥ दीप्त चित्त विस्तारको हेतु ओज
गुन जांनि॥ सुतौं वीर वीभत्स अरु रौद्र क्र-
माधिक मानि॥ १६॥ सूखे ईंधन आगज्यौं स्व
च्छ नीरकी रीति॥ झलकै अच्छर अर्थ जो सो
प्रसाद गुन नीति॥ १७॥ कोऊ अंतर भूत इ-
न कोऊ दोष अभाव॥ कोऊ दोष त्रिविधि
गुण तातें दसन गनाउ॥ १८॥ और गुनै जो
अर्थ गुण तेनकछू करि मानि॥ रचना वरन
न समान गुन के विंजन के जानि॥ १९॥ अ
नुस्वार जुत वरन जिति सबै वर्ग अटवर्ग॥
मृदु समास माधुर्यकी घटनां मैं जुनि सर्व॥
२०॥ माधुर्यकौउ॥ सवैया॥ इक आजु मैंकुंदनि
वेलि लखी मनि मंदिरकी रुचि वृंद भरै
कुरविंद के पल्लव इंदु तहां अरविंदनतैं
मकरंद झरै॥ उन बुंदनके मुकता गनहै फ
ल सुंदर द्वै पर आनि परै॥ लखि यौं दुतिवां
द अनंद कला नंदनंद सिला द्रव रूप धरै॥
२१॥ दोहा॥ वर गन मैं जो आदि अरु तीजो
आखर कोइ॥ तिनसौं योग दुतीय अरु चौ

थे कौ जोहोइ॥२२॥रेफ जोग सब दीर जो तुल्य बरन जुग जोग॥स घट बरग दीरघ करत जेसमास कवि लोग॥२३॥ऐसी घट ना खोजकी व्यंजक मनमैं आनि॥सकल सुकवि जनको मतौ सुजन लेहु मन जानि २४॥संजोगी उद्धत बरन जोपुनि दिर्घ स मास॥ऐसी रचना करतहैं सुनतहिं वोजप्र कास॥२५॥वो॰उ॰॥इक पक्ष पाल रवान इ का घूदन किलकात आनि॥चिंतामनि वल वंत इक्षे धावत उद्धत गाजि॥❋॥मद दिग्गज कदपक्ष समद गरजात गंभीर धुनि॥चूरन कर त पषांन रहे पब्बय मांनौ धुनि॥उत उमडि पूरि गिरवर थानि प्रबल जलधि जिमि वि नहटक॥सम करत सैल मगन विकट उद भट मरकट भटकाटक॥२६॥दोहा॥बहुकपि भागत निरखिकै हस्यौ प्रगट घन सद॥स द करत जग अंतजनु सद दिसानि बिहद्द सद दिसान विहद्द दर पपल द्दर सिद्ध॥रु द्र धुकि पद कुद्धर नि विरुद्ध धुनिक्रिद्ध॥रद्द छिति धर भद्द छरक अलद्द छपि छपि॥ग बविजय असद्द विकल अरब बहु कपि॥

२७॥प्रसादल॰॥दोहा॥जामहिं सुनतहि पद
नको अर्थ बोध मनहोइ॥सोप्रसाद वरनादि
इति साधारन सवजोइ॥२८॥प्रसाद को उ॰
कवित्त॥सांवरो सलोनो नित वडी अखि
यांन को जुहोतु आभरन आनि जमुना
के नीरको॥चिंतामनि कहे गारी दीजे तो हं
सत दीठ घसि निकसे र पुनि नारिनकी
भीरको॥मैंतो आजु जांनी अवलों नहीं
नजानत ही कारतु अनीति जैसी छोहरा
अहीर को॥पनिघट रोकत कन्हैया याको
नांम हैया खोटोहै निपट छोटो भैया वल
वीरको॥२९॥दोहा॥प्राचीनो दिन गुननिको
जैसो कछू प्रकार॥सोयामें सव लिखत है नि
जमति के अनुसार॥३०॥श्लेष प्रसादे वरन
वहु समता नाम वखान॥माधुर्यो सुकुमार
ता अर्थ व्यक्त पहिचान॥३१॥पुनि उदारता
वोजगनि कांति समाधौ जानि॥इवैद भीरी
तिके प्रानद सो गुनमानि॥३२॥श्लेष गुनको
ल॰॥वहुत पदनको एक पद समझो है आ
भास॥ ताको कहत सलेष गुन सिथिल नि
वंध विलास॥३३॥श्लेष विकटता पदनि र

की ज्यौं उदारता होइ॥ वोज सहित जो शिथिल पद बंध प्रसाद जु कोइ॥ ३४॥ पद ग्यारोहआरोहसो जोग समाधि प्रकार॥ ऐसेवो जाहि गनत सब मंमट बुद्धि विचार॥ ३५
श्लेष॥ कवित्त॥ राम भुज दंडको दंड मंडलित करि दिय उदंड सर दंड छोडे॥ सबल निशिचरन को वृंद ऐसो हन्यो प्रबल घन अनिल जनु घन बिलोडे॥ अंगरथ आवरन संगमहि यौंगिरे हनें बहु समर रवास निगोडे॥ गिरे घन घरन के बावान सघात लहि छप्परन संग जनु टूट टोडे
३६॥ उदारता कोल॰॥ दोहा॥ जहाँ नृत्यसों वरन पद सो उदारता जानि॥ अर्थ व्याक्ता सहित सो अर्थ मंजुल पहिचानि॥ ३७॥
उदारता कोउ॰॥ सवैया॥ काननि कुंज कलिंदी के कूलनि वान्ह मिले बछरानि चरावैं॥ हेमनि हेमनि मंडितपै फल फूल प्रवालन की छबि छावैं॥ मंजुल मूरति नाचत गावत कूदत बेनु बिषान बजावैं॥ सांवरे सुंदर नंद कुमारहि याबिधि गोप कुमारि रिझावैं॥ ३८॥ आरोहा अवरोहा समाधि कोउ॰

*॥कवित्त॥हाथ करिचाप रघुनाथ करिहाथ वर विसिष दुर्धर्ष दुस्सह चलाए॥चले नभ मूँदि जनु पच्छ धरि नाग निसिचरन के प्रान बहु पवन खाए॥दुवन भट विकट आकार उद भटनिपट समर पटकटि रिपु गन घटाए॥ध्वजन कौं छेदि धनु वाचन्ध गन भेदि धनरत्त उच्छेद बहु छविनि छाए॥३९॥दोहा॥ओज विमिश्रित सिथिल पद यह प्रसाद है कोइ॥अर्थ व्यक्त जहँ है उल्लसत वहौ प्रसादौ होइ॥४०॥ओज विमिश्रित सिथिलात्मक प्रसाद को उदाहरन॥कवित्त॥त्रिभुवन घट घट प्रगट प्रकास पावौ जोगी जाहि जानत अनल ज्यौ अरनि मैं॥ चिंतामनि कहै निगमनि वखानि जाकौ ज्योति उडगन आदि चंद्रमा तरनि मैं॥वनमैं सखानि संग गोधन चरावैं नैवें सुख पावैं सावन औ भादौं की भैरनि मैं॥सलल समीप निरमल शिला पर हरि खात दधि भात गिरि कंदरा घरनि मैं॥४१॥दोहा॥अर्थ व्यक्त प्रसादतैं अर्थ आनि जोकोइ॥तहांजो अर्थ व्यक्तासौं अलंकार को

हु होइ॥५२॥अथ व्यक्तको उदाहरन॥कबि
त्त॥कहां जागे रैन आये निपट उनींदे होऊ
सोइ रहो प्यारे बिछो आछो परजंक है॥
खेलनिहे चांदिनीमें ग्वालन संग काहू ग्वा
लही को नामलीजे कहा काछू संकहे॥यों
ही भले मानसैं लगावती कलंक हो कोद
ह्यो काहू चिंतामनि रतिहू को अंकहे॥
पीतरंग अंमर सोमयो नीलरंग लाल भूठी
हो गुपाल तुम्हें काहेको कलंकहे॥५३॥
माधुर्यको उदाहरन॥सवैया॥व्यासनें आदि क
हैं कविके जग ऊपर सोभा समूह विसेखो॥
इंदु कहा अर बिंद कहा हो गुविंदको आन
नके समलेखो॥नो सिगरे फल भाग गनो
मन आपन भागनि की धनि लेखो॥सोपुनि
मैनके बानन बारिदै बारक नंद कुमा रहि
देखो॥५४॥समताको उदाहरन॥दोहा॥जामें
पदक्रम तुलित है सो समता पहिचांनि॥यामें क
हो प्रकारयों विषम बंधु जनि आंनि॥५५॥
अर्थ प्रौढमें जहं कहत दोष वखान्यो जान
काहूं प्रबन्धन मैंतु मग रुके कहा सुहान॥
५६॥चढेतु तुमसन हर धनुष तो तुममें बल

कोइ॥ हमसों तुमसों भलीविधि इंद जुद्ध पुनि होइ॥ ४७॥ कथा मध्य जो कहि गये परस रामकी उक्ति॥ वेनन उद्धत रीति विन वामें ऐसी युक्ति॥ ४८॥ जहं समता जो पद निमें बद्ध वृद्ध नुप्रास॥ शब्द अलं कारन विषें तिनको प्रगट प्रकास॥ ४९॥ समता को उदाहरन॥ कवित्त॥ चिंतामनि काच कुच भार लंक लचकनि सोहे तनको छविखानकी॥ चपल विलास मद आलस वलित नयन ललित विलोकनि लसनि मृदु बानकी॥ नाक मुक्ता हल अधर लाल रंग संगली नी राचि संध्या राग नखत प्रभानकी॥ वदन कमल पर अलिज्यों अलक लोल अमल कपोलनि झलक मुसक्यानकी॥ ५०॥ सौकुमार्य अप रुष वरन स्रुत कटु दोष अभाउ॥ उज्वल बध्यनु कांति यह माधुर्य प्रभाउ गनाउ॥ सौकुमार्यको उदाहरन॥ सवैया॥ कामनि मंदिर की छवि चंद छपाकर की छवि पुंजनि पोख्यो॥ पाइकै स्वच्छ मनोहर चांदनी चापुले मैन महा वल रोख्यो॥ सुंदरीके मुख चंदको छाडि चकोरन चंद

मयूषन चोर्यो॥ चंद सिलानिनें नीर भ१
र्यो सुसवे नियको विरहा गिनि सोर्यो
५१॥ दोहा॥ शब्द अर्थमे लहना नेंगुनकी
निधि जानि॥ अब वरनन प्राचीन मत१
इनें अर्थ गुन मानि॥ ५१॥ प्रौढ सुव्याधि
समास पुनि ओज प्रसाद बखानि॥ पुनि१
माधुर्य उदारता सुकुमारता जु जानि॥ ५३
अर्थ व्यक्त पुनि औरहैं कांति श्लेष बखा
नि अवे षम्य द्वे भांतिकी अर्थ दृष्टि सोजा
नि॥ ५४॥ वरनी एक अजोनिहै अर्थ दृष्ट
यह कोइ॥ अन्य छाया जानि पुनि अर्थ दृ
ष्ट द्वतहोइ॥ ५५॥ प्रौढाको लं०॥ वाक्य रच
न पद अर्थ मैं एक प्रौढ यह कोइ॥ वा
कअर्थमे पद रचन प्रौढ दूसरी होइ॥ ५६
पदार्थ मै वाक्यार्थ कथनं॥ अत्रि नयन सं
भव सदा संभु मौलि छाल वास॥ पति विर
हिन तिय वध सिख्यो काल यह नीति वि
लास॥ ५७ उज्वल वेष विलासिनी उज्व
ल जाकी छांह॥ कंत हेत संकेत को चली
चांदनी मांह॥ ५८॥ वाक्यार्थ मे पद रचना॥
यह श्यामा सावन निसा सखी मिली है जाहि

सो स्यामा अभि सारिका सुहात सुकान फा-
ल चाहि॥५९॥एक वाक्यार्थ मैं अनेक
वाक्यार्थ कथनं॥कवित्त॥बाम्हन कहाऊं वे
से जप तप हीनेव्है के जनम बितायो है
असाधुनके साथमें॥कौन गृह मेधी जोपे
अतिथ न पूजे कैसो पंडित हों आन बस
भटकौ अकाथमें॥चिंतामनि कहै कैसें
कवि पद पाऊं जोन कबहूं गुबिंद जूको
गाऊं गुन गाथमें॥पतित बनाइ भयो वा
म जोदनाहूकी सो पतित पावन परमेस्वर
के हाथमें॥६०॥दोहा॥बहुवाक्यनको अर्थ जो
एक वाक्यमें होइ॥याहूं प्रौढ समास यह
वरनत हैं कवि कोइ॥६१॥अनेक वाक्यार्थ
नको एक वाक्यार्थ करि कथन रूप समास
गुनको उदाहरन॥दो॰वालकमधर रद उरज छु-
वि बीज फूल फल कंद॥वैस तथा मैं दा
डिमी लई बिचारी लूट॥६२॥याबिधिके बै
चित्र मैं अलंकार कछु होइ॥एजो वर्नत
अर्थ गुन समुझौ सुनौन कोइ॥६३॥साभि
प्राय पदनि कथनि वोज अर्थ गुन कोइ॥
अपुष्टार्थ पद दोषको इहां अभावे होइ॥६४

६५॥साभिप्राय ओज को उदाहरन॥कवि
त्त॥ हैंतो हौं अनाथ तुम नाथन के नाथहौ
जू दीन तुम दीन बंधु नाम निजु कीनो है
हौंतो हौं पतित तुम पतित पावन वेद पु
रान बखान कछु कह्यो नांन वीनो है॥कव
कारी सेव हौंतो कहा मेरी सेवा रीझे आप
हीतें आपरो कै चिंतामनि लीनो है॥अब तु
मै मेरी रक्षा कर वेही परी राम रावरेही मोहि
नितु नातो जोरि दीनो है॥६५॥दोहा॥जहां
अधिक पद परत नहिं बिमला मक्षगु प्र
साद॥सुतौ अधिक पद दोषको यह अभा
व अविवाद॥६६॥अर्थ गुन प्रसाद को उ
दाहरन·दो·कुंदन दरपन तुलित तनु बसन
कुसुंभी रंग लसत लाल मनि चौलरी ला
ल बाल सब अंग॥६७॥मधो उक्त बैचित्र
को सो माधुर्य निहारि॥यह अनपी गुन
दोषको इहां अभाव बिचारि॥६८॥चौपी व
रचा ज्ञानकी आछी मनकी जीति॥संगति
सज्जन की भली नीकी हरिकी प्रीति॥६९॥
मंगल मय कोमल अरथ सुख मारग वखा
नि॥असंगल्य अस्लीलको यह अभाव मन

ग्यांन॥७०॥करि लीजे उत्तम क्रिया हरि पद प्रीति विशेष॥रहत सदा उत्तम पुरुष याजगकी रति सेष॥७१॥ अर्थ वीज अ नामता उदारता सो जांनि॥ग्राम दोषको सुजन इति इहो अभावे मानि॥७२॥मो हि मैन चंडाल यह अदय महा दुखदेत॥ सुंदरि सो तोपर सदय भलो भाग इतहेत ७३॥जाको ऐसो रूपहै तैसो वरनो होइ॥स्व भावोक्ति अलंकार यहु अर्थ व्यंग जोकोइ॥ ७४॥कवित्त॥लालसों जटित लसे ललित लटन बीच लाल मुख लटकान ललित ल लाटको॥वडी वडी आंखें नीकी नाक मध्य भलकात वडी मुक्ता हल अतुल छवि हा टको॥चिंतामनि सोहतहे अति अभिराम तन इंद्री वर स्याम मन हरन निराटको॥ चेरी हम तेरी वड भागिनि जसोदा विलका नि लखि ढोटाको वटोही मोहे वाटको॥७५ दोहा॥रसनध्वानि गुनि भूत पुनि व्यंग जहां रसहोइ॥सुनो दीप्त रस रूप वह कांत वखा नत सोइ॥७५॥रस धुनि गुणी भूत व्यंग्य को उदाहरन॥ आगे कही वाक्य भेद निरो

य विषें॥क्रम कौटिल्यजो अघगट उपमां
दिकका जुक्ति॥जोघटना यह अर्थकी त
हंस्लेष की उक्ति॥७६॥कवि चातुरी विचि-
त्रता यहगुन कैसोंकरि होइ॥ अक्रम भंग
अभाव वह अवै षम्य गुन कोइ॥७७॥
अस्लेष गुनको उदा हरन॥कवित्त॥एक
पलका पे बैठी सुंदरि सलोनी दोऊ चाहि
कै छबीलो लाल आयो रति केलि घर
चिंतामनि कहै आनि बैठौ पीतम पै काहू
सौं कछून कहि कै सकत दुहूकै डर॥सुख
के मनाइबे कौ ऐसौ को दिखायो नाहि वि
परीत रतिको स्वरूप लीवि चित्रधर॥जोलौं
वह सकुचानि आंखैं मूदि रही तोलौं प्या
रे पान प्यारीके ओंठ कर धर॥७८॥वैध
र्म्यको उदा हरन॥दोहा॥अरुन उदय रवि
होतहै अरुनै अपवत आनि॥संपति वि
पति बडेन को एकै क्रमसौं जानि॥७९॥
अर्जोन्य अर्थको उदा हरन॥दोहा॥चंद दि
पत रमनीय ससि सरद विमल नभधा
म॥मानो कौस्तुभ मनि लसत हरिउरमैं
अभि राम॥८०॥अन्य छाया जोनि को उदा

हरन॥दोहा॥ चाप मुकुट पट तड़ित बग पाँ-
ति मुकता मैं दाम॥ कनक लता लखि ऊनयो
आइ इतै घन स्याम ८१
इतिश्री चिंतामनि कवि रचितें कवि कुल
कल्प तरौ प्रथमं प्रकरणं १ अथ अलंकारः

॥दोहा॥

शब्द अर्थ गति भेदसों अलंकार द्वै भाँति
अलंकार आदिक शब्द अलंकार की पाँ
ति॥१॥ वक्रो क्ति अनु प्रास पुनि कहि ला
टा नुप्रास॥ जमक श्लेषौ चित्र पुनि पुन रु-
क्ति वेदा भास॥२॥ सात शब्द अलं कार ये
तिनमें शब्द जो होइ॥ ताहीते पर्जय पदहि
येन भासै कोइ॥३॥ अलंकार ज्यौं पुरुष
के हारादिक मन आनि॥ प्रासो पम आदि
क कवित अलंकार ज्यौं जानि॥४॥ वक्रो
क्ति नुप्रास ल०॥ और भांतिको वचन तो
और लगावे कोइ॥ कै श्लेष कै काकसो व
क्रो क्ति है सोइ॥५॥ श्लेष वक्रोक्ति को उदा
हरन॰दो॰ ए वृष भानु सुता निरखि परौं
जमुने सम भौन॥ सिखई जीवन चातुरी
घन कीन्हो गुरु मैन॥६॥ काक वक्रोक्ति को

उदाहरन॰दो॰ गुरु वरवस परदेस पिय आयो ललित वसंत ॥ अलि कुल कोकिल ला विना नहि ऐहै सखि कंत ॥ ७ ॥ अनुप्रासको लक्षण ॥ समता जो आखरन की अनुप्रास जो जानि ॥ छेका वृत्ति द्वै भांति सो द्वै विधि ताहि वखानि ॥ ८ ॥ छेक अनुप्रासको लक्षण॰दो॰ ललितैहै आखरन की वारक समता होइ ॥ चिंतामनि कवि कहत यों छेक कहावै सोइ ॥ ९ ॥ छेक अनुप्रास को उदाहरन ॥ दो॰ ॥ जो अनेक सुखमा सदन मधुर मंद मुसक्यानि ॥ व्रज जीवन आनंद घन नंद नंद लखि आनि ॥ १० ॥ वृत्ति अनुप्रासकोलक्षण ॥ दो॰ ॥ एक अनेकाक्षर रचत वार वार सर होइ ॥ चिंतामनि कवि कहतहै वृत्य कहावै सोइ ॥ ११ वृत्तिको उदाहरन ॥ कवित्त ॥ नैसुनु कूखवे खर वाह खरे खरके ढिग तोहि परैहैं ॥ मूरख तेरीया दुर्ग्गम लंकहि खेलहि मैं रघुनंदन लैहैं ॥ * ॥ * ॥ मुंडकी माल दै पाई महेस सौं संपति राम छिडाइ सुलैहैं ॥ कुंडल मंडन मंडित मंजुल मुंडकी माल महे

रा कौ देहैं॥१२॥अथवत्ति भेद॰दो॰माधुर्यौ विंजन वरन उप नागरि का होइ॥मिलि प्रसाद पुनि रु कोमला पुरुषा वोज समोइ॥१३॥बिदर्भी पंचालजो गौडी धरम नवीन॥रीति कहत कोऊ उन्हे वृत्ति जेहैं रसी न॥१४॥उपनागरिका॥वृत्तिको उदाहरन॰दो॰छकि अनंद रति रंगके थकित अंग सुकुमार॥मग पग मंद गयंद गति धरति लसनि कुच भार॥१५॥कोमलाको उदाहरन॥दो॰केहूंवो बिसरति कहां वह मुसक्यानि अनूप॥लग्यौ अरी हियरा लग्यौ ललित लालको रूप॥१६॥खान पान परिधान सब आनन बिसरौ बाल॥यौं मोंही तुमको निरखि तुम निर्मोही लाल॥१७॥पुरुष वृत्तिको उदाहरन॥घनाक्षरी॥उदय रविकरन तमरासि संहरन मन ध्यानके धरन तमरास फाटे॥परम किरपाल प्रभु पलक पाइन परत प्रीति करि पुंनके पुंज पाटे॥नामके जापसौं अमाप संपति करै प्रबल परताप की ठाट ठाटे॥विघन अति सघन अघ सघन बंकट निपट विकट संकट कटक प्रकट काटे॥१८॥लाटानु प्रासको लं॰ दो॰ तात पर्यके भेदसौं दीन्हौ जौपद देइ॥सो लाटानुप्रासहै

समुझा सकानै ले हू ॥ १९ ॥ लाटा नुप्रासको उदाहरन ॥ ॥ तेमैं दोष कछू नहीं होतन दोषों पर तोष ॥ दोषजु देखत आपुमैं दूहे निहारो दोष ॥ २० ॥ जमककौ उदाहरन ॥ अरथ होत अन्यारथक बरननको जहं होइ ॥ फेर श्रवन सो जामकहि बरनत यौं सबकोइ ॥ २१ ॥ जमकको उदाहरन ॥ चंदन मुख सम तन परसि चंदन जेठ अमाँन ॥ कुंदन रद तनु छबि निरखि कुंदन बदन समान ॥ २२ ॥ फूली पाँति पुनी सुरभि कोलिन गावन ॥ कहे लाल लह लहे लही छबि घन ॥ गावत कोकिल बानी पंच मदन धन ॥ मुदित सुमन सोहे मधुप गन ॥ २३ ॥ पद अभिन्न भिन्ना रथकी काहत ना हां अश्लेष ॥ याकी देत उदाहरन सु नहु सुकवि सुवि सेष ॥ २४ ॥ सरस रसी स्यवन विरह ग्रीषम ऋतुको घाम ॥ जीवन वामैं आनपैहै सुधि लीजै घन स्याम ॥ २५ ॥ हा हहिवो वालम विरह वज्र भयो बरजोर ॥ घनी सही घनकी धमक धरकी नहीं कठोर ॥ २६ ॥ चौपर खेलत है कहाँ जगहै जीति रमाइ ॥ लाल जानतु है हाथनें अरी चुकै यह दाइ ॥ २७

कवित्त॥ वसन दिशाहै और वासन कपाल
कर विषै खाइ रहै पैनहोति हिय हानियै
चिंतामनि कहै ऐसी रीतिहोइ दूसको कौन
कोऊ गौंन मांनै जाको सांची वात मानियै
नांथत पहार पर गहत जनीको वेष सांप
भूत संगपैन संका उर आनियै॥ भसमलगा
वै रहै रहै ग्रल धैं सदां जाके गिरजाईधन
ताकी एही ग्रल जानियै॥ २८॥ वड़ आदिदै
कर वरव कांम धेनु है आदि॥ चित्रालंका
त वहुत विधि वरनत सुकवि अनादि २९
जोर चोर पर पीर हर सर वर धर धीर
मेर सूर पर ढेर कर सा कार ध्यर नर धीर॥
३०॥ खड्ग वंध कपाट वंध कमल वंध अस्वग
ति गोमूत्रिका वंध इतने वंध या दोहामे देखि
यै॥ दोहा॥ एक छंदमै छंद वहु काम धेनु है सो
इ॥ वहु छंदन भाखैं वहुत यहो कहत कविको
इ॥ ३१॥ काम धेनुको उदा हरन॥ सवैया॥ चा
रु सरो रुह नैन ए मोहत पेषिय सांवरो देह
सुहाई॥ साजत नैननि चैनजे जोहत सेखि
यै सेष अजाकै गनाई॥ सीपति सो गुनजेम
न मोहत लेखियै लीमन को वल भाई॥ सुंद

रना जिन मैंनजे सोहत देखिय रूप उदार कान्हाई॥३४॥सर्वतो भद्र॥मानिनैं जिनही कारिकै मनि एमैं जपै यों कहीहै भली स बसों॥गनिनै हिनही भरिकै अति कांमैं हयै यों सहीहै चली नवसों॥जनिनै चित्त ही धरिकै अनिही रति नामैं चहीहैं नली अवसों॥धरिनैं तिनहीं अरिकै नित नांमैं लपै यों गहीहैं गली जवसों॥३३॥दोहा॥ भिन्न पदन मैं एक सों जहां अर्थ आभास चिंतामनि कवि कहतसों पुन रुक्त वदभास ३४॥तन सुबरन कंचन मुलिल घन बादर सम वार॥आंखें सरसी नीरसी सुंदर रूप उदार॥३५॥सब्द चित्र इत ए सबै अधम क बित पहि चानि॥जेनहैं ध्वनि हीनतैं अर्थ चित्र सो मानि॥३६॥सघना भिन्त गुन्या स मुभा शब्द अर्थ भिन जानि॥अलंकार इ हि विधि गये विद्या नाथ बखानि॥३७॥

इतिश्री मत चिंतामनि विरचिते क वि कुल कल्प तरौ शब्द अलंकारनि रूपनं नाम द्वितीय प्रकरणं २॥

शिव गिरि पर गज मुख मुदित गरजत गि

रिजा पौर ॥ एक विनायक कारन हैं एक वि
नायक सोर ॥ १ ॥ जामें मंजुल आनसों स
मता वरनी होइ ॥ वर्ण्य मान कछु वस्तु जो उ
पमा कहिये सोइ ॥ २ ॥ सो पुनि जोती आ
रथी है विधि चितमें ल्याय ॥ पूरन लुप्ता भे
दते दोऊ द्विविध गनाय ॥ ३ ॥ ज्यों आदिक
पदके दिये स्त्रोती उपमा जानि ॥ सदृस तुल्य
पदको दिये होति आरथी आनि ॥ ४ ॥ उप
मा जो उप मेय पद उपमा वाचक होइ ॥ अ
रु साधारन धर्म यह पूरन उपमा सोइ ॥ ५
अथ पूर्णो उपमा को उदाहरन ॥ नाह बवाई
बिरहनें आइ अचानक गेह ॥ दवा वीचकी
बेलि ज्यौं उमडि बरस जल मेह ॥ ६ ॥ श्रीय
दु नंदन द्वारिका नाथ विभूति महा कविको
बरनें ज्यौं ॥ श्रीपति आपही बूझतहैं अरु दे
खि महा छवि रीझतहैं यौं ॥ लालन के भाम
रीनिके मंदिर सुंदरी हंदन सौं झलकें यौं ॥
लाल सलाकन सौं जकरे बिलसैं मुनियांन
भरे पिंजरान ज्यौं ॥ ७ ॥ अथ पूर्णोपमा को उ
दा हरन ॥ दोहा ॥ वल कल चीर जटा धरें गं
गा जलके तीर ॥ राम लखन दोऊ जने मये रि

षिनके तूल ॥८॥ जहां एक द्वै तीनिको लोप चारिमैं होइ ॥ चिंतामनि कवि कहतहै लुप्ता कहिये सोइ ॥ उपमान लुप्ता ॥ चिंतामनि मनु जगत मैं ढूंढ फिरौ चहु ओर ॥ तोसम मोत न मोहनी कौनि ननानि सिर मोर ॥१०॥ उपमेय लुप्ता ॥ सुललित खंजन से चपल वस न रहत वैचित ॥ तिन पर निवछा वरि कोर न न मन सब कछु वित्त ॥११॥ धर्मलुप्ता ॥ सरद चंदसो ननानिकौ ओर सुधासे बैन ॥ चंदि का सी हासी लसै इंदी वरसे नैन ॥१२॥ वाचक लुप्ता ॥ सजल जलद अभि राम तनु त डित ललित पट पीत ॥ नंद नंदन सखि चंदमुख चोरत चित नव नीत ॥१३॥ जितय कहि ब उपमेय जहंसो उपमान अनेक ॥ सोमा लोपम जानिये भिन्न धर्म कै एक ॥१४॥ अभिन्न धर्ममालोपको उदा हरन ॥ कवित्त ॥ सरद मैं जलकीज्यौं दिनतैं कमल कीज्यौं धनतैं ज्यौं थलकी निपट सर साईहै ॥ धनतैं सांव नकी ज्यौं दीपतैं रतनकी ज्यौं गुनतैं सुजान नकीज्यौं परम सुहाईहै ॥ चिंतामनि कहै आ छे अछरनि छंदकी ज्यौं निशा गम चंद

की ज्यौं द्रग सुख दाई है॥ नगतैं ज्यौं कंचन वसं तै ज्यौं वनकी यौं जोवनतैं तनकी नि-काई अधिकाई है॥२५॥ भिन्न धर्म मालोपमाको उदाहरन. क॰ मालती ज्यौं मोदकों वढावति सहज वास सुधा ज्यौं जिवाइवे की जतन धरति है॥ चिंतामनि चारौ वार वारति उज्यारी प्यारी चंद्रिका ज्यौं मेरो चित्त चाइन भरति है॥ कारगी ज्यौं मंद चार चलनि मयंक सुखी मंद राज्यौं मोहि महा मोहित करति है॥ प्रान ज्यौं सुंदरि नेकु हियेतैं टरति नाहिं नाद ज्यौं नवेली नैन कोर विह रति है २६॥ दोहा॥ इत साधारन धर्म बुध जन द्वै भांति गनाइ॥ वस्तु और प्रति वस्तु सो आम विंवोज वनाइ॥२७॥ एक अर्थ द्वै शब्दसों ज हैं कहिये द्वै वार॥ कहीं वस्तु प्रति वस्तु यह भावसु बुद्धि विचार॥२८॥ एक शब्दसों अर्थ जुग जहां वखान्यो होइ॥ तहां विंव प्रति विंव यह भाव कहै कवि कोइ २९ वस्तु प्रवस्तु भाव. दो॰ निज तनुतैं पिय तनु परसि ज्यौं सुख अधिक उदोत॥ आपुनतैं पिय पर सखी अधिका प्रेम त्यौं होत॥३०॥ विंव प्रति विंव॥ नाह वचा

ई विरहैं आइ अचानक गेह ॥ रवा वीचको
बाल ज्यौं उमड बरस निसमेह ॥ २१ ॥ प्रथमहि
जो उपमेय वह पुनि उपमान जुहोइ ॥ वस्तु औ
रवो नामजु यह रसनो पमहै सोइ ॥ २२ ॥ मति
सम मूरति म धुर अरु मूरति सरस समाज
तेजन सहित समान सौं श्री अजेय व्रजराज ।
२३ ॥ वचन तुलित मन मन तुलित सकल वि
राजत काल ॥ काज तुलित निरमल सुजस
सतत साधु सिर ताज ॥ २४ ॥ अन्वय को लच्छ
न ॥ दोहा ॥ कहिये जो उपमेय अरु वहै जहाँ
उपमान ॥ ताहि अनन्वय कहत हैं पंडित सु
कवि सुजान ॥ २५ ॥ हियो हरत अरु करत
अति चिंतामनि चितचैन ॥ वा सुंदर कोमैल
षे वाही कैसे नैन ॥ २६ ॥ जहां वराय उपमान
को वदलो वरन्यो होइ ॥ उपमेयो उमान का
हि वरनैहै सब कोइ ॥ २७ ॥ नैन कमल से क
मल से लसत नैन छवि भार ॥ वदन चंद सों
वदन सों चन्द प्रभा विस्तार ॥ २८ ॥ सदृस धर्म
सो अन्यता संभावन यों होइ ॥ वराये भानु क
छु वस्तु को उत्प्रेछा कहि सोइ ॥ २९ ॥ उत्प्रेक्षा
इवाच्य अरु प्रतिय माना ओर ॥ विनो आ-

दिपदविन गनौ प्रतिय माना ठौर ॥ ३० ॥ जाति क्रिया गुन द्रव्य को जो है अध्य वसाइ ॥ ताकौ विषय सु तौ दुहै चौविधद्विविध गनाइ ॥ * ॥ ३१ ॥ चौविध चिंतामनि कहै अध्यवसाइ वनाइ ॥ आमतेद्विविध सुजोगए विद्यानाथ गनाइ ३२ ॥ ताकिभाव अभाव को वाच्या गम्यौं जानि हेतु वाच्यता गम्यता वाच्याद्विविध वखानि ॥ ३४ ॥ तेजात्यादि सरूपके हेतुहिके फलरूप ॥ अध्य वसाइ विषय सु यों भेद वहुत जे अरूप ॥ ३५ ॥ वाच्या उत प्रेक्षा विषय हेतुके फल जित होइ ॥ वाच्यौं होइ निमित्त जित गम्य तहाँ नहिं सोइ ॥ ३६ ॥ जानैं वाच्य स्वरूप की उत्प्रेक्षाही मांह ॥ वाच्य गम्यता अर्थको वनी विद्या नांह ॥ ३७ ॥ उपात्त गुनि निमित्त जाति भाव स्वरूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ विसद रूप हिय रामुकुत विलसत कच उतमंग ॥ जनु यमुना जल पूर पर झलकत गंगातरंग ॥ ३८ ॥ उपात क्रिया निमित्त जाति भाव स्व रूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ जघन पुलिन परहीर मनि जडित किंकिनी कांति ॥ पौलति वोलति मधुर जनु कल मराल की पंति ॥ ३९ ॥ अनु पात्त

गुन निमित्त जाति भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दो॰
वदन इंदु समहीर मनि वार मुकात चहु ओ
रा ॥ सुढ़ बिंद संुदर मनो इंदुवाल जुत छोर
५० ॥ अनु पाँति गुन निमित्त जाति भाव स्व
रूप उत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ लखे नयन संुदरिनके
श्री घन स्याम सकाम ॥ बिलसति कंचन
वेलिवन जनु खंजन अभिराम ॥ ५१ ॥ उपा
त गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दो॰
श्री हरि वचन प्रमान जग की वेधर्म प्रका-
स ॥ यह समभात अव कारत तुम हरवर ज-
वन विनास ॥ ५२ ॥ उपात क्रिया निमित्त जात्य
भावस्व रूपो त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ पंचा नन चरचा
कारत सुनत शंभुको दास ॥ पाप मतंग घटा
मनो पावत भयन विनास ॥ ५३ ॥ अनु पात
गुन निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ विदित
विभव यह यों परत जाके उर निसि दाहि ॥ *
छत्र चमर आयु धन विन भूपति भ जनु
नाहि ॥ ५४ ॥ * ॥ * ॥ ५४ ॥ अनु पाँति क्रिया
निमित्त जात्य भाव स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ दु-
र्जन दुर्जनता प्रगटि सवकतन हिये ससोक
राम तेज मानो भयो अखिल अरवल यहलो-

क॥ ४५॥ जाति हेतूत्प्रेक्षा॥ श्री गिरिजा के ध्याननते ज्ञान होत मन भूरि॥ पदनाव विधि अवलोकि जनु होतु अंध्यारी दूरि॥ ४६॥ जात्य भाव हेतूत्प्रेक्षा॥ मही महा नहिं कल्प तरु यह करि हिये विचार॥ जनु सज्जन प्रति पालको कान्ह लियो अवतार॥ ४७॥ जाति फलोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ कालिंदी जल गोपिका जल मुख छवि अधि कात॥ कान्ह भौंन सुख रूप लखि जनु फूले जलजात॥ ४८॥ जात्य भाव फलोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ चंदमुखी यौं चंद्रिका मैं कीन्हो अभिसार॥ जनु छीर धि-अधि देवता कोधारधि संचार॥ ४९॥ क्रिया स्वरूपोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ कुटिल कूबरी आपने तनमें मन अटकाइ॥ जनु वृंदावन आगमन हटकेयो हरिको आइ॥ ५०॥ क्रियाहेतूत्प्रेक्षा॥ दो॰॥ सुंदरि भौंहें धनुष धर तोमन वास अनंग॥ लोचन वान हनै मनौं व्याकुल हरिके अंग॥ ५१॥ क्रिया भाव हेतूत्प्रेक्षा॥ दो॰॥ वा दिनतें मृगलोचनी ललित भई पियराइ॥ निज छवि अनदेख मनौं वदन कमल कुम्हिलाइ ५२ क्रिया फलोत्प्रेक्षा॥ दो॰॥ काढेपो दीन जनु वदन

तैजही राम यह नाम॥ मानौ ता प्रति पालको नव-
ही पंक रु सेराम॥ ५३॥ क्रियाभाव फलो त्प्रेक्षा॥ लवत्र्य
वतार प्रपंच मय स्वापु आत्मा सुद्ध॥ कालिप्रपंच
अन लखन कौं मनौ ध्यान मय बुद्ध॥ ५४॥ गुनस्व
रूपोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ सांझ धेनु गन दुहन की गुरुग
रजन गंभीर॥ रवगन नचाइल मानकी मनौ
मुरज ध्वनि धीर॥ ५५॥ गुन भाव स्वरूपोत्प्रे
क्षा॥ दोहा॥ राम चंद्र की कौमुदी कीरति विदि
त उदार॥ स्वेत दीप कीन्हो मनौ यह सिगरो सं
सार॥ ५६॥ लाल औरके ध्यान जनु कान्ह क
हावत लाल॥ सुंदरिनैं जो बस किये सुंदर १
स्याम रसाल॥ ५७॥ गुन भाव हेतू त्प्रेक्षा॥ दोहा॥
श्री नारायण वदन विधु लखि दुष मिटत असेष
जाते जनु सब नव परष दृग कुवलय अन मेष॥
५८॥ गुन फलोत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ साधु सुदामा को-
दई संपति स्याम निवाहि॥ उन सेवा कीन्ही भ-
ली मनौ इंद्र सखि चाहि॥ ५९॥ गुनभाव फलो
त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ दै असाधुन साधुगति यौं हरि
निवाहि॥ मनौ कियौ उनकी रतन पा
चाहि॥ ६०॥ द्रव्य स्वरूपो त्प्रेक्षा॥
त रमनीय रुचि सरद विमल

क॥ ४५॥ जाति हेतू त्प्रेक्षा॥ श्री गिरिजा के ध्या
नते ज्ञान होत मन भूरि॥ पदनाव विधि अ-
वलोकि जनु होतु अंध्यारी दूरि॥ ४६॥ जात्य
भाव हेतू त्प्रेक्षा॥ मही माहा नहिं कल्प तरु
यह करि हिये विचार॥ जनु सज्जन प्रति पा
लको कान्ह लियो अवतार॥ ४७॥ जाति १
फलो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ कालिंदी जल गोपिका
जल मुख छवि अधि कार॥ कान्ह भौंन सु
ख रूप लखि जनु फूले जल जार॥ ४८॥
जात्य भाव फलो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ चंद मुखी यों
चंद्रिका में कीन्हो अभिसार॥ जनु चीर धि-
अधि देवता कोध्याधि संचार॥ ४९॥ क्रि-
या स्वरूपो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ कुटिल कूबरी आ
पने तनमें मन अटकाइ॥ जनु वृंदावन आ-
गमन हटक्यो हरिको आइ॥ ५०॥ क्रियाहे-
तू त्प्रेक्षा॥ दो॰॥ सुंदरि भौंहैं धनुष धर तोमन १
वास अनंग॥ लोचन बांन हने मनौं व्याकुल ह-
रिके अंग॥ ५१॥ क्रिया भाव हेतू त्प्रेक्षा॥ दो॰॥ वा
दिनतें मृग लोचनी ललित भई पियराइ॥ निज
छवि अनदेख मनौं वदन कमल कुम्हिलाइ ५२
क्रिया फलो त्प्रेक्षा॥ दो॰॥ कढ्यो दीन जनु वदन

तेजनहीं राम यह नाम ॥ मानोतात प्रति पालको नव-
ही पंथ हैं राम ॥ ५३ ॥ क्रियाभाव फलो त्प्रेक्षा ॥ सब अ-
वतार प्रपंच मय आपु आत्मा शुद्ध ॥ कलि प्रपंच
अन लखन कों मनों ध्यान मय बुद्ध ॥ ५४ ॥ गुनस्व
रूपोत्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ सांझ धेनु गन दुहन की गुरुग-
रजन गंभीर ॥ खगन नचाइल मानकी मनो
मुरज ध्वनि धीर ॥ ५५ ॥ गुन भाव स्वरूपोत्प्रे-
क्षा ॥ दोहा ॥ राम चंद्रकी कौमुदी कीरति विदि
त उदार ॥ स्वेत दीप कीन्हो मनो यह सिगरो सं-
सार ॥ ५६ ॥ लाल और के ध्यान जनु कान्ह क-
हावत लाल ॥ सुंदरिनै जो बस किये सुंदर २
स्याम रसाल ॥ ५७ ॥ गुन भाव हेतू त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥
श्री नारायण वदन विधु लखि दुष मिटत असेष
जानि जनु सब नव परष दृग कुबलय अनमेष ॥
५८ ॥ गुन फलो त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ साधु सुदामा को-
दई संपति स्याम निवाहि ॥ उन सेवा कीन्ही भ-
ली मनो इंद्र सखि चाहि ॥ ५९ ॥ गुनभाव फलो
त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ देत असाधुन साधुगति यों हरिनाम
निवाहि ॥ मनो कियों उनकी रतन पाप अभावे २
चाहि ॥ ६० ॥ द्रव्य स्वरूपो त्प्रेक्षा ॥ दोहा ॥ चंद दिप
त रमनीय रुचि सरद विमल नभ स्याम ॥ मनों

कौस्तुभ मनि लसति हर उरमें अभिराम॥६१
द्रव्य भाव फलो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ उमडि विंद्रकी
भाँति हीं हरि रवि ससि संचार॥ तिमिर अच-
ल कीन्हो मनों जग अकास संथार॥ ६२॥ २
द्रव्य हेतू त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ औषध पति दुज राज
धन ग्रीषम ऊंख सभीन॥ चंद्र कारस भाँनौं
कियौं सकल जगत मय लीन॥ ६३॥ द्रव्य भा
व हेतूत्प्रेक्षा॥ दोहा॥ जल धर मद जल गजन
जनुकिय ससि सूर अभाव॥ जानें जातन रा-
ति दिन पावस ऋतु परभाव॥ ६४॥ द्रव्य फ
लो त्प्रेक्षा॥ दोहा॥ यों फैली है चंद्रिका महि अं
बर अब गाहि॥ मानो उमड्यो छीर निधि चं
द नंद नहि चाहि॥ ६५॥ द्रव्य भाव फलो त्प्रेक्षा
दोहा॥ मदन दहन यह जानि यह मदन सहा
यक आहि॥ धरे भुजंगम नहम लय अनि-
ल विनासहि चाहि॥ ६६॥ यों उत प्रेक्षा मैं कि
यो विद्यानाथ प्रकार॥ उपमा हूँमैं करि सका-
न यह क्रम को संचार॥ ६६॥ उत्प्रेक्षा संभा-
वना वस्तु हेत फल रूप॥ उक्ता नुक्ता प्रथम
ये कहत सकल कवि भूप॥ ६७॥ सिद्धा सिद्धा
स्पद बहु विधि द्वितिय भेदनिरधारि॥ सुभग कु

वलया नंदमैं यहकाम कियौं विचारि॥६९॥ उ-
त्मा स्पदा स्वरूपो त्प्रेक्षा॥दोहा॥मुख विधुलखि
कुचकोक जुग यह विरहाग प्रकास॥रोमाव-
लि अनुलई उन दुखन सधूम उसास॥६९॥२
अनुक्ता स्पदा हेतू त्प्रेक्षा॥दोहा॥बरसत अंज-
न नभ मनो तमलीपत जनु अंग॥स्यामा स्या-
म स्वरूप धरि लै कैयौं स्याम को संग॥७०॥सि
द्धा स्पदा हेत त्प्रेक्षा॥दोहा॥सुंदरि भूमि धरैम-
नो लाल तिहारे पाइ॥मुख समता इच्छा मनौं
विधु लखि कमल बिसाइ॥७१॥सिद्धास्पदा व
स्तु त्प्रेक्षा॥दोहा॥कुच जीतन को हेम गिरि
शृंगनि सौं संनद्ध॥भार गहन कौ कनकजनु
दामन वद्ध निबद्ध॥७२॥असिद्धा स्पदा फलो
त्प्रेक्षा॥दोहा॥सूरज सनमुख जल बसत सह-
त सदा दुख कंज॥सुंदरि पग साजोज्य को
करत मनहु तपकंज॥७३॥प्रतीप मौनो त्प्रे
क्षा को उदा हरन॥कवित्त॥अति मनो हर दंप-
ति के अलिंगन पर वारियत त्रिभुवन सुख-
मा सुवेखहे॥चिंतामनि कहे कवि कैसे कहि
सके कोऊ अद्भुत कुरूप रचना अलेखहे॥
स्ववरन लताहे तमाल सुर तरु संग घन स्या

म संग थिर दामिनि विसेषहै॥राधाजूको देषि देव वनिता वखानतीहैं।हरि उर निरख पखा न हेम रेखहै॥७४॥स्मर मरना लंकारको ल॰ दोहा॥सदृश वस्तु अनवे सदृश वर त्वन्तर को ज्ञान॥स्मरन वोलत विवुध जन समझौ सु-कवि सुजान॥७५॥स्मरना लंकारको उदा हरन॥दोहा॥दृगन सुधा वरखत सरद राका चंद निहारि॥सुधि आवत वा वदनकी जाप र हौं वलि हारि॥७६॥जहं विषई अरु विष यको वरन्यौं होइ अभेद॥अलंकार रूपक तहाँ समझौ सुजन अखेद॥७७॥जो आरो हित विषयको उपकारक जोहोइ॥विष ईसो रूपक वरन यों वरनत कवि कोइ॥७८ पुनि तुलसा वयव अरु निर्वय वस्तु प्रकार है विधिसा वयव पुनि त्रिविधि वरनत वि-मल विचार॥७९॥सरववस्तु विषयक प्रथ-म वरनत सुकवि विचारि॥एक देस विचर न अपर परं परित निरधारि॥८०॥निरवय वो पुनि द्विविध गन केवल माला रूप॥इन-के देत उदा हरन सुनियै सुजन अनूप॥८१ सर्व वस्तु विषयको उदाहरन॥कवित्त॥को

किल कापो तकीर कुलनि कोकाल काल भारी
कोलाहल दिसि विदिसि मे छायोहे॥ क-
ए राते पातए पताका पाहराल मनि पुहपप-
रागधूर अमर उडायो हे॥ भौर माले मान गढ
गंजन मलंग छूट मोहन सौं रूसी मन कोन
मन भायोहे॥ आली महा बली रतिपति म-
हीपति को सोरितु पति सेनापति सेना साजि
आयोहे॥ ८२॥ रूपक को सरथारन उदा हरन॥
कवित्त॥ जाहि मिलि नैन नील कमल रवुले
हैं कानमुकुत नरवत पर वारकै विचारयोहे
परम मधुर मुसक्यानि कौमुदी सौं बडो स-
रवमा गरव वारि जानको विडारयोहे॥ निर
रवत सवन को सव वररवत को हिये हररवत
हरि ध्यान निर धारयोहे॥ चिंतामनि कहे चरव-
कोरन को आनंद मुरव चंद राधिका मुकुंद को
निहारयोहे॥ ८३॥ एकदेस विवर्ति रूपक को उदा
हरन॥ दोहा॥ सरद सिंहासन चमरिका स-
जल जलज कर अत्र॥ किरनि माल मुक्ता-
वली विधु अनंग सिर छत्र॥ ८४॥ परं परित
को लछन॥ दोहा॥ जहां एक आरोप में आरो
पान्तर होइ॥ परं परित रूपक तहां वरनवि छि

निहिंकोइ॥८५॥लिष्ट बिसेषन होइ कहि और अलि हरिगिहारि॥माला रूपक परं परित रूपक सुभग बिचारि॥८६॥श्लिष्ट बिशेषन परं परित को उदाहरन॥दोहा॥सुंदर नंदन नंद को रूप जिनो जनु काम॥गोपी फूली हेम तन बेलि रसिक अलि स्याम॥८७॥श्लिष्ट माला परंपरित को उदाहरन॥दोहा॥जीवन दायक स्याम घन गोपी पदमिन मित्र॥संघरत महरन बाला निधि श्री गोविंद बिचित्र॥८८॥अश्लिष्ट बिसेषन माला रूपको उदाहरन॥ब्रज जन सुर गन कल्प तरु मन अनंद तन बंद॥सुखमा सलिल समुद्र हरि लोचन कुवलय चंद॥८९॥दूसरो उदाहरन॥कवित्त॥मन कुल मंदाकिनि जलक कमल महा राज महा बिमल प्रकासित बिबिधि नय॥दुंदि वन अर बिंद नैन दुदु मुख दुंदी बर दल दाम सुंदर सदा सदज॥चिंतामनि मुनिमन मोरके नवीन घन सीता नैन मीन सुधा समुद आनंद मया॥कौसिल्या कल्प बेलि संभव सुमन राजा दशरथ दूध निधि चंद राम चंद जय॥९०॥निर वयव को वल रूपको उदाहरन॥दोहा॥

ललित अलक मुख चंदपर मनकी यही अगोट॥ बिहसौंहैं चंचल नयन भीने अंचल वोट॥ ८१॥ निरवय माला रूपको को उदाहरन॥ दोहा॥ दरपसिरी कांदर पको चनकी सहज म साल॥ भागनि की अधि देवता कौन धन्यही बाल॥ ८२॥ परनामालंकार॥ दोहा॥ लखि विषई विषयात्मको कारन प्रकाश उपजोग रूपकाते परनाम जो भिन्न कहत कवि लोग॥ ८३॥ ब्रज बासिनते जगत पर और सभा गिन जानि॥ कालपद्रुम तिनको भयो आपु आत्मा आनि॥ ८४॥ जहां बिषे बिषई सुभगको बि संमत मन नाहि॥ सो संदेहालंकार है कबि संदेह लहांहि॥ ८५॥ प्रथम कहत निश्चय गरभ निश्च यांत पुनि जानि॥ अलंकार संदेह यह सजनहि द्विविध मन आंन॥ ८६॥ दर्पन धोषो ललित कित ससि थौं कित कलंक॥ अंबुज धौंन विलास यों तिय मुख लखि मनसंक॥ ८७॥ निश्च यांत को उदाहरन॥ सवैया॥ खंजन हैं धौं उडात नन अंबर कंजहै थौं थिरता नहिं चीन्हैं॥ भृंगहै स्यामल खेलन वद्रुधौं मीनहैं नैनन मौंद जु दीन्हैं॥ कामके बानधौं पांच र

सुनेहमए अब याथलदै विन कीन्है ॥ नैनन चैनकरै निरखैं अति नैनीन नैन ए जानि जु-लीन्हैं ॥ ९८ ॥ दोहा ॥ जहां होतुहै प्रकृतिमें अ प्रकृतिहि कों ज्ञान ॥ भ्रांति मान यासों कहत पंडित सुकवि सुजान ॥ ९९ ॥ फटिक महल चढि विधु मुखी देखत श्री नंद नंद ॥ कहो सखीसों हरि चलो ऊपर आयो चंद ॥ १०० ॥ अपन्हुत ॥ विषई को आरोप के करि जो विषय निषेध ॥ ताहि अपन्हुत कहतहैं धर्म-हि समुभि सुमेध ॥ १०१ ॥ कवित्त ॥ बारन मत्त विदारतो महा तम देखिमहा तमकी अधिकाई ॥ अंकमें मारि गह्यो कर सायल जानत लोक कलंक कराई ॥ मानसके से बचे मृग लो-चनी कान्ह समीप बसेतो भलाई ॥ आवत ऊपर मंदहि मंद सों इंद नहोंयमृगेंद है माई ॥ १०२ उल्लेख को उदा हरन ॥ दोहा ॥ कहुं गाहक के भेद कहु विषय भेदसो होइ ॥ एकहि को उ-ल्लेख वहु कहि उल्लेख जुसोइ ॥ १०३ ॥ नाम भेद उल्लेख को उदा हरन ॥ दोहा ॥ दीन दया २ जलको जलधि सकल कामिनी काम ॥ कहत भक्त जन कलप तरु रामहि रिपु जम नाम १०४

विषय भेद उल्लेख को उदा हरन॥ दोहा॥ कह
त स्याम को कल्प तरु पूरन लखि सब साध
दीन दया निधि सब जगत सुखमा सिंधु अ
गाध॥१०५॥ श्लिष्ट श्लेष को उदा हरन॥ दो॰
जीवन दायक देखिकै ब्रज वासी घन स्याम
कीन्हहि भक्त मुकुंद नी कहत कामिनी का-
म॥१०६॥ पर नाम उल्लेख ए दोऊ रूपक
माँहि॥ भिन्न अंस ज्ञात रूप तो मंमट बरनैं
नाँहि॥१०७॥ अति शयोक्ति को लक्षण॥ दोहा
प्रौढ उक्ति जो कविन की अतिशयोक्ति है सो
इ॥ भिन्न अभिज्ञात भेदतें भिन्न ताही जो जो
इ॥१०८॥ जहाँ ज्ञान उप मेय को उपमा नहि
मैं होइ॥ प्रस्तुत की जो अन्यता कहै दूसरै का
वि जोइ॥१०९॥ जो यह यौंतो होइ जो यावि-
धि के अभिधान॥ कारज पहिले ही कहै पी
छै कहे निदान॥११०॥ अतिशयोक्ति ए चारि वि
धि मंमट कथन प्रकार बरनत चिंता मनि र
सुकवि निज मति के अनुसार॥१११॥ अ-
तिशयोक्ति यथा क्रम उदा हरन॥ सवैया॥ पूर-
न मंडल बेलि के मूल लसै अक लंक मयं
कन कैयाहे॥ नील सरोज भरे मधु बिंदन लैं

सरतारका हंद सवैयोहे॥डोलतु है तिल मूल
के पोनव धूकी लखे छवि कोन छवैयाहै॥ गे
हके द्वारमैंकाहू महा सुकृती जनको जनु पुन्य
पकैयोहे ॥११२॥ * ॥डोलनि वोलनि आन
कछू लटवो कछु आंन सुभा यहि जोऊ॥ ।
आन कछू परिहास विला सहे आन हसी
मृदु सुधि हि सोऊ॥आन कछू दृग कंज चि॰
तौ निहै आन कछू द्युति दंतनि सोऊ॥स्सीवों
वोपर हे तममें मान लागै जहां करता कर दो
ऊ॥११३॥सविता समहान को सारदा सों क॰
मलामिलिवोए स्वरूप धेरं॥पुनि ताही स्वरूप
में चंद मुखी सब चंद्रिका आपनी चंद्र भरे
मति तापर जोतप कोरि करे पुनि तातप पे
जो विरंचि हरे॥ तिहुंलोक की सुंदरता हरिके
तवतासी जो वाहि करेतो करे॥११४॥दोहा
गोप कामिनिन के मननि लखि छवि घन
घन स्याम प्रेम उमग पहिले भई पीछे व्या
प्यो काम॥११५॥श्लेष विश घन वल उकुत
जो कछु औरकी होइ॥याहि सभा सो कवि
कहत पंडित संमट कोइ॥११६॥अलि पवित्र
जलवास हत कुमुदिनन्तिअधि काइ॥ फूली

हे पति देवता दुज पतिको पति पाइ॥ ११७॥ प्र
स्तुति बक्र विशेष नन बाढ्ना जाथल होइ॥ अ
प्रस्तुति गर्भिता समा सोता कहै ए कोइ॥ ११८
जोत अलिंग देत थन कुम दिन को आनंद
निसा वदन चुंबन करत उदित भयो जव चं
द॥ ११९॥ श्लिष्ट विशेषन होत काहुं काहु साधा
रन जानि॥ उपमागर्भित होत काहु सब्लन
गमनन आनि॥ १२०॥ काहा मुदित अतिही
भई पतिको आगम जानि॥ प्रगटै चारु मयं
क रुचि निसा वदन मुस क्यानि॥ १२१॥ जा
को रूप स्वभाव अरु क्रियाजु जैसीहोइ॥ *
ताको तैसोई कथन सुख मोदोति कहि कोइ॥
१२२॥ कवित्त॥ जसु मति मैया हाऊं भैया वडे
हैहें सदा चिंतामनि वैरिनके उरन मैं सालिहैं
सुर वरषन गोपकुल हरषन लाख लाख वरखन
व्रजभूमि प्रति पालिहैं॥ ललित ललाट पर लटकी
हैं लटैं मानो संदन कमल पर मधुकर आलिहैं
देख लाल पलकाकी पाटी को पकरि खरे खेल
त हंसत किलकात हांस हांसिहैं॥ १२३॥ दूसरो उदाह
रन॥ कुलही ललित बिलसति चारु॥ दो॰॥ प्रगटित वस्तु
छपाइयै जोवनाइ कछु काज॥ व्याजोक्ति तासों

कहत पंडित सुकवि समाज॥१२४॥ कौन्हहिं ल-
खि पुलकित कहति कालिंदी तट नारि॥ ज-
लतरंग सीतल कहाँ सजनी बहति बयारि॥१२५
संग अर्थ के शब्द बल द्वैधा चक्र पर एक॥ त-
हाँ सहोक्ति होतिहै यौं कवि करत विवेक॥
१२६॥ समुझि हिये पति आगमन उमग्यो अ-
ति आनंद॥ लख्यो निशा मुखचंदवलि सततन
सनि मुखचंद॥१२७ जहाँ कछू विन होत कछु र-
म्य अरम्य जुवान॥ बुध जन मत सो विन उ-
क्ति अलंकार कहि जात॥१२८॥ अन्य वि-
शन विन होतिहै विद्या विमल अनूप॥ विन
दोषन को कवित यह नाहि गनत कवि भूप
१२९॥ निंदत नृपति विवेक विन चरचा को
है साथ॥ दान विना सन मानको विना दान
को हाथ॥१३०॥ प्रस्तुति मैं जहं औरसों गुन-
के साम्य निहारि॥ एक रूप तावरनि ये सो
सामान्य विचारि॥१३१॥ चंदन लेपन मुक्त
गन धर्यो सुभ्र तन चीर॥ ततनि चंद्रिका मि-
लिगई मनों संख को खीर॥१३२॥ निज गुन
तजि उत कृष्ण गुन गहे आनि के कोइ॥ अ-
लंकार तद्गुन सुनो कवि जन संमत होइ॥१०

१३३॥ तिय मंदिर की दूंरिसा पतिको भाग्यउदो-
त॥ नानकी दीपति सोध गृह सब सवर नकी
होत॥१३४॥ और वस्तु गुनको ग्रहन जहँन का-
रैं कछु बान॥ ताहि अंल गुन कहतहें जो का-
वि मति अधिकान॥१३५॥ गंगा जल उज्ज-
ल जमुन जल छोय अंत समेत॥ दुहूं म-
ध्य मज्जन कारनु हंस सेत को सेत॥१३६
सो विरोध आवि रुद्धमे जहँ विरोध अभि-
धान॥ सुनो जाति गुन क्रिया अरु द्रव्य मा-
हें सन्तान॥१३७॥ जाति जात्या दिकन सों
गुन गुनादि सों जानि॥ क्रिया क्रिया अरु
द्रव्य सों द्रव्य द्रव्य सों मानि॥१३८॥ यों विरो
ध दश भांतिसों मंमट गये बखानि॥ तिनको
सेत उदा हरन सुकवि लेहु मन मानि॥१३९
जाति जाति विरोध॥दोहा॥ अभिनव नलि
नी दलकमल सेवल मृदुल मृनाल॥ अन-
ल भये या बालको विरह तिहारे लाल॥१४०
परबत मे नाखन भये माखन मृदु पाषान
ललित पल्लवित वेसिद्रुम सब फलफू
ल निदान॥१४१॥ जाति गुन सों विरोध॥गो
पद पुहमी कनक मय गिरि सर षप कोमि-

त॥समुद अंबुवान होतुहे भयो सखिनकेचि
त॥२५२॥जातिक्रिया सों विरोध॥दोहा॥जे
ज्ञान साधत साधुजन वचन सुधाको पान
जन्म मरन भयरहित ते सोइ पावत कल्या
न॥२५३॥गुनसों गुन विरोध ॥कहां चढा
वतिहे सखी वंदन चंदन संग॥सीतल सव
उपचार सखिजारत मेरे अंग॥२५४॥गुन
सों द्रव्यसों विरोध॥दोहा॥प्रेम मगन मुनि
जन कहत व्रजजन धन्य वनाइ॥मंचक
रुचि परमा तमा लोचन गोचर पाइ॥२५५
क्रिया क्रिया सों विरोध॥दोहा॥लखित मु
खपरि मुकरमेंनिज मुख होत निहाल॥तोक
पोल चुंवन करत निज मुख चुंवत लाल
२५६॥क्रिया द्रव्यसों विरोध॥कवित्त॥जगत
विदित न्याय मत प्रसिद्ध यह छोटो जग भ
व्यं परमान तें नेह काहूक॥ताहीके समान
नरच्यो सवही कोमनु ऐसी रचीहे विरंचि
तुम रचना काछू अचूक॥चिंता मनि कहे
ताहि और भांति करतुहे मैनवल वन यावे
लाइयेरे मुहं लूक॥पीतम के विछुरत मार
मार वांनन सों वारतुहे मार मेरे मनके द्वजा

एक॥ द्रव्य द्रव्य सों विरोध॥ कवित्त॥ मालती के फूल मालतीके फलनही मारु फूलनकी मार मीडो मारे सुकुमारीकों॥ चिंतामनिकोहै है वरन नहीन अंग अंग औरई वरन होत अनिल विचारीकों॥ भयेहैं जलज वाल सरके जलज वाल गिरि गिरि भूल लगैंजापे गिरि धारीकों॥ भयोहे निसाहूं सौ कान्हके वियोग सीतवारभान वृष भानकी दुलारीकों॥१४८॥ विशेषको लछन॥ दोहा॥ विन प्रसिद्ध आधारजो करत अधेय वखानि॥ एकहि की इका वारजो थित अनेक थल आनि॥१४९॥ एक वस्तु के करतजो होइ असंक्यो और॥ विविध विसेष विचारिके कहत सुकवि सिरमोर॥१५०॥ देव लोक वासहु भये जिनको उत्तम वानि॥ रहति रसावति सज्जनन सोधन कर विनमान॥१५१॥ वह मनमें वह दृगन में वहे वचनहूं माह॥ वसत तिहारे वास वह हम पावे कितनाह॥१५२॥ रचत उदार सुचार छवि गोहि चतुर सिर मोर॥ नई सिरी रति दूसरी रची सारदा और॥१५३॥ जो अधार आधेय की अन रूपता नहोइ॥ दोऊ को आधिक्य नाम अधिक अ-

लंकाल सोइ॥१५५॥ पृथ्य अधिका लंकार को उदा हरन॥ दोहा॥ जाहि जसोदा गोदमें लीन्ह मोद अखंड॥ नाबालक के उदर में लखे सकल ब्रह्मांड॥१५६॥ दूसरो उदा हरन॥ कलप अंत जाके उदर सकल चराचर रूप॥ नंद नेहनी गेहमें ताहि सुवावत सूप॥१५७॥ * अन्यच्च॥ दोहा॥ कलप अंत जाके बसत जगत सकल सवि भाग॥ तोहरि अंग अमात नाहि राधेको अनुराग॥१५८॥ विभावना अलंकार को लछन॥ दोहा॥ कारज उतपति की जहां कारनकी प्रति षेध॥ सोसव काहत विभावना पंडित सुकवि सुमेध॥१५९॥ विभावना को उदा हरन॥ दोहा॥ वान धनुष सव फूलके सेना अवला संग॥ कोन हेतु है जीतिवो जीत तु जगत अनंग॥१६०॥ विशे षो क्तिको ल॰ दोहा॥ जो अखंड कारन मिले कारज कछू न होइ॥ तासो बिसे षो कति काहत पंडित सव कवि कोइ॥१६१॥ कवित्त॥ मंडप लनाल जाल जालनके पातनके सेजहू में बिछे लाल जालनके पातहैं॥ कारी नीरें गुलावके नीरकी अनूपनदी सिकता कापूर चूर अति अव दातहैं॥

चिंतामनि ऐसी भांति विकल विरहिनीको सी-
तल अपार उपचार अधिकाल हैं॥ एते परम्रुति
फल विरह अगिनि पीरे पीरे हातपेन सीरे होत
जात हैं॥ ९६४॥ असंगति को लछन॥ दोहा॥ हेतु
और थल में कहू कारज और थल होइ॥ अलं-
कार ताको कहत होति असंगति सोइ॥ ९६३॥
ग्वालुचलाए नैन सर मोपै नवि तनकि नांह॥
सखी लखो आचरज यह छिदे सौति उरमांह॥
९६४॥ काहि विचित्र सुविरुद्ध फल पावन कोउ
लोग॥ अलंकार सुन बीन यह बरनत पंडित ९
लोग॥ ९६५॥ गनपति प्रभु सुनिये वचन बोलत
बिमल सुभाइ॥ सबते ऊंचो होनकौं नवत निहा
रे पाइ॥ ९६६॥ जहां विमल द्वे बात कछु करत ९
परस परकाज॥ अलंकार अन्योन्य यह बरनत
सब कवि राज॥ ९६७॥ अन्योन्यको उदा हरन-दो-
हा॥ छया बनि चांदनी समुभ्न बडो उपकार॥
विपुल करत हे चांदनी सुंदरि को अभिसार॥
९६८॥ जो संजोग द्वे बानको जथा जोग नहि हो
इ॥ विषम अलंकार कहत यह कवि पंडित ९
सब कोइ॥ ९६९॥ करनी कौन क्रिया फलै पुनि
अनर्थ कछु होइ॥ जो कारज गुरतकि यातें कीज

और विधि सोइ॥१७०॥ यों विरुद्ध नादेरिवके विषम कहत कविनाह॥ अलं कार करता नके देख्यो ग्रंथन माह॥१७१॥ प्र: विखम को उदा हरन॥ दोहा॥ कितसि रीख कोमल अमल कम ल मुखी को अंग॥ कित कर्कस वारह रतन ती खत तपत अनंग॥१७२॥ मदन सिली मुखके डरन सेयो वन घन कुंज॥ भये महा दुख दानि उत दुगुन सिली मुख पुंज॥१७३॥ श्री हरिजू आरसी कुसुम स्याम निहोर ध्यान॥ विसद होत मन मुनिनको विमल शुद्ध विज्ञान॥१७४॥ तीस विषम को उदा हरन॥ दोहा॥ मोतन तापसिरै सदा तोतन सीतल संग॥ तिहीने उपज्यो विरह जारत मेरे अंग॥१७५॥ समको लछन॥ दोहा॥ होत समा लंकार सो जो कछु जोग संजोग॥ द्वि विधहु वरनत सत असत जोग कहत कवि लो ग॥१७६॥ संजोग समा लंकार को उदा हरन॥ * सवैया॥ वेइनके हित लेत उसासन ए उनके हि त होतिहे पीरी॥ सुंदरता हरि राधिका कीलखि औरकी सुंदरता विधि कीरी॥ वेइत नंद कुमार इतै वृष भान कुमारि ए रूप गहीरी॥ जो यह जो री मिले सखि होहिं दृतो अखियां सखियां

नकी सीरी ॥ १७७ ॥ दूसरो उदा हरन ॥ दोहा ॥ प्रग-
ट भई संसार में निंदा वाही जोग ॥ ताके आदर
करनको प्रगट भये खल लोग ॥ १७८ ॥ कै प्र-
कृत निन होइ कै अप्रकृतन को कोइ ॥ तुल्य ध्य
र्म इक वारही तुल्य जोगता होइ ॥ १७९ ॥ मंड-
ल विध मंदा किनी वृष वाहन सव गात ॥ स-
दा सदा शिव त्व ससि सेवे वास अव दात १८०
प्रकृ ति और अप्रकृति की वृत्ति सवाही वार
कारक की बहु क्रियन में दीपक उक्ति उदार ॥
१८१ ॥ प्रस्तुति अप्रस्तुतिन को सदृस धर्म संजो-
ग ॥ गम्य होइ अगम्य जित तित दीपक वुध
लोग ॥ १८२ ॥ श्री राधाके अधर रस स्वादन और
सुहोइ ॥ दाख सिता मधु सुधा ए हरिको भाव
त नाहि ॥ १८३ ॥ लोभी जन धन लाभ अरु तिय
जन संग सकाम ॥ साधु सकल श्री रामके ना
म लहत आराम ॥ १८४ ॥ देह लसनि मन गेह
पुनि लसत सिरी संपन्न ॥ जल अरु वित्त कवि
नए नीके लगे प्रसन्न ॥ १८५ ॥ पूरव पूरव करे
जो उत्तर को उप कार ॥ माली दीपक होत यह
समझो वुद्धि उदार ॥ १८६ ॥ कवित्त ॥ लली अली
चित वेनन मै मन नेनमहं जीवन मे यह जानी ॥

ता यह जोवन बीच बनाई अनूपम रूप तला पहि चानी॥ताही अनूपम रूप तलामें मनो रथ मैन महा सुख दानी॥ताते बढ्यो मन मोहनको मनतो मिलिबेको मनो रथ पानी॥१८७

दोहा॥आवति दूर न पुनि जातिहै ललित दिखावति गात॥मृग नैनी हेरति हंसति कहति मधुर कछु बात॥१८८॥सदृस धर्म दुहुवनको शब्द भेद सो होइ॥कबित रचांदे बात मे प्रति वस्तू पमे सोइ॥१८९॥प्रति वस्तूपमकोउदाहरन दोहा॥जो हरिके हियरालगी ललनि सीस मनि सोइ॥तिय गन ऊपर उरवसी सबनि सराही कोइ॥१९०॥माला मयप्रति वस्तू पमा॥

दोहा॥हीरासे नैनसे मुकुता अब दाते बैरनास॥॥रचेते लालको हियो थव सोसासि सरपरगास॥१९१॥मेरुथ द्युति ही तुंग विधु सीतल बिना उपाइ॥सहज समुद गंभीर अस सुजन सुभाइ गनोइ॥१९२॥जहं बिंब प्रति बिंबको भाव सबन में होइ॥कहत सुकवि दृष्टांत है सुनहु ताहि सब कोइ॥१९३॥जहां तुलित दै वस्तुको शब्द भेद अभि धान॥सो बिंबप्रति बिंब मय भाव कहत सज्ञान॥१९४॥अलंका

रष्टांत में सदस धर्म कोहोइ॥विसे षनहुकोहो
इ पुनि बिसेष्यमे सोइ॥१९५॥लाल तिहारे
लोचन ही बात हिये हुलसात॥लखनि नरनि
अवलो कतहि पदमिनि पदमिनि कात॥
१९६॥वैधर्मसे ते दृष्टांत॥दोहा॥काहू दंम दंभी
नको छुप्यो न रहत निदान॥भारव मारतहीं
होतु है प्रगट वकाल को ध्यान॥१९७॥अन
होनी जग वस्तुको कछु संबंध जु होइ॥ उ-
पमा पर कल्पक इहै निदर्सनाकहि सोइ
१९८॥कित अवला हम अलप मति कितय-
हु जोग अगाध॥कैयांकर कैरै पपील का अ-
चल उचावन साध॥१९९॥अलि अंजन
बंधूक दुति अधर अधर लखि लाल॥धरी
नई दुति इंदुकी कांत वदन मे वाल॥२००॥
अपने अपने हतुको जोता संवद्य ज्ञान॥हो
न कियाते निदर्सना ताहू कहत सुजान॥२०१
कवित्त॥ उज्वल स्वछ सुढल प्रभानि धिरे
गुन वंत अनूपम जोहे पाइकै उज्वल सोपद उ-
त्तमसोहत है निरखे मन मोहे॥सो यह बात
बिचारि कहे मन देख्यो विचारि मतो सबकोहै
मंजुल जो मुकता हल हार सो नारिके ऊंचे उ-

रंजन सोहै ॥ २०२ ॥ दोहा ॥ अधिक जहां उप-
मेय कवि वरवर नत उप मान ॥ लहै विन रे-
क वनाइ कै वरनत सुकवि सुजान ॥ २०३ ॥ *
कवित्त ॥ उपमेय गत उत कर्ष अस अपक-
र्ष जहं उपमान को ॥ जहं होत है दून दुहून को
दूत कथन सुकवि सुजान को ॥ कहुं कथन
हेतु दूहून कहुं एक ही को जानिये ॥ कहुं शा-
ब्दनै कहुं अर्थतै आक्षेपतै कहुं मानियै ॥ *
२०४ ॥ दोहा ॥ ए चारि चारि सुत होत वारह चा-
रे के विसेस सों ॥ सव भेद ए विन रेक के मनि
जानि लेहु विसेस सों ॥ २०५ ॥ विविधि हाव भाव
ना सहित अति सुंदर जग माहि ॥ सज निसिद्ध-
रि चंद ज्यौं वदन कलंकी नाहि ॥ २०६ ॥ रदछंद
वाहा प्रवाल ज्यौं अमल कमल ज्यौं नैन ॥ कौं
कहिये चुन्वकोक ज्यौं करत कहा चित चैन
२०७ ॥ सुंदरि मुख अक लंक मुख जित्यौ कलं-
की चंद ॥ दृगन जि ने खंजन कमल जनु की-
न्हे रुचि मंद ॥ २०८ ॥ नेरी थिर रुचि है सदा जी-
ती विजुरी वाल ॥ जिते निहारे भुजन्हैं कंजनि
कलित मृनाल ॥ २०९ ॥ सकल चारुता सहित
मुख कौं ससि ज्यौं कहि जाइ ॥ देखे वार वार

होत हैं बिमाल ससंक बनाइ ॥२१०॥ एक वाक्य मैं होत है जायल अर्थ अनेक ॥ ताको अर्थ सलेष कहि कवि जन करत बिबेक ॥ २११॥ दृग लखि मन हरख होत अति सब तम दुख मिटि जात जह दीपति दुति देवता दरसन पाये प्रात ॥ २१२ ॥साभिप्राय विशेषनन कथन सुपर कर जान ॥ याको देत उदाहरन सुकवि लेहु मन आन ॥ २१३॥ कवित्त ॥ होंतो हों अनाथ तुम अनाथन के नाथ हो दीन तुम दीन बंधु नाम निजु कीन्हो है ॥ होंतो हौं पतित तुम पतित पावन वेद पुरान बषानो कछु कह्यो नवीनो है ॥ वाव कारी सेवा जो हों कहों मेरी सेवा रीझे आपही ते आपनो के चिंता मनि लीनो है ॥ अब तुम्हे मेरी रक्षा करिवे ही परी राम रावरे ही मोहि निजु नातो जोरि दीन्हो है॥ २१४॥ जहं विशेष अभि धानकी इछा कथन निषेध ॥ चिंतामनि कवि कहत है सो आछेप नि सेध ॥ २१५॥ वर्द्ध मान विषय निषेध को उदा हरन ॥ देहा ॥ कहों न काहू निडर सों हों काहू की वात ॥ विन विचार कर काज अब मेरो जु मरिहो प्रात ॥ २१६ ॥ उक्ति विषय निषेध आछेप को उदा ह-

रन॥दोहा॥प्रेम तिहारे चंद्रिका चंदन कामल मृनाल॥अनल भये वा वालकों काहू न काहिये लाल॥२२७॥स्तुति निंदा मिसि कौरे अस्तुति निंदा होइ॥चिंता मनि कवि कहत है ब्याजस्तुति है सोइ॥२२८॥कवित्त॥जाको कृपा कौरे ताको संसारे छुडावै कहै चिंतामनि भांति यह भली मन भाईहै॥पापी सुकृती न सेसे एके गति कौरे दुन्है जाने को कहांते भा कौन धौं वडाई है॥माया मोहे सबही को रीहै ब्याध गनिकापै कीरति सकल जग ऐसी काहू गाई है॥रूप जाति गुन कहावै जगत पति जगत की प्रभुता धौं कौन गुन पाई है॥२२९॥ अस्तुति मिस निंदा॰मानसतो लीजि यतु परषि सुभाव लषि तुम पिय सज्जान सिरोमन प्रकासहौ॥जिनकेहू चुरायो मन मानिक तिहारो सो वहै नप दृति हिये पावतहुलास हौ॥ चिंतामनि कहै कठोर कुच उर वीच ताही तुम बांधे निसिगाढे भुज पास हौ॥ताको सुखमानि लेत कहांलौ भलाई कहौं ऐसे स्याम सुंदर सुधाई के निवास हौ॥२३०॥ अप्रस्तुति प्रसंसा को लछन॥दोहा॥ अप्रस्तुति के कथ-

न बिनु प्रस्तुति जान्यौ जाइ ॥ अप्रस्तुति पर
संससो सज्ञान सुनौ बनाइ ॥ २२१॥ कारजके
प्रस्ताव मे कारज को अभिधान ॥ कारन के प्र
स्ताव मै कारज कथन सुजान ॥ २२२॥ अप्र-
स्तुति सामान्य जो तहं बिसेष कहि जाइ ॥ का
हुं बिसेष प्रस्तुति कहें सामान्यौ जु बनाइ ॥
२२३॥ कहूं सहस प्रस्ताव मैं सदृस अभिधा
न ॥ अप्रस्तुति संकार के पंच भेद दृमिजा-
न ॥ २२॥ ॥ यथा कारज उदाहरन ॥ दोहा ॥ सच
नलकी कुलकानि तजि लखि गुरलाज समा
ज ॥ सैबै टगी हरि मुख निरखि सबन तज्यो गृह
काज ॥ २२५॥ इहां आजु तू क्यों खड़ी कैसे रही
है वे तोहि मोहि कछु सुधि नाही गृह काज प्रस्ता
व मै हरिमुख दरसन को कारन कह्यौ कारन
के प्रस्ताव मै कार्जकान-अधर बिंब बरनत रहे
लाल उचानि कहि कौन-आजु ललाकि बरन्यो
चहत रहत लाल गहि मौन ॥ २२६॥ इहां सखी
मंडल मैं नवोढा के अधर बिंबा स्वादन नायक
कियो यह प्रस्ताव मे बिंबा स्वाद ते लोकिकानु
भाव बरन्यौ नाही जात बुद्धि मंद भयो यह का-
ज कह्यो सामान्य के प्रस्ताव मे बिशेष को कथन

दो॰ जल कन कमल निपात मैं उन मन मुकता मानि कार परसत लषि लीन जड सोचत कहि निजु हानि ॥ २२७ ॥ विशेष के प्रस्ताव मै सामान्य को कथन ॥ दोहा ॥ जासौं आपन मित्रकौ किये जादु उपकार वह कुलीन वहै सती वहै धन्य संसार ॥ २२८ ॥ जहां तुल्य अभि धान तह तीन प्रकार विसेष ॥ श्लेष समासो कति अपर समता मूल कलेष ॥ २२९ ॥ श्लेष मूलक को उदाहरन ॥ दोहा ॥ कहि मनि अथिक सनेह कर करौ लाख विधि कोइ ॥ कहूं प्रकासन जगत मै बिन गुन दिया न होइ ॥ २३० ॥ समासोक्ति मूलक को उदाहरन ॥ दोहा ॥ रसा जगै जवलौं नहीं हेतुन आदर मेह ॥ रसा जगै जा दीप मै सवे कारत है नेह ॥ २३१ ॥ सदृस प्रस्ताव मै सदृस कथन ॥ दोहा ॥ जित नित ललित वसंत मै फूली लता अतूल ॥ फूल नहीं अलि के हिये बिना मालती फूल ॥ २३२ ॥ वाच्य जु वाचक भाव की रीति तजे कछु भुक्ति ॥ पेच लिये सो सव कहत पर्यायोक्ति जुक्ति ॥ २३३ ॥ साम अर्थ जो विंजना सो पुताप दित होइ ॥ पर्यायो कतिताहि को कहत विवुध

सब कोइ ॥ २४ ॥ निरखिकान्ह को रूप सौति-
जीवासकी प्रीति ॥ मंदरती उन मद मदन मन
भन सुधबुध नीति ॥ २५ ॥ प्रस्तुति कारन ते-
जुहे प्रस्तुति कारन ज्ञान ॥ पजों यो बाति कह-
तयों बिबा नाथ सुजान ॥ २६ ॥ दर की अंगि-
या मल गजी मारी अति थित चैन अलसौ-
हें से ललित हैं आजु लगो है नैन ॥ २७ ॥ य-
ह रचिके कौ एरचे ए ती कोइ कहु बात ॥
जुबा देप उप मान कौ सो पतीप कहि जात ॥
२८ ॥ उप मानो उप मेय यह करे अनादर का-
ज ॥ इहां प्रतीपे कहत हे पंडित सब कवि राज
२९ ॥ रचि मधुराई अधर की सुंदर बदन बना-
इ ॥ सुधा सुधा निधि कों रचेबिधि बुधबे भ-
व पाइ ॥ ४० ॥ गरभ धरत मन जानिहो एक
नरानि सिर मौर ॥ रूप बली अति जगत में तो-
सी रति है और ॥ ४१ ॥ जुहे साध्य साधन क-
हिन सोवर नन अनु मान ॥ तर्क न्याय मूलक
सुतो अलंकार सज्ञान ॥ ४२ ॥ भौंह भाव जहं
तिय करे तहीं परति है बान ॥ इनके आगे सर
मदन लीन्हे बान कमान ॥ ४३ ॥ हेतु बाक्य-
को अरथ के अर्थ पदन को होइ ॥ काव्य लिंग

तासो कहत हेतु बखानत कोइ॥२५४॥हरि
उर निर्मल नील मनि दरपन सिला समान॥
प्रति बिंबत इत राधिका कमला कांति निधा·
न॥२५५॥पदार्थ के हेतु ताको उदा हरन॥ *
दोहा॥आथ अगाध नदी बदी पारन पावत
लाल॥दे अब लंबन कुच कलस जस अमो·
लसै बाल॥२५६॥नील बसन पावस निसा
चली जहां नंद नंद॥नेक काहू मग लखिलैहै
कछु उघार मुख चंद॥२५७॥स्लेष मूल को
उदा हरन॥दोहा॥पाप मतंग घटान तिन भं·
न करो नित राहि॥चिंता मनि जिनके बसत
पंचानन उर माहि॥२५८॥काल परस पर जो
मथन जो सामान्य बिसेष॥सो अर्थांतर न्या·
स कहि लखि पंडित गन लेष॥२५९॥बिसे·
ष परि मान को उदा हरन॥दोहा॥मूढ़न की
मति मंद ता तियन साधु करि लेत॥लखत
रहट पति कमलिनी मधुपन को मधु देत॥
२६०॥रीझनि खीझनि बूझ बिन बूझहु लेत
रिझाइ॥नीके कौनी को लगे सब विधि स·
वै सुभाइ॥२६१॥क्रम कन को अन्वय जहां
बरन्यो क्रम क्रम होइ॥यथासंख्य सो अलं·

कत समति वाहत सबकोइ ॥२५२॥ मधुर बदन कच कुच लसत सुभग बैन अरु नैन ॥ बिंब चंद तम कोक जुग अमी कमल से ऐन ॥२५३॥ एक वस्तु के भएतें और भई जो होइ ॥ ताको कहियेयह कहा अर्था पत्तिहु कोइ ॥२५४॥ सुंदरी की दिन कांति तनु राति उज्यारी होति ॥ दीपक की जीती कहा चंप कली की जोति ॥२५५॥ एक वस्तु जो अनेक थल प्रापत एक हि बार ॥ नियमित कीजे एक थल पर संख्या लंकार ॥ २५६॥ एक वस्तु औरकाही ठौर नेम जो होइ ॥ परसंख्या तासों कहत कवि पंडित सवकोइ ॥२५७ प्रस्न पूर्व जोएक पुनि ताते भिन्न जु और ॥ परिसंख्या द्वैविध पृथक कहत सुमति सिर मौर ॥२५८ वर्जनीय कुलजो कछू कहूं शब्द गत होइ ॥ कहूं अर्थ बल पाइये यह विधि दोऊ दोइ ॥२५९ पूछौ अन पूछौ कथन कछू वस्तु को होइ ॥ ऐसो औरन हेत यह परिसंख्या कहि सोइ ॥२६० परि संख्या लंकार मै कहत शब्द गत होइ ॥ कहूं अर्थ बल पाइये जो सम नाही कोइ ॥२६१॥ मंमट आचार्ज इहां ऐसो कियो विवेक ॥ परि संख्या लंकार को समुझौ पंडित एक ॥२६२॥

शब्द गत वर्जनीया प्रश्न परि संख्या को उदा हर-
न॥दोहा॥कोन सुखी जो राम को नहि संपति
रस लीन॥कोन सुखी जो रामतें विमुखन सं-
पति हीन॥२६३॥ अर्थ गत वर्जनीया प्रश्न पूर्वि
का परि संख्या॥दोहा॥कहा से इये पुरुष को
सब दिन सज्जन संग॥कहा ध्येय ये कहत म-
नि व्यापक ब्रह्म असंग॥२६४॥ शब्द गत वर्जे
नीया अप्रश्न पूर्विका परि संख्या॥दोहा॥भूष-
न की रीति नहि रतन धन विद्या नहि वित्त॥
लोचन सुमतिन नैन जुग समभात सज्जन
चित्त॥२६५॥ अर्थ गति वर्जनीया अप्रश्न पू-
र्विका परि संख्या॥दोहा॥कुटि लाई तेरे कुचन
वार पग बोदन राग॥नैननि चलिता कठिन
ता कुचनि भाल मे भाग॥२६६॥ शब्द गत व-
र्जि नीया प्रश्न पूर्वि का श्लेष मूल परि संख्या॥
दोहा॥कौन नेह बिन धोसके दीपन सज्जन स-
माज॥कौन मंद सन वार नहि मनुज राम के
राज॥२६६॥ प्रश्न पूर्विका अर्थ गत वर्जे नीया
श्लेष मूल परि संख्या॥दोहा॥कोविन गुन र-
ति हार बिन जो ती को मुखचंद॥कोन मंद गति
अवधमें बाल बाल सा नंद॥२६८॥ शब्द गत व-

जे नीया अप्रस्त पूर्वि का श्लेषपरि संख्या दोहा॥
तिथ छवार मंगल विना कैसें कहिये वारकोइ
विसमय रस नहि खल वयन जित हरि चर-
चा होइ॥ २६९॥ अर्थ गत वर्ज्ज नीया पुर्वि का
श्लेष मूलक परि संख्या॥ दोहा॥ मनि मरीच
मय द्वारिका हरि नगरी अवदात॥ सुनी त्रिगु
न वर बाहि मैं जामे तमकी बात॥ २७०॥ उत्त
र सुनि जहं प्रस्न को भटका रही तें ज्ञान॥ क
हु पिस्रा उत्तर कथन प्रथमो त्तर सज्ञान २७१
वसन काहो कैसे पथिक पति मेरो पर देस॥
सासु अंध वहिरी ननंद वैठै कलं तका लेस
२७२॥ कवित्त॥ सुंदर कौं मन मोह तं जूइत वैठी
हौ वैठी कहो स वजीकी॥ वात कहे सुनि हौ
कहि सपीत की बतियां सुखदायक तीकी॥ आ
वौ इते मिलि आर सी देखिये हैं हम नीको कि
हो तुम नीकी॥ नीकी भई जु जो हो तो काहे हम
कैसे के होंहि वरा वर पीकी॥ २७३॥ दोहा॥ सि
खवन पठये तुम जु इत ऊधौ सब गुन धाम॥
निरगुन कुबिजा मगतें के सुत बल सो स्याम
२७४॥ एक सिद्ध कार संग मिलि औरो साधक
होय॥ होइ अनेक समुच्च या अलं कार यह २

कोइ ॥ २७५ ॥ कवित्त ॥ दुलारे मा वापके सका-
ल गुन धाम राम महा राज कुमार ललित रूप
खानि हैं ॥ जोवन को आगमन मंदिर पूरन ध-
न जगत निहाल करिबे को हाथ वानि हैं ॥ सी-
ता जू ललित अंग सहित सुरों की संग सखी जे
सिखाई सव सकल कलानि हैं ॥ कौन वाहे चिं-
ता मनि मनि मय मंदिरनि आप जोति रूप जै-
से खेले कछू आनि हैं ॥ २७६ ॥ विरहिनी को
असत वस्तु को जोग ॥ कवित्त ॥ चिंता मनि घ-
न वन वीथिनि वोलत मोरते सिये रही है घटा
घनकी उनै उनै ॥ तैसिये भई है लाल भूमि इंद्र
वधुन सो वधुन पहरी लाल चूनरी चुनै चुनै
सीरी सीरी तैसियै कादंवन की वासु लैलै वा-
य वहै लह लही वेलिनि हुनै हुनै झांकि कै झ-
रोखे मुरझाति वाम घरी घरी हरी हरी पेषि अं-
कुरनकी मुनै मुनै ॥ २७७ ॥ सदूस जोग समुच्च-
य को उदा हरन ॥ दोहा ॥ रूप हीन अरु आरसी
देखि देखि मुसकात ॥ मूरख प्रगटै चातुरी वडी
हंसी की वात ॥ २७८ ॥ गुन गुन जोग समुच्चय
को उदा हरन ॥ दोहा ॥ सज्जनपालक को सखी
व्यापक ब्रह्म अनंग ॥ धरे अंग इक संग ही स-

अरु याम है रंग ॥२७९॥ क्रिया क्रिया जोग र-
मुखय को उर हरन ॥ दोहा ॥ औध नगर ते
निवारि कारि बन बसि रघुकुल राज ॥ स-
त्य पिता को वचन अरु कियो देव गन काज
२८०॥ दूजे कारन के मिले काजु जु सरस होइ
सो समाधि वरनत विवुध समझत सज्जान
कोइ ॥२८१॥ हरि चाह्यौ पग परन कौ मान
वती लखि वाम ॥ भई तडित घन स्याम मे
निरखि तडित घन स्याम ॥ जहं कारिये परत-
च्छ सम भावी भूत जुवात ॥ भले कार कारता वा
रत स्वाभा विक कहि जात ॥२८३॥ दियो हुत्यौ
जावक जुयौं प्रगट देखिये पाइ ॥ अंग भूष वैहे
सबै भूषित लखौ बनाइ ॥२८४॥ जा उपाय काहू
करी काछु जु अन्यथा बात ॥ ता उपाइ जो ते सि-
ये कौ कुयौं व्याघात ॥२८५॥ ज्यावति है तिय
नैनही नैन जु ज्यौ यौं काम ॥ जी तति विषम
विलोकननि वाम लोचनी वाम ॥२८६॥ क्रम क्र-
म एक अनेक मे एकहु माह अनेक ॥ है प्रका-
र पर्जाय यौं सत्त कवि करत विवेक ॥२८७॥
सवैया ॥ छांडि दई तनु ताजु नितै वाहे ताकौ वा
हा सैवन लागै ॥ पाइन चंचल ता जु तजो अ-

बता परैन जोगे अनु रागैयो॥ मंद सुभावलि यो-
गति जो मृग लोचनी की मति को तजि भागैयो
अंग न के गुनको बदल्यो करिके तियको तन
जोवन जागैयो २८०॥ कवित्त॥ देखो वाम भयो
सुखहसी वाम भयो दुखजाको मुख पूरन सर-
द रितुको ससी॥ चिंता मनि देख्यो मन मोह-
नजू आये वाके वाके चारौ ओर चंद्रिका स
चिरहे लसी॥ रात्यो दिन घर वासी रहति घर
वासी मेरे कहे कैसे रुसीं अबे द्वारे लगनि दा-
सी॥ नैननि मे बसी रूप आगुसेज बीच उर ब-
सी जानी लाग उर बसी॥ २८१॥ सवैया॥ नाह
जु नाहर लागतु है कछु बोसन मे उन मान
लयो॥ भयो भीत सुभावहि लाल घटे दिनहू
दिन ज्यों उन नेह बयो॥ बहु यों बडे प्यार को ठौ-
र भयो सजनी सुखदायक रूप नयो॥ अब जा-
के छुटे छन को जिओ सखि पीतम प्रान स्व-
रूप भयो॥ २८२॥ दोहा॥ पूरव पूरव अर्थ जा-
हं उत्तर उत्तर हेतु॥ कारन माला होत सो सुने
बढे चित चेतु॥ २८३॥ विद्या तें उपजै विनै वि-
नय जगत बस होत॥ जगत भये बस धन मि-
ले धनतें धर्म उदोत॥ २८४॥ कोध पियेके दूषि-

यै किये विसे पन भाउ॥ यथा प्रथम पर फेरि कहि एकावली बनाउ॥२९५॥ धाम वाम जु त वाम जो रूप वंत बहु रूप॥ सहित विलास विलास जो मनमथ वान अनूप॥२९६॥ नजा सु जहां नहि कंज नहि कंज जहां नहि लंद नाहि मिलंदक सरवन जो रव नन जितस्थाने द॥२९७॥ जहं समास सम अर्थ को वदलो वरन्यो होइ॥ चिंतामनि पर वृत्त वह वरनत है कवि लोइ॥२९८॥ वासु दियो तन जोवनहि जोवन तनको जोति॥ उप कारन उन मन की रीति परस्पर होति॥२९९॥ कहा कहों हैं कौन सौं आई हौं इह काइ॥ सुधि वुधि ह रि सब हरि लई दीन्ही विरह वलाइ॥३००॥ जाइ लियो नहि वैर जहं परसौ प्रवल विचा रि॥ एकै को अपकार जो प्रत्य नीक निरधा रि॥३०१॥ रूपहु पहारितुम हर्‍यो वह तुम सौं अक सेन॥ जीतिव चाहति है तुम्हे ताहि देत दु ख मैन॥३०२॥ होइ जु कौनो अर्थते सूछम अर्थ प्रकास॥ सूछम नाम प्रसिद्ध यह अलंकार सु खवास॥३०३॥ कवित्त॥ कहु किंसुक फूल प लानिसोपूजत्तु शंभु लखे वृष भान सुरी॥ मुसक्या

ति काछु मनि ढोहि स्वीको सुवाल उरो जन-
वीच परी ॥ अंसु वान विलोचन पूरि रही सु-
वि स्वरति सी काधु आध घरी ॥ नव कौल का-
ली सेदु औ कर जोरि लिया नति संकर धार
धरी ॥ २०४ ॥ दोहा ॥ जहां कौनहू वातमें काछु
वनियें सार ॥ सो उत्तर उत्कर्ष यों सुनियें सार
विचार ॥ २०५ ॥ पुहु मीसी वारा नसी तासे पंडि
तसार ॥ वहुरि पंडि तन मे समुझि सार सुबुध
विचार ॥ २०६ ॥ जहां तहां संपति कथन सो उ
दार मन आनि ॥ जो उप लक्षन वडेन को क
ही वहे पहि चानि ॥ २०७ ॥ कवित्त ॥ लालन की
सीलनि को ललित पटाउ लाल जटित दिवा-
लन की चोक चहू वोर की ॥ लाल वहु भूमि है
महल खंड खंड लाल खंभनि खुलनि छवि सुर
के झकोर की ॥ चिंता मनि मनि में भरो खन-
की वैठ कन गान मृदु घुमर मृदंग घन घोर की
संदर रतन मय संदरि संदरी सगवेलन ललि
त लाल लसनि किसोर की ॥ २०८ ॥ दोहा ॥ सो
यह वृंदावन जहां रच्यौ रास नंद लाल ॥ मुरली
मधुर वजाइकै मोही सव व्रज वाल ॥ २०९ ॥
एक कवित में अलं कृत भासे भिन्न अनेक

के मिसे ह्वजु परस्य रहे संसिलह विवेक ॥ ३१० ॥
शब्दालंकार अनुप्रास यमकी यद्दष्टि ॥ दोहा ॥
शिव गिरिपर गज मुख मुदित गरजत गिरिजा
पौर ॥ एक विनायक करत है एक विनायक
मोर ॥ ३११ ॥ चाप मुकुट पट तड़ित बग पांति
मुकत मनि दाम ॥ कानकोलता लीवऊन यो
म्याइ इते घन स्याम ॥ ३१२ ॥ लंकार पुनि इनकी
इते अंगं गिता वखानि ॥ आपुहि को विश्राम
को पावत जे नहि आनि ॥ ३१३ ॥ कानकोलता
इह अति सपोक्ता संवोधन मे ताको उपमा का-
रि उपस्था पित जो अर्थसो याको उपजी व्य-
है याते अर्थालंकार को संकर है ॥ दोहा ॥ क-
हुतमले हातमे जहां अर्थन निश्रित होइ ॥ को-
हे मे संकर कहो वरनत हैं सब कोइ ॥ ३१४ ॥ क-
वित्त ॥ हों तो तुम्हे पहि चानति हों वल बालन
के बहु पेंच बने हो ॥ औरके माल भयो छति
यां कुच कुंकुम छाप छपा यन सेहो ॥ बाहू
सों ऐसि ही बोलहुगे मनि पीतम जाकि घरे
जब जेहो ॥ मोहनी मंत्रसे वेननि मोहि के मो-
हन मोहि कहा वहं केहो ॥ ३१५ ॥ * ॥ यामे
मोहनी मंत्र तुलित जे वचन हैं तिनकर मोहि-

वो कारन ताहै यह कारनते विद्य मान ताहू वह करि की वेसों सलाहते अर्था लंकार कीसृ-ष्टिहै या कवित्त की वस्तु सो यामे मोहनी मंत्र तुलित जे बचन हैं तिन कार मोहिवो कारनता है यह कारन के विद्य मान ताहू वह करि की वेसों सलाह ते अर्था लंकार की सृष्टिहै याक-वित्त की वस्तु सों कवित्त प्रथम ॥ तेरे कपोल्न से हो इन सोऊ ज कंचुकी की कारि आरसी वोपे अंग प्रभार अन् पम मैन वधूको सदाही गुमान निलोपे ॥ आद रून द्युति चंद्रिका लालची चाहे चकोर भये दृग तोपे ॥ वारको तो विधु वंधुमुखी हसि नेकु विलोकि विलासिनि मोपे ॥ ३१६॥ इहांप र्यार्थाति शक्ति प्रथम चरन मे ॥ वितरेक दूसरे चरन मे ॥ पर नामा तीसरे चरन मे ॥ रूपक चौथे चरन मे या सतहै ॥ दोहा ॥ सर के दोऊ जने है नहि कारनु अनंग ॥ प्रति विं बित आ-पुहि लषत स दोऊ दुहु अंग ॥ ३१७॥ * ॥ * ॥ श्री राधाकृष्ण की एकात्म साध्य हे अरु एक अं-गमे उभयाव लोकन हेतु हे याते साध्या साध-न अनु मान है के अनंग करत विचार ते अंग-ते भिन्न करत तात पर्य यह माया प्रति विंबित

चैतन्य उभयत्र हे आपु आत्मा एवै हे मायास
बको छोडे शुद्ध चैतन्य हे आपु आत्मा एवो
हे माया सबको छोडे शुद्ध चैतन्य हे महाश्लि
षहे सो उभयत्र एकत्व साधक हे ताते अनु-
माना लंकार हे अरुण्या शब्द मे औरो अलं-
कार संभवित हे अन्यो अन्या दिवा याते ए-
क को निश्चय नाही ताते संकर है॥ दोहा॥
कछुन सुपरि मा मृदुलता बिसद बरन जुत फू
ले॥ जंपत मेलिहि तकात अलि सब बेलिन
की तूल॥ ३०८॥ *॥ इहां बिसेषणगत समासो
क्ति हे के अपान्हुति प्रसंसा हे ताको निश्चय ना
ही ताते संकर हे।दोहा॥ अस्फुटि जो एका हि
विषय पद अर्था लंकार न है अवस्था कोगुनि
संकर समुझ विचार क॰ मोर किरीट लसे चपला
पट नील व ला हवा रंग हते हें॥ गोपके बांध
धरे भुज दंड अनूप बिलास कलानि धरे हे॥
कान धरे नव मंजरी मंजुल वंजुल कुंजन ते
निकरे हें॥ सुंदर मार हुते सुकुमार सो बेलत
नंद कुमार खरे हे॥ ३०९॥ दोहा॥ छवि छलका
ति तन सहज की तापर ललित बिलास॥ कुंद
न पर सुंदर लगत ज्यों मनि द्वंद प्रकास॥ ३१०

यही उपमा लंकार को कति अनुप्रास को संकर
है ॥ इति श्री चिंतामनि विरचिते कवि कुल क-
ल्प तरो नाम अर्थालंकार निरूपनं त्रितीयं प्र-
करणम ३ ॥ दोहा ॥ शब्द अर्थ रस को जु इत दोषि
परे अप कर्ष ॥ दोष कहत है ताहि को सुने घ-
टत है हर्ष ॥ * ॥ १ ॥ स्रुति कटु च्युत जो संस
कृत अर्थ जुक्ति अस मर्थ ॥ निहतारथ अनु-
चित अरथ औ रजु होइ निरर्थ ॥ २ ॥ और
अवाचक त्रिविधि पुनि इत अस्लील विचा-
रि ॥ संदिग्धौ अप्रतीति पुनि ग्राम ने यार्थ
निहारि ॥ ३ ॥ क्लिष्टो बहुरि बखानि ये विरुद्ध
मति क्रम जानि ॥ शब्दन के ए दोष हैं सुजन
लेहु मन आनि ॥ ४ ॥ कानन को जो कटु लगे
स्रुति कटु दोष सुजान ॥ संस कार च्युत होइ
सो च्युत संसं कृत मान ॥ जो नहि प्रोगी सत
कविन काची भाषा जान ॥ मथुरा मंडल ग्वारि
ये कौ परिपका बखान ॥ ६ ॥ स्रुति कटु को उदा
हरन ॥ दोहा ॥ धन्य भयो रात कृत्य हों सफल
भई है दृष्टि ॥ दरस तिहारो पाइ कै हिये भई सु-
ख वृष्टि ॥ ७ ॥ काची भाषा को उदा हरन ॥ दोहा ॥
वाकी सूरति सांवरी सो मुहि लागी नीकि ॥ व-

है वसति है चित्तमे और नई सुधि देकि ॥ ८ ॥
मथुरा मंडल रवारि यर की सुर बानी कोइ ॥
जोन प्रयोगी सत । कविन अप्र युक्ति है सोइ
९ ॥ अप्र युक्ति को उदा हरन ॥ दोहा ॥ जबते दे-
खी भावती तबते सुख चर चान ॥ भिन्न भिन्न त-
नु जारि है मो कंदर पक वान ॥ १० ॥ अमर्थ को
उदा ह रन ॥ दोहा ॥ बनमे सोहत कमल अरु
राजत सारस हंस ॥ सरमे अति सुंदर लसत
सरद वाल अव तंस ॥ ११ ॥ द्वे वाचक पद मे ज-
हां अप्रक्र तिहि को बोध ॥ सो निह तारथ कह
त है चिंता मनि मन सोध ॥ १२ ॥ निह तारथ
को उदा हरन ॥ दोहा ॥ लो इन ललित बिला-
से है रकत रूप दे हाथ ॥ बात कहत कछु मंद ग
ति चली सखिन के साथ ॥ १३ ॥ अनुचित को ल
छन ॥ दोहा ॥ होइ अनु चित अरथ तहं उचित
न बरनन होइ ॥ ताहि अनुचितारथ कहत पंडित
सत कवि कोइ ॥ १४ ॥ मानति नाही मे गई हरि
के बारक आइ ॥ बोलति नाही रोह के बैठ रही
है काह ॥ १५ ॥ निरर्थ को लछन ॥ दोहा ॥ छंदे
पूरन को जु पद होइ निरर्थक सोइ ॥ को वाचक
पदन जो वहे अवाचक होइ ॥ १६ ॥ बोलति है

यह कोकिला सोपुनि तहं तू पेष॥ रिसहा प-
रहिंहि सवी घुही वोल पुनि लेष॥ १७॥ अश्ली
को उदा हरन॥ दोहा॥ वि मारग देखति उहा पा-
द परी हीं आइ॥ तू तववैसी करहि जो विर-
ह पीउ मरिजाइ॥ १८॥ संदिग्ध को लक्षन॥
दोहा॥ जहा होतु संदेह है सो संदिग्धवखानि
॥ स्त्र हीन मे जो कह्यो अप्रतीति सो मानि॥
१९॥ संदिग्ध को उदा हरन॥ दोहा॥ कृदत
जाके होतु है ये विरहे मनु लाइ॥ अति सुंद-
र सुंदर कन्यो हरि देख्यो किन आइ॥ २०॥ अ-
प्रतीति को उदा हरन॥ दोहा॥ तो चितु मे चिंतु
है महा तू क्यों बैठी रूठि॥ तैं निजु मान कि-
यो भटू ज्यों मरकट की मूठि॥ २१॥ ग्राम्य को
लछन॥ दोहा॥ होत गंवारी पद जहां ग्राम्य
कहत हैं ताहि॥ चिंता मनि कवि कहत है सुक-
वि तजत हैं वाहि॥ २२॥ ग्राम्य को उदा हरन॥
दोहा॥ चुची जभीरी सी वनी गोल लाल है गा-
ल॥ जाके नैन विशाल वह गरे लगी कव वाल
२३॥ नैयार्थ को लछन॥ जहा निषिद्धि की ल
क्षन। सो नैया र्थ वखानि॥ चंदहि हनत चपेट
सों तेरो मुख मृदु वानि॥ २४॥ क्लिष्ठ को उदा हरन

जाको अर्थ कहे बिना जान्योई नहि जाइ ॥ को-
केलस ते जानिये सो है क्लिष्ट बनाइ ॥ २५ ॥ द्र-
व्य नाम दृग हीन पद आसन रिपु पद तासु ॥*
पूल खान ताको सुहृद लीन्यो दूखद तासु ॥*
२६ ॥ विरुद्ध मत क्रत को लछन ॥ दोहा ॥ सो वि-
रुद्ध मत कृत जहां जान्यो जाइ विरुद्ध ॥ ऐसो
कवि जन कीजिये है यह निपट असुद्ध ॥ २७ ॥
विरुद्ध मति कृत को उदाहरन ॥ दोहा ॥ बडे प्र-
वीन सुबुद्धि हैं सदा अकारथ मित्र ॥ कहा औ-
र संसार मे ऐसो विमल चरित्र ॥ २८ ॥ अब
वाक्य दोष गराला लिखै हैं ॥ दोहा ॥ प्रति कूला
छर होत है अरु हत वृत्ति बखानि ॥ ऊन अधि-
क पद कथित पद पतत प्रकर्षी मानि ॥ २९ ॥
पुनि समाप्त पुनि रात कहि चरनां तर पद हो-
इ ॥ पुनि अभवन्मत जोग कहि अकथित वा-
च्यो कोइ ॥ ३० ॥ पुनि कहि अस्थन स्थपद संकी-
रनौं निहारि ॥ गर्भित और प्रसिद्ध हत भंग क्र-
म निरधारि ॥ ३१ ॥ अक्रम अमत अपारथो
वाक्य दोष ए मानि ॥ कवि चिंतामनि कहत
हे सज्जन के मन आनि ॥ ३२ ॥ प्रति कूला छर
को लछन ॥ दोहा ॥ अछर रस अनकूल नहि प-

ति कूलाहर सोइ ॥ कहत विवुध हत वृत्ति सो
छंदो भंगहि जोइ ॥ ३३ ॥ कट्टत वट्ट विघट्ट कु-
च घुट्टियघुट्टिय मार ॥ दंपत जुट्टिय लुट्टि सुख
छुट्टिय पट्टिय वार ॥ ३४ ॥ हत वृत्त ॥ दोहा ॥
रूप काम अभिराम तन अमल कमल दल नै-
न ॥ चले जात हो वा गली देत हंसत सखि सै-
न ॥ ३५ ॥ जोइ कर सजा छंदमे भलो जो उत्तम
होइ ॥ जो जाको प्रति कूलहै योंहु कहत स-
व कोइ ॥ ३६ ॥ चौपाई ॥ धरनी धसि पातालहि
पैठी ॥ धूरि इंद्रके महलन वैठी ॥ सेस नाग फ-
न सहस नवायो ॥ साजि सैन जव भूपति धा-
यो ॥ दोहा ॥ सर्व लछनन कर सहित सुनतन
नीको होइ ॥ यहो कहत हत वृत्त हैं जे सज्जन
कवि लोइ ॥ ३८ ॥ कमीन लागत चंदहे जामे
कांति कमीन ॥ ऐसो सुंदर वदन है वचन स-
मान अमीन ॥ ३९ ॥ न्यूनपदको लछन ॥ *
दोहा ॥ जहां वरन के करत है न्यून्या दिक प-
द होइ ॥ चिंता मनि कविकहतहे न्यूना धि-
क पद सोइ ॥ ४० ॥ वाकी अद्भुत रीति है कैयों
काहू सो जानि ॥ है सव वपु लनि लख्यो परत
जहां तहां है आनि ॥ ४१ ॥ कनक लता दामिनि

कि धौ आपुहि चंपा दाम॥एक सखी वह कामि
नी दूजी मन मथ बाम॥५२॥कथित पद॥*
दोहा॥जो पद दीन्हो है कधू वहै बहुरि दैजाइ
होत कथित पद है तहां कवीसन सुनहु बनाइ
५३॥कोमल मुख वह कमल सों तिरछ नैन सि
त स्याम॥गोरी कोमल देह है सोहत ललित
विलास॥५४॥प्रकातिप्रकर्षन लछन॥दोहा॥
जो आखर अरु सधि है तैसे जो निव हैन॥चिंता
मनि कवि कहत है प्रकतकर्ष सो ऐन॥५५
चाख चूनरी चपल अष चौका चम कन चार
चतुर चंद वदनी चली गर पहिरि कै हार॥५६
समाप्त पुनरक्ति॥दोहा॥जह वाक्यार्थ समाप्तकै
है बहुरि विसेषे देइ॥सो समाप्त पुनरक्ति है
जानि सुजाने लेइ॥५७॥बडे बार लोइन बडे
कीनो दरि वर नारि॥दक्षिण दिसि मे सावरी
वह सोहति सुकुमारि॥५८॥जहं जो उत्तर अरध
पद पूरब अन्वित होइ॥अर्धांतर गत पद सुयों
दूषित भाषा कोइ॥५९॥जामें अन्वय बनत
नाहिं सो अमत अत जोग॥चिंता मनि कवि
कहत यों सुकवि न दवै प्रयोग॥६०॥वे मन
मोहन लखे ऐसी सकल की माहि॥जो वह

जोरी सखि मिले वैन नैन सिय राहि॥५२॥ * अनुक्त कथनीय॥दोहा॥जो अवस्य कथनी-यसो कहोजहां नहिं होय॥दूत अनुक्त क-थनीय यह दोष कहत है कोइ॥५३॥जो पा-ई नहि मैनिका पाई काम वधून॥सो बहु ला-ल लद्द निरखि तकत लषत मदून॥५४॥ज-हां होइ संकीर्ण पद सो संकीरण वखानि॥ एक वाक्य मे और जह सो गर्भित पहि चा-नि॥५५॥पीजे पान नखाइ ये पानी वोलो पानि॥पिय हिय ठाऊं रावरे सुखहि मिला-ऊं आनि॥५६॥गर्भित॥दोहा॥औरन के अ-पकार ते खलसों काहू मिलाप॥तुम्हहि सि-खाऊं करहु जनि कि ये परम संताप॥५७॥ जो पद जा थल चाहिये सो नहि जाथल होइ दूषन अस्था नस्थ पद कहत सुकबि जन कोइ॥५८॥तू कत लखत मदून यह नकार अस्थानस्थ पद॥दो॰॥ज्यो पद अस्थानस्थ पद योंही अस्थ समास॥जोन ब्रुङ्ककी उक्ति मै कविकी उक्ति प्रकास॥५९॥मेरे आगम मा-नयो कहि यत पिक ध्वनि वंत॥ अलि हुंकि-त हंकित कलित आयो अली वसंत॥६०॥

प्रसिद्ध हत बोलः॥दोहा॥धुनि रव आदि प्रसि
द्ध जहं तहां दीजिये सोइ॥ओर भांति बोरीभि
ये तौ प्रसिद्ध हत होइ॥६१॥वा मृग नैनी को
सुनत नूपुर को निध्वान॥पंच वान अभि
मान सों ताने बान कमान॥६२॥पूर्व मनुवा
देन प्रत्यूय मानो दयःप्रवा दन्यत्र विधितः।
प्रत्युच्य मान प्रतिनिर्देस्य॥छंद॥॥उद्देस्यप्रति
निर्देस थल मे प्रथमही जो दीजिये॥पुनिजा
ब कहि कहिवे परे तौ वहै तापल लीजिये॥
जो कथित पद की भांति ते पर्जाय पद तित
दीजिये॥तौ होइ प्रक्रम भंग दोषसु सत्य जा
न पती जिये॥६३॥अरुन उदित रवि होतहै
अस्तैं अथवत आइ॥संपति बिपति वडेन
की एकै क्रम लखि जाइ॥६४॥अरुन उदै रवि
करतहै अस्तै अथवत आइ॥ऐसो जो कहि
ये सुतौ प्रक्रम भंगहै जाइ॥६५॥जिन विरंच
जगती रची तिन न रची तू वाम॥औरलटक
औरे छवनि औरे दुति अभि राम॥६६॥*
और लटक आनै छवनि ऐसोन कहिये सोइ
नमत दूसरो अर्थ जहं अमत परा रथ होइ
चिंता मनि कवि कवित है रचेन सत कविको

यहे गहे पर दार है पर पीतमे सुहाइ॥ सब थल देख्यो मेन है ऐसो सती सुभाइ॥६८॥ वाक्य दोष॥ अर्थ दोषगरान॥ अर्थ अपुष्ट कष्ट पुनि व्याहत अरुपुनरुक्त॥ अक्रमौ संसयित पुनि जोन होत संयुक्त॥६९॥ और प्रसिद्ध विरुद्ध पुनि अनवी कृत मन गन्य॥ नेम अनेम विहीन पुनि बिन विशेष सामान्य॥७०॥ साकी ओ पद मुक्ति पुनि सह चर भिन्न विचारि॥ कहिय प्रकास विरुद्ध पुनि चिंता मनि निर धारि॥७१॥ त्यक्त पुनः स्वीकृत कह्योपुनिअस्लील बखानि॥ अर्थ दोष याभांतिके अपने मन मे आनि॥७२॥ अति बिस्तीरन समुद को पार उतरि किनि जाइ॥ यरि नर वर तुव गुन कथन कियो न जाइ बनाइ॥७३॥ कष्टार्थ॥ दोहा॥ कारन दियेहै सबके याहित जात विहात॥ तेग त्यागते मिटत नहि सांची बोलत बात॥७४॥ व्याहत॥ दोहा॥ सुथिन जहां निज कथन की सो व्याहतसुजान जानि। जित कहिये प्रथम सोई पुनि उप मान ७५ तेरे सम दोनो तकौ चन्द भावी यह चंद॥ कमल नयन तो नयन लखि कमला गति

हुति मंद ॥ ७६ ॥ पुन रुक्तार्थ ॥ दोहा ॥ काहू को
वर नन करत होइ विरुद्ध प्रकास ॥ ताको सोई
कहत है जाको मन पर गास ॥ ७७ ॥ मोहि
चहत दिल्ली सनहि रत तर वार नरेस ॥ क-
हत न क्षितिको समुद सो कित मानो सं-
देस ॥ ७८ ॥ जामे विधि अरु वाद को कथन
न नीको होइ विध्यनु वाद अयुक्त सो कह
त विबुध सब कोइ ॥ ७९ ॥ च्यो आयो परदे
सते सुख समूह अधि कात ॥ अति पुञ्जरवे
धित सखी सोवेगी तम प्रात ॥ ८० ॥ उप संह
त करि वाक्य को वहुरि करै अभि धान ॥
त्यक्त पुनः स्वीकृत तहां कविजन करत बखा
न ॥ ८१ ॥ कालि अली नंद लाल को रूप नि-
रखि अभि राम ॥ होंमोही सुधिबुधि गई मा
रत तीर न काम ॥ ८२ ॥ अश्लील ॥ दोहा ॥ है
कोहर मारो चहत छिद्र तके जो कोइ ॥ २
ताको हर वर पातज्यो उन्नत है नहि होइ
८३ ॥ रस दोष ॥ दोहा ॥ संचारी थाई रसोश
ब्द कथित जो होइ ॥ अरु अन भावकीभावते
व्यक्त काष्टते होइ ॥ ८४ ॥ प्रतिकूलवि भावा
दि को गहन आन सम उक्ति ॥ मुख को अ-

नु संधान नहि अंगहि की बहु जुक्ति॥८५
प्रक्रितिनि को पुनि विपर्जय अनु मित
बरनन जानि॥चिंता मनि कवि कहत है
रस दोष बखानि॥८६॥शब्द कथित सं-
चारी अस्थाई रस॥दोहा॥संका दुरजन
के हिये याके हिये उछाह॥अरिन मारा-
हत वीर रस अनुरागी नरनाह॥८७॥*
विभाव की क्लेसते व्यक्ति॥वाकी सब सु-
धि बुधि गई बाहिन कहुं बिस्राम॥निसि
बासर रोवति रहति कछून भावे काम ८८
प्रति कूलोक्ति॥दोहा॥*॥प्यारी हंसि के
बात कहि डारि गरे मे बाहि॥रोस छोड म-
ति मान करि जोबन घन की छाहि॥८८
अतिशयोक्ति॥दोहा॥भली भई बहुते अ-
ली लागी घरमे आगि॥मेरे कर की गागरी
लीन्ही साजन मागि॥९०॥मुख्या नन सं-
धान॥दोहा॥मै चौपर खेलन लगी निसा
समै मे आजु॥बैठी सखी समाज मै भूलि
गए ब्रजराज॥९२॥अंगको बिस्तार॥दोहा
कालिंदी सुंदर नदी सुंदर पुलिन सरूप॥
वृंदावन घन छांह तकि कुंजनि रूप अन

प॥८२॥प्रकृति विपर्यया:॥॥दोहा॥निरख
त नैन सहस्र सों सुंदरता सवि सेष॥रंभा
की मघवा दुखित लागत होत निमेष ८३
अनु चित वर्ननं॥दोहा॥विरहिनि नैननिमे
सुद्रुमि काजर लसै नवीन॥विन देखे पियके
रहे मनो स्याम मुख कीन॥कहूं कर्न अवतंस
इत यादि पदन को दान॥संनिधान दूत्यादि-
के वोध हेत सहान॥८५॥जहां हेत पर सिद्ध
है तहं नरहै तन दोख॥सव अदुष्ट अनु कार
न मे इनते नही अतोख॥८६॥चिंता मनि
गोपाल को वर्नन कीरे वनाइ॥वक्ता दिकनी
चिंत्यते दोषौ गुन है जाइ॥८७॥इति श्री
चिंता मनि विरचिते कवि कुल कल्प तरौ
दोष निरूपणंनाम चतुर्थ प्रकरणं॥ * ॥४
दोहा॥पद वाच्यक अरु लाक्षणीक व्यंजक
त्रिविधि वखान॥वाच्य लक्ष अरु व्यंग पुनि
अर्थौ तीनि प्रमान॥१॥विन अंतर जो शब्द
कर जाको होत वखान॥सो वाचक पद होत-
है कहत सुकवि परमान॥२॥लक्षक ताको
कहत जो होत लक्षणा जुक्त॥चिंता मनि क-
वि कहत है यह प्रमान है उक्त॥३॥मुख्या र-

यके बाध अरु जोग लछना होइ ॥ होत प्र-
योजन पाइकै काहू हठि हित सोइ ॥ ४ ॥ गंगा
घोषक है तहां होत तीर कौ बोध ॥ सीतल ता
रूप विज्ञ ता तहां प्रयोजन सोध ॥ ५ ॥ तहां वि-
जना वृत्ति यह होत लछना मूल ॥ जहां प्रयो-
जन जानिये कहत ग्रंथ अनुकूल ॥ ६ ॥ ※
जहं अभिधा अरु लछना अति कछु भि-
न्न प्रकार ॥ होइ अर्थ कौ बोध तहं कवि ब्यं-
जक ब्यापार ॥ ७ ॥ शब्द अनेकारथ बरनि अ-
ति कछु भिन्न प्रकार ॥ होइ संजोगा दिका
गनन इत अवाच्य कौ सार ॥ ८ ॥ तहां ब्यं-
ना वृत्ति इत यह मं मट तत्व है ॥ चिंतामनिनि
ज ग्रन्थमें कवि इत बरनन आनि ॥ ९ ॥ संजोगा
दिक जोगनो प्रथम एकसों जोग ॥ चिंता मनि का-
वि कहत इत बरनो बहुरि विजोग ॥ १० ॥ अर्थो
प्रकरन चिन्ह पुनि ॥ दोहा ॥ ※ ॥ आनस इवृत्त
चिन्ह पुनि आन शब्द कल संक ॥ सामर्थो औ-
चित्य अरु देस समै पर संग ॥ ११ ॥ और आभरन
आदि ते शक्ति नियं त्रित रीति ॥ एक
अर्थ मैं औरकौ ब्यंजन ते पर तीति ॥ १२ ॥
संत नना नूल हरि [illegible]

राम लषण दसरथ तनय माह न्धते जानि
१३॥रामार्जुन लिन दुहुन की परस राम सू
त मानि॥सहस बाहु अरु भनि कहै द्वो
विरोधि त जानि॥१४॥मकर ध्वज दृहि चि
न्हते गनत कंदरप लेखि॥देव पुरारि हु आ
नपर जोग हदू को पेखि॥१५॥मधु मत्या को
दू लखि तु राज सामर्थ उर आनि॥रह्या संहरि
सनमुषता औचित्यौ पहिचानि॥१६॥दूत
राजत परसे रवैरे यह रज धानी देस॥चिंता
मनि कवि जानि ये तहां नृपति को वेस १७
रवै दिन निसि अग्न रवि चिन्ह भानते
लेखि॥दूतनी बालक वड भयो यह अभि
न्हते पेखि॥१८॥व्यंजन व्यंजन जुक्त पर
विन स्रुता को अर्थ॥वाच्या वाच्या लक्ष
निको कहि लक्ष समर्थ॥१९॥जो अर्थी
व्यंजक बरनि सब्द संग ते होइ॥व्यंग्य लह
ना मूल यह तहां सुनौ कवि कोइ॥२०॥*
लक्षना मूल व्यंग को उदा हरन॥दोहा॥ भ
ई अनूपम चोपतनु प्रफु लित नैननि चैन
अंकुस है फेर्यो हियो वाला पन ते मैन॥
२१॥कवित्त॥सैन नवे आगमन होसे मकार

धज के नीकी लगी लगन सखी की रस बतियां चिंता मनि पल पल पर प्यार चढ़ौ उपज्यौ वियोग व्यापी बिथा दिन रतियां ॥ मोद ही-ते जहां तहां पियको देषन लागी हंसि खे-लि बोलि तहां लह्यौ है सुख तियां ॥ याही समै आये वैदु सांचे आपु आपुही ते नवला लपकु लागी लालन की छतियां ॥ २३ ॥ अ-र्थ अनेकार्थ पद व्यंग ॥ दोहा ॥ सारदी है सखि यां सबै अबही भई अचेत ॥ मैं मनु दीन्हो आपनो दै दूत पाउ नदेत ॥ २३ ॥ अर्थ व्यंजक ॥ वर्तिष्य मान सुरति गोपना ॥ कवित्त ॥ ग्रीष म मै बापी कूप सर वर सूखे सब जल नही भिरनाते आवतु नगरमै ॥ जहां जात आवत लगत कांट भारन के होन जैहौ हौंही पांनी पीवति हौं घरमै ॥ अति दूर हीते भरी गागरि लै आवति हौं छूटत पसीना कांपै अंग थर थर मै ॥ चाहति हौं पुनि लालनन्दकुंवेन मोपै जाउंगी तौ अकुंगी भरि दुप हरमै ॥ २४ ॥ इति श्री चिंतामनि विरचिते कविकुलकल्पतरौ व्यंग्यार्थ निरूपणं नाम पंचमं प्रकरणं ५ दोहा ॥ उत्तम मध्यम अधम ए त्रिविध कवि-

न पहिचानि ॥ तिनको लक्षण उदाहरन देत लेहु मन आनि ॥ १ ॥ वाक अर्थते कहत मनि व्यंग अधिक जहं होइ ॥ सो जन उत्तम कवित यह जानत कवि कोइ ॥ २ ॥ उत्तम व्यंग प्रधान गन अप्रधानु गन व्यंग ॥ सो मध्यम पुनि अधम गन त्रिविध चित्र अव्यंग ॥ ३ ॥ वाच्य लक्षते भिन्न जे कवितु सुनैते अर्थ भासैते सब व्यंग कहि वरनत सुकवि समर्थ ॥ ४ ॥ उत्तम काव्यको उदाहरन ॥ दोहा ॥ सखि निसि तैं पतिसौं जिती रति रन मदन प्रसाद ॥ सुंदरि अब सुधि सज्यो काल किंकिनी निनाद ५ ॥ कवित्त ॥ मोंको मधु पान सुधि काहु वैन रही मन भाइ सौ अंबर स्याम बोढो चितबा दूके ॥ चित्त मनि दोहे लाल लोचन ललित सोहे लाल भाप दोहे एल जोहैं अल साइके हमसों घरी कौ ग एते कहि आवत सो दीन्हो मन भावन रस भोर आइके ॥ रहो नवल नायका रतिकनिसि चांदनी की ऐसे हाल आइ ख्याल बाल को सुदाय कै ॥ ६ ॥ * ॥ दोहा ॥ एक विवक्षित वाच्य ध्वनि एकु विवक्षित वाच्य ॥ द्विविधि उत्तम काव्य यह मत क-

वि पंडित राच्य ॥ ७ ॥ वक्ता की इच्छा न जहं वाच्य अर्थमैं होइ ॥ सो अवि वक्षितवाच्य है कहत सकलकबि सोइ ॥ ८ ॥ अत्यंततिरस्कृत वाच्य अर्थान्तर संक्रमित वाच्य द्विविध मूल ध्वनि बरनतें अविवक्षित वाच्यं ॥ अत्यंत तिरस्कृत वाच्य को उदाहरन ॥ दोहा ॥ सज्जन ता प्रति कही कियो बहुत उपकार ॥ ऐसो काज करो सदा जीवो बर्ष हजार ॥ ९ ॥ अर्थान्तर संक्रमित वाच्य ॥ दोहा ॥ तोसों पर हम कहत हैं खल संगति मति जाहि ॥ कीजे काम बिचारि कै भलो आपनो चाहि ॥ १० ॥ वाच्य अर्थ ध्रुवि वर्तिता वाच्य द्विविध पहिचानि ॥ लक्ष्य अलक्ष्य क्रमाति सों व्यंग्य सुमन मैं आनि ॥ ११ ॥ पूर्ति शब्दाकृत लक्ष्य क्रम व्यंग्य सुद्विविध बखानि ॥ शब्द अर्थ जुग सक्ति भव इमि ध्वनि भेद सुजानि ॥ १२ ॥ शब्द सक्ति उद भव व्यंग ॥ ॐ दोहा ॥ अलंकार की वस्तु जहं व्यक्त शब्दते होइ ॥ शब्द सक्ति उदभवसु वह बरनत हैं कवि कोइ ॥ १३ ॥ शब्द सक्ति मूल व्यंजना कार को उदाहरन ॥ दोहा ॥ मधु मोदित

अलि मंजरी मंजु मौलिछबि जाल॥ पद्म राग पल्लव ललित राजत लाल रसाल १५ इहां नायका अरु आम्रकी उपमा नीपजे यतें उपमा लंकार व्यंग्य है॥ शब्दशक्तिमूल व्यंग्य वस्तु को उदाहरन॥ दोहा॥ चौपर खेलत है कहा जुगलै जीति सुभाय॥ लाल जातहैं हाथतें अरी चुकै यह दाय १६। इहां शब्दशक्ति सों नायका अनुनय कीनि है है औलन चलियह व्यंग्य॥ दोहा॥ ब्रेकु पद गत वाक्य गत जो गनि चारि प्रकार॥ अर्थ शक्ति भव भेदको करत विबुध विस्तार॥१७॥ अर्थशक्ति उद्भव ध्वनि भेद॥ दोहा॥ स्वत संभवी सुकवि की प्रौढ उक्ति पर सिद्धि॥ कविनि बद्ध वक्ता जुकी प्रौढ उक्ति पर सिद्धि॥१८॥ त्रिविधि अर्थ व्यंजकाछविधि वस्तु अलंकित रूप॥ त्योंहीं व्यंग्यछ भेदसों द्वादस भेद अनूप॥१९॥ मेरी बालनि आजु उन दियो कान छबिखानि। सुनत तिहारो नाम कै मुख कानी मृदुबानि २०॥ इहां नाम श्रवनां सर मुख कानि रूप वस्तु कारि तुम्हे वह चहति है मिलेगी वह वस्तु॥

व्यंग्य होतिहै काहू देखेकान्ह काहू कह्यो का-
न्ह कैसोकान्ह कान्ह कान्ह कैरे यों लगन
लगि काईसों॥ वाही कै विकल तुम्हे कछू
पर वाहि नाही भलेहो गुपाल जू निपट नि
ठुराईसों॥ चिंतामति कहै तुम कैंहो निह
चिंत वैठ कहा जाइ कहौगी विरह ताप तई-
सों॥ वाकी यह दशा भई तुमतो नसुधि लई
जानि करी दई कोऊ नेहु निरदई सों॥ २१ ॥
यह ऐसी अनुरागवती निठुर जे तुम तिनमे
असत्त भई याते विषमालंकार व्यंग्यहै॥
कवित्त॥ तुही धन तुहीप्रान तोही मै हरिको मनु ते
रेही रिझाइवेकी रीति मै प्रवीन हैं॥ चिंता
मनि चिंतानित तेरी रहैतेरिही विरह षिन
षिन होत षीनहैं॥ टीका चुनकी जैठकुराय
नि कैतै कान्ह छोड़ दीनै तेरे वन ठाकुर आधीन
हैं॥ तेहै पंथी नैन अरविंदन की इंदिरा औपी-
वो नैन तेरे तनु पानिपके मीनहैं॥ २२॥ इहां प
रं:परित रूपक कारि औरि नायकाकी और अव
लेकिवो नाही ताते और अलंकार नाहींवस्तु
व्यंग्य है॥ आवति हिग छविनि तनु हंसति दृगं
लनिहारि परकायल मनिरूप मरछकी छवी-

ली नारि ॥ ५३ ॥ दुहुंस्वभाव उनिकारि मोपर स-
कामहै इहवस्तुध्वनित होतिहै ॥ स्वतःसंभवी अ-
लंकारकरि अलंकारको उदाहरण। दो॰ कोवशऐ उनदु-
हुनको कौन धराये धीर ॥ दोऊ प्यासे जेठके
दोऊ सीरे नीर ॥ ५४ ॥ दुहुं नायका अरु नाय
का को अरस्परसे जेठ मास पिपासित अरु जेठ
मासको सीतल जल दुन सौम्य भेदन रूप
नन रूप अलंकार करि दोऊ परस्पर निर
खि प्रेम पावैहैं याते समालंकारध्वनित होत
है ॥ कवित्त ॥ कर कास गिरि कोमल कमल
करते उतारि धरि लाल मेरो मनु अकुलात
है जीवैगो सजीवै जो मरैगो वहु मरै मोसो
कैसे निरलज बालक कौ छेम देख्यौ जातहै
मेरी कही करनातौ निकसि मरौंगी कहि-
चली जहां कारिका मिलान कौ निपातहै ॥
जहां कोऊ गोपी गोप गन संग नंद रानी लहां
रलकी वकी अचल अधि कातहै ॥ ५५ ॥ *
कवित्त ॥ दोऊ जन दुहूकी अनूप रूप निर
खत पावत कहूं छवि सागर को छोरहैं ॥ चिं
तामनि केलि के कलानि के विलासनिसोंरे
ऊ जने दोहुन के चितन के चोरहैं ॥ दोऊ ज-

ने मंद मुसक्यानि सुधाबरसत दोऊ जने
के मोद मद छुइ बोरहें॥सीता जूके नैनराम
चंद्रके चकोर राम चंद्र नैन सीता मुख चंद्र
के चकोरहैं॥२६॥राम चंद्र के नेत्र चकोर
सीताकौ मुख चंद्र राम चंद्र मुख सीता के ने
त्र चकोर यह पर रूप कारे दोऊ सम प्रेम
युक्त हैं ताते समा कार बंध्यहै॥इहां कवि
की वस्तु कारि अपने की अर्थ काइ वीवी
को वरनन सी प्री कृस्न की दसामें सब सा
मर्थ्य है यह अर्थ द्योतितहै॥कवित्तबाजे ज
व बाजे महा मधुर नगवीच नागरीनि सिलल
लकानि अकुलाईहै॥चिंता मनि कहे अति
परम ललित रूप अटा पर दूलह बिलोकन
को आईहै पैंजनी महलनि मनि मेखलानि
की महा मनि नूपुरन की निनादनकी छाईहै
पहिले उज्यारी तन भूषन मयूषनकी पाछे
ते मयंक मुखी झांकन आईहै॥२७॥बुहां
चंद्र पर घरीषा दिकाजे ल्हादक तेजस पदा
र्थ तिनके आगमनिते पहिले ही जैसे दीपने
लातिहैं तैसे उनके मुखादि अंगन की अंक र
लन की दीप्ति फैलतिहै पहिले उज्यारी तन

भूषन मयूर के पीछेते मयंक मुखी भारी ख
नि आई है॥ यह कवि प्रौढोक्तिशब्द वस्तुका
रि इनसों चंद प्रदीपा दिक तिनसों उपमान-
उपमेय भावहै याते उपमालंकार व्यंग्यहै
२८॥ कवित्त॥ परम अपार भवसागरउतको एका
एक नामकी सकति उमहतिहै॥ चिंतामनि
कहै राम भगति अगिनि तेरी कोटि कोटि मह
पाप पुंजनि दहति है॥ वचन अगोचर जोम
हि मति हारी ताहि कहि कोसकतजाहि श्रुतो
ना कहतिहै॥ आपनी साहिबी सब देते निजु से
वकनि जु सेवकनि साहिबी अनंतहै सो दे सि-
ये रहतिहै॥ २९॥ इहां कवि प्रौढोक्ति॥ सिद्धिस
ता और प्रभुते औदार्य अ धिका वरनन में
व्यतिरेका लंकार परमे श्वर्य संपन्न रामसे रा
मै और नाही याते अनन्वया लंकार व्यंग्य है। क॰
मन्नकी आचनि असंख्य परि जोधा जारे प्र-
गटी ये बिक्रम की रचना बिशालसी॥ चिंताम-
नि कहै खड़्ग परसु दंड बर व्योम छिति भरि०
तजि आगार गन लालसी॥ जरा सिंधु नृप च
तुरंग चमू अगनित निकरी रुधिर धारि तेज
अगिन ज्वालासी कान्ह धनु मंडलते कढ़ी सर

पांति घले चंड कार मंडलते चंड कार मालसी॥
२९॥ इहां कवि प्रोढोक्ति उपमा लंकारके घले
कालिका सूर्य्य मंडल ताते निकारि कि रवि
मंडल जैसे जगति को संहार करत है ऐसे
मंडलित श्रीरामके धनुषते सर इंदनिकारि
करि जरा सिंधकी सेनाको घले कीन्हो यह
वस्तु द्योतित होतिहै कविनिबद्ध वक्ता प्रोढो
क्ति सिद्ध वस्तुकरि॥ वस्तु व्यंग्य धुनिको उदा
हरन॥ दोहा॥ मै समुझो यह आजुही है अंत
क बलवंत॥ मोसुत मारो इंद्र जित जितिक-
ल भरन अनंत॥ ३०॥ अंतक बलवंत है यह
कथन रूप वस्तु करि रावन के अंत काहू को
भय नाही यह वस्तु द्योतित होतिहै॥ कविनि
बद्ध प्रोढोक्ति सिद्ध वस्तुकरि॥ अलंकार व्यंग
ध्वनिको उदाहरन॥ कवित्त॥ जबते आपुन र
ल्याये जानुकी लंका बीच भये ताही दिनते भ
यंकर निमित्तहैं॥ परी सेना समुद के तटमे अ
संख्य कपि रीछनके कटक बढत उत्त नित्त-
है॥ जोलों राम लखन तरवे तेज बानन सों
भये लंका पुरीके न भट भित्त भित्तहैं॥
तोलों रघुनाथ दिग जानुकी पठाइ दीजे ऐसे

मेरे उत्तम विचार होत चित्तहै॥३१॥इहां क-
वि प्रौढोक्ति सिद्ध जो अलंकार असंबंध सेनाको
बढ़िबो सो तुम्हारे विनाशको उपस्थित भ-
योहै जो सीता रामके निकट पठाइ देउ तोवं
शका विनासु नहोइ॥कबित्त॥वारि वारिबेको टू-
ज बोले ब्रज धर प्रलय वारिद पठाए ब्रथ ताहि
समु भाइहो॥चिंता मनि आगुरी के वर गिर
धरराषि गोपी गोप गैयन को गनको बचाइ
हो॥ * ॥दूरके गुमान बरषा को महा मेघ
न को हालो महा मघवा को रोदन कराइहो
वाही के हजार रुचा लोचन के आसुन सोसुं
दर पुरंदर के मंदिर बहाइहो॥३२॥इहां पर-
स पर कार्य कारि बोसो अन्यो न्या लंकार क-
हावै कार्य वह सनी होइ वो॥असत होइ इं
दू असत कार्ज कीन्हो ब्रजको घरन को विना
स करिबो प्रलैकालीन मेघन को बरषा को गु-
मान जैसे दूरि होइ ऐसो इंद्रके सहस्र नेत्र
नके आंसू बरसाइ की मंदिर दहाइ ता बात
को बदलो हो कविनि बद्ध बक्ता प्रौढोक्ति २
सिद्ध अन्योन्या लंकार कारि आपनो परिपू
रो रुवर्य अरु ब्रजको समा धान यह विधि

वस्तु अभि व्यक्त होतिहै ॥ ३३ ॥ कवि निबद्ध
वक्ता प्रौढोक्ति सिद्ध अलंकार ध्वनि को उ
दा हरन ॥ कवित्त ॥ अम ल अमोल मुक्ता
हलको हार तें सोंहसनि अमोल मुक्ता हल
के हारसी ॥ चिंता मनि चारु चीर खुल्यो छी
र फेन सम सरद जुन्हे या सुख सुखमा को
सारसी ॥ जगत हमारी पर रीभि है हमारी प्या
री राधा रिभवार सारदा को अवतारसी ॥
धवल पुलि न मध्य जमुना की धार ध-
सी दुरद रदन पर पर जनु आरसी ॥ ३४ ॥ दू
हां गन पर कृष्ण श्री हास्य को देखि प्रनय को
प कारि अप्रसन्न हृदय श्री राधा को समु-
भि श्रीहास्य उनको मन उदास को स्तुति
कीन्ही सरस्वती अवतार की साम्य है सा-
भिप्राय विशेषन कहे की प्यारी हमारी रा-
धा रिभवारि रीभिहै स्ववातें सुनि रीभि
वेकी उनमुख भई सोई उन जुक्ति कही
धवल पुलिन पर यमु ना की धार धसी
दुरद रदन पर पर मानो आरसी ॥ यह उत्प्रे
क्षा लंकार कह्यो प्रसाद को और हेतु कह्यो
ताते समाधि सुकर कार्य कारनां तर जो बात

यह समाध को लछन है ताते। श्री राधाजू प्र
सन्न भई अधर सुधा रसुधा प्रसाद दीन्हो
ताते अलंकार व्यंग्य है॥ यह स्वतः संभवी
को उदाहरन मै जानिवो॥ दूसरो कबित्त॥ उम
डि घुमडि घन अंबर अडंबर सौंवाहुं लग प्रले
घन घटा घोर घिरिहै॥ चिंता मनि कहै चि
त चिंता जिनि करो कोऊ कहालौं विचा
रै धौं विचारो इंद्र चिरिहै॥ एकाकी काहहै
कोटि धरा धर धरे रहौ जौलौं कोटि विधि-
की उपज फिरि फिरिहै॥ जानो जनि बड़े
पर मान भारी गिरिहै सोमेरे कर पर परसन है
न गिरिहै॥ २४॥ इहां परत द्रव्य पर मान
करि दिखायो यह विरोधा लंकार करि नंद
पुत्र जे आपु तिन कहा अघटन घटना प-
टी यत्व साधारन धर्म करि आपनो गर्गो
क्त नारायण साम्य व्यंजित करत भये हैं॥ दो॰
अर्थ शक्तिउद्भव अरथ बारह भेद विचा-
र॥ सोपद वाक्य प्रबंध गत छंति सभौ ति-
नि हारि॥ २५॥ सिद्ध कहत सब सकल फल
देत तुरंत ज्यौं नाम॥ व्यापक अरु गुन रूप
जसु धवल कियो श्रीराम॥ २६॥ इहां व्याप

क निर्गुन आत्म स्वरूप सों व्यापक धवल
जसु कीन्हो निर्गुनते सगुन कीन्हो यह वि
रोध करिये सो कार्य करिवो सामर्थ्य रामही
मे है और मे नाही ताते रामसे राम यह क-
वि निबंध वक्ता प्रौढोक्ति सिद्ध अलंकार क-
रि अलंकार व्यंग्य है ॥ पद गत संभवी वस्तु
करि वस्तु को उदा हरन ॥ दोहा ॥ लोग ज-
गत है काज पर धरत नामको नेम ॥ तुम
व कारि हरि साह जिका दीन बंधु सों प्रेम
३७॥ साहजिका दीन बंधु पदके अर्थ विना
प्रयोजन दीन बंधु हैं यह स्वतः संभवी व-
स्तु करि परमेश्वर परम दयाल हैं स्वतः संभवी
वस्तु द्योतित होत है ॥ प्रबंध सक्ति उद भव
को उदा हरन ॥ सवैया ॥ व्याकुल दौरि के
दोऊ जने उठले उत आइन जानकी रवी
दिव्य अमोलक लाल गयो गिरि आश्रम
भूमि अगू ठिकै लखी ॥ दुक्ख पयोधि अ-
गाध बह्यो गति दीन कछू रघुनाथ की पे-
खी ॥ मानो अरन्य भई अमरावति ऐसी
अरन्य की भांति विशेखी ॥ ३८ ॥ ❋ ॥ राम
कह्यो सुनु मीतकादंब जु तेरे तरे संग मे रे-

है बेली॥ तेले फूल रची जिनमाल गुले मौन मे
रिये कंठमे मेली॥ माल देहैगुमई पुलकी जिनकी
यह हास बिलास की केली॥ मोहि बताइ अ
बेली बिते वह पूरन इंदु मुखी अलबेली
३९॥ सवैया॥ बेलसे चारु उरोजन बेलीकेल
खी कहूं जाकी लगे रति चेटी॥ मीत असोक
बिलोकी कहूं जिनहे जग रूपकी रासि समे
टी॥ पीत दुकूल लसे पट भूषनश्री मिथिला
महि पालकी बेटी॥ सुंदर रूप धरे जनु दामि
नि राजत दामिनि दाम लपेटी॥ ५०॥ तैं मृग
देखी कहूं मृग लोचनी बोलि बिते अब जा
इ छपीहै॥ छाडि छबीली घने परिहासन
छाती बिछोह के ताप तपीहै॥ तैं नहि जान
त तेरे छुटे पलु तेरोरी जीवन सोह तपीहै॥ बो
लिते दूरिकै याको गुमान जो कोकिल कुंजन
मे जल पीहै॥ ५१॥ ऐ से सबै बनके द्रुम जं
मुन पूछत जानकी जीको पुकारे॥ व्याकु
लह्वै मुरझाइ गिरे उछले मनि नैनन नीर
की धारे॥ दुक्ख महो दधिकी लहरें जनु मुख
छा आवति जाति अपारे॥ लक्ष्मन के उपचा
रजगे मुख भाई को दीनन हारि निहारे ५२

मैली भई यह भांति दसा दूत रैन छपी जो अ
जौ नहि आई॥ राम जू ऐसे कह्यो कब लहै
न सीतजु ऐसी करी निठुराई॥ बाघन बीच
मृगी सी भई सु कहा मृग लोचनी आपदा
पाई॥ मैं जिनको अपराध कियो तिन बा
कस बंदन चोरि कै खाई॥ ५३॥ इहां दूसरे क
वित्तते अंत को कवित्त छोड़ौ प्रबंध कोऊ
न भाव व्यंग्यहै॥ उभय समुद्भव को उदाहर
न॥ दोहा॥ लसै हारके मध्य सखि सोभो ध
रे विसाल॥ हियेरार्विवो योग्यहै यह मनि
नायक लाल॥ ५४॥ इहां वाच्य अरु व्यंग्य
अर्थ के उपमा नो पमेय॥ भावते उपमा
लंकार व्यंग्यहै संलक्ष्य भेदयों कहे एक चा
लीस॥ दोहा॥ असं लक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि
आनि रसा दिक चित्त॥ दूतै आदि पहलक्ष्य
जे तिन्हे गनावत मित्त॥ ५५॥ प्रथम महि रस पु
नि भाव गनि तिनके पुनि आभास॥ भावसां
ति अरु भाव को उदै बखानि प्रकास॥ ५६॥ भा
वसंधि पुनि सबलता भावन की मन आनि॥
असंलक्ष्य क्रम व्यंग्य ध्वनि तिनके भेद बखा
नि॥ ५७॥ अर्थांतर रस स्वर रूप निरूपनं॥ *

गनि विभाव अनु भाव अरु संचारी न मिला
इ॥ तित थाई है भावजो सोरस रूप गनाइ
४८॥ काहुक यथा नाम अधिक यह तीन
हु को नाम कोइ॥ व्यंजन कोल लयो परे
तो अलख नाम होइ॥४९॥ भाव लक्षन॥
दोहा॥ मन विकार कहि भावसों व रनवास
नारूप॥ विविध मंघ करता कहत ताको रू
प अनूप॥५०॥ जो नहि जाति विजाति सों
होइ निरस व्रत रूप॥ जव लग रस तव ल
ग सुथिर थाई भाव अनूप॥५१॥ काव्यो-
दित रामादि सुख दुख ध्वन भव जात॥ मन
विकार संचारि तजि यह थाई थिर वात॥
पावे ल्यावे आपने रूपहि और अभेद॥ जो
विरुद्ध हू भाव नहि रहि विछेपक भेद॥
५४॥ सो थाई है समुद सो जव लगि रस आ
स्वाद॥ तव लगि यह वह रहत है जो थाई अ
वि वाद॥५५॥ प्रथम महि रति अरु हास पु
नि वहुरि सोक गन क्रोध॥ पुनि उत साह
जुगुप्स पुनि विस्मय सम वर वोध॥५६॥
यह थाई नव भेद जो ताको जु है निदान॥
कारज सह कारी जगत कवि तामें कहि आन

५७॥मनि विभाव अनु भाव पुनि संचारीय
ह नाम॥ विभाव नादि अवलोकि कै व्यापा
रन अभि राम ॥५८॥ तिन तिहुको अवलो-
किकै करि व्यापार गनाइ॥ विभावना अनु
भावना संचार ना बनाइ॥५९॥सब जन सा
धारन त्रिविध व्यापारन सो तीन॥ सहृद
य हिय थिर भावको व्यंजन धरम नवीन॥
६०॥साधारन व्यापार बल सब साधारन हो-
इ॥ नियत प्रमातहि मे यदपि तहां अपर मि
त होइ॥६१॥महा नंद उल्लास वह सुहाती
सेवत कोइ॥ सज्जन सुखद जु ग्रंथ मे रस
नि रूपना सोइ॥६२॥रत्या दिक के हेतु जेवा
ज और रस च्यारि॥ जगमे तेई तवत मे आ
न नाम निर धारि॥६३॥ विभाव नादि को
लौकिक व्यापारानि सुमित्त॥ते विभाव अनुभाव अरु
संचारी धरि चित्त॥६४॥साधारन व्यापार
सों जग साधारन जानि॥ते विभाव अनुभा
व अरु पुनि संचारि बखानि॥६५॥ थाई सा
माय है कहिय बसत वासना रूप॥ व्यक्त वि-
भवा दिकनि मिलि रसहै लसत अनूप ६६
प्रथम कहत शृंगार के विभा वादि इत आ-

नि॥आगे लिखे सबन के लीहिहौं लिखे जा-
नि॥६७॥याद्रहेतु जग मध्य जो कवित म-
ध्य सुचि भाव॥आलंबन उद्दीप सो द्विवि-
ध प्रसिद्ध मनाव॥६८॥नायका ल॰॥दोहा॥
आलंबन शृंगार को तिय नायका बखानि
कालीन प्रवीन बिला लिखी सुंदर ताकी खा-
नि॥६९॥कवित्त॥वदन मैं विधि कांति गो-
री की नजानी जाति गोरे गात दोरी तारि को
सरि के रंगकी॥चिंतामनि कहै चारु चंद्रिका
सी हासी लसै निसि नखतावली मुक्त पां-
ति मंग की॥मानौ आरस बुंदलाल बिंब परबि-
लसतु अधर की आभामुक्ता हल के सं-
गकी॥पग परको लंग अंगन अनूपजोय
अंगन मे ठाढ़ी मानौ अंगना अनंग की७०
दोहा॥दिव्य अदिव्य कहै सुकवि दिव्या दि-
व्य विचारि॥त्रिविध नायका जगत मैं ग्रं-
थन बहुत निहारि॥७१॥दिव्य देव तिय वर्नि-
ये नारि अदिव्य बखानि॥अमर नारि भुव
भव तरी दिव्या दिव्य सुजानि॥७२॥नखते
दिव्य तिया बरन सिखते विबुध अदिव्य॥
नखते सिखते वर्निये जो तिय दिव्या दिव्य७३

ह्हांनख सिख वर्नन जानवी ॥ दोहा ॥ प्रथम २
सुकीया नायका पुनि परकीया जानि ॥ पुनि
सामान्या समुझिये यों कवि लसत बखानि ॥
७४ ॥ स्वकीया लछन ॥ दोहा ॥ जो अपनेही पुरु
षमे प्रीतवंत निरधारि ॥ कहतस्वकीया ना
यका सज्जन सुकवि विचारि ॥ ७५ ॥ सील सु-
धाई लाज जुत गुरजन सुकवि विचारि ॥ प्री-
तम को चित हरिसो कही स्वकीया नारि ७६
कवित्त ॥ चिंता मनि सखी कोऊ सीख देति
कहै जद समता को जानिहो पीतम सो जायसौं
जीवको वारने वाहि वरज्यो चहै लजाइ वाहि
पैन सखी काहू सह चरी तियासौं ॥ गुरजन २
संभर सकाल आचरन वाको वरनत होत २
नाह चाहिय सौं ॥ पीउ जानै गुरजन हूमे नवा
ल जानै गुरजन जानै कहा वोलि जानै पिय-
सौं ॥ स्वीया भेद ॥ दोहा ॥ मुग्धा मध्या प्रगलभा
तीन भेद निरधारि ॥ सुभग स्वकीया नारि को
सत कवि ग्रंथ विचारि ॥ ७७ ॥ जाके जोवन अं-
कुरित सोमुग्धा वर नारि ॥ दुहु वहि क्रम सं-
धिमे नव वय संधिनिहारि ॥ ७८ ॥ उवन चह
त जोवन ससी सुंदरि कला निकेत ॥ मंद मधु

र मुसक्यानिमुख कियो लुनैयां खेत ॥ ७९ ॥ क

वित्त ॥ राधाजूके अंग संग रुचि त्यौं रुचि

र बास गुलाबनको रंग रुचि सौर भानि सौं

भिरी ॥ चितहि चुरावति सुको किल कीवा

नी लगी कानन कितौमि प्रेम मदकी मनौ

भिरी ॥ चिंता मनि सोही है रसाल मौरकुं

जनि मे अलिन के पुंजन सुमानो मुनि आ

विरी ॥ बातन के बीच तरुनाई आई सिसि

रमे माघ सुदी पंचमी मे ज्यौ बसंत की सि

री ॥ ८० ॥ दोहा ॥ मुग्धा अवि दित जो बना

अविदित कमा पेखि ॥ विदित मनो भव जोबना

बहु रिन बाढ़ो लेखि ॥ ८१ ॥ पुनि बिस्रब्ध न

वोढ गनि कोमल कोपा जानि ॥ चिंता मनि

कवि कहत है अट विधि मुग्धा मानि ॥ ८२ ॥

अवि दित जोबना ॥ सवैया ॥ बांकी भई

भृकुटी बिन काजल लोचन कानन आनि

रहे हैं ॥ छाती कछू उचकी बिन हौर कछौ

चितवे इक भाउ लहे हैं ॥ पाइ उठाइ धरै

गरुए मनि बैन सकोच न जात कहे हैं ॥

मानहि मौन बिचारि कौ मैर आनि कौ

न सुभाव गहे हैं ॥ ८३ ॥ अविदितकामा ॥ को

बिल न्हाके सुनै उमगो मनि औरसुभाउ भ
यो अबही को ॥ फूली लता द्रुम कुंज सुहात
लगे अलि गुंजत भावत जीको ॥ कारन कौ
न भयो सजनी यह खेलु लगे गुडियान
को फीको ॥ काहेते सांवरो अंग छबीलो ल
गो दिन द्वैकते नैननि नीको ॥ ८४ ॥ विदित्
बनी॰ काहू को पूरब पुन्य लता सुतो बेलि
अपूरब लै उलही है ॥ सोने सो जाको स्वरू
प सबै कर पल्लव कांति कहा उमही है ॥
फूल हंसी फल हैं कुच जाहि कै हाथ लगै
सुकृती सो सही है ॥ आली कियो सुनि कै
बतियां मुसक्याइ तिया मुख नाइ रही है ॥
८५ ॥ विदित कामा ॥ कवित्त ॥ काम कलानि
की चोप चढ़ी चित अंग अनूपम ओप भ
ई है ॥ केसरि सो धौ सुहान लग्यो मनिचं
दन बेलि बनाइ दई है ॥ भौंह उचाइन चा
इके नैन कछू मुरिके मुसक्यानि लई है
ओठन ऐंठि लगी अठिलानि सो वैसउ नी-
की ठौनि नई है ॥ ८६ ॥ बेसरि बारहि बार
उतारत केसरि अंग लगावनि लागी ॥ आई
है नैननि चंचलता दृग अंचल बाम छपा

वन लागी॥ दूलह के अवलोकन को चाय
टनि भारो खनि आवनि लागी॥ चौस हेली
नक ते बतियां मन भावन की मन भावन
लागी॥८७॥ नवोढा लक्षण॥ दोहा॥ जौल
ज्जा भय परा धीन रति होतिन वोढा सोइ॥ र-
तिमै पतिहि पत्याइ कछु विस्रब्ध नवोढा
होइ॥८८॥ नौल वधू के रति समै लज्जा अ
ति अधिकाइ॥ अति सुख दायक होति न-
व जब कछु पतिहि पत्याइ॥८९॥ सवैया॥
रावतिजो नहि सामुहे नैन सुवैन कहा पि
यसों मिलि भाखै॥ बांह गहे झिझकै कवि
भृंग पकौरै करसों दृग नीरनि नाखै॥ यौंन
न वोढा वधू बसकी वेकौ सो अपने मनमै
अभिलाखै॥ एक छिनौ थिरकै थिर ज्यौं
जल विंदु पुरैनि के पात मै राखै॥९०॥ बा
लके मिलन आस गए खिन साल लाल
लल कत पल सक धीरज न है॥ सखी
सव ल्याई नवला को छल वल लखि छवी
ली छवीली के सकल अंग हेरै॥ करि जोरा
वरी प्यारी सखी सेज ऊपर सु आखिन को ऊ
पर है आस यों दर हेरै॥ चार कोस मध्य म-

धुकर अंकु लाने मानौ छल की सो जन के ऊपर हैं लहै॥ ८९॥ विस्र अनवोढा॥ सवैया॥ लालकी दीठि बचाइ के बालकि यो नचैहै हूरि प्रदीप की वाती॥ पीको हियेह रव पुंज बढौ सुतो पूछत ही कछु वात सुहाती॥ लागत ही तल मैं पतिको कर चं दू मुखी चित चौंकि सकाती॥ सोईहै भा- ईके पीतम सायपै सुंदरि हाथ छपाइ कै छाती॥ ९०॥ सोइकै मेरी अलीतिलै देखो- हो भाजिन जांउगी यांही डरो जिन॥ नेकु दया करो काहे खिझावत रातिकी भांति सो अंग भरो जिन साथ तिहारे हौं पौढि रहौ पर छाती के ऊपर हाथ धरो जिन॥ जो कछु की कैसो कान्हि परो पिय पायप रो कछु ज्ञान करो जिन॥ ९१॥ कोमलकी था॥ सवैया॥ और तियाकी छुई छतिया पिय मोल बधू सो कहूं लखि पाई॥ भां- कि भरोखे है अंचल खोट हसी चल ताकि के भौंह चढाई॥ अंबर ओढ छपाइके अं गन पौढि रही पलका रिसहाई॥ मेरित्र प्या रो है प्रानहुते मुहु चूंवि लइ डाइयो कं ठलगा।

ह्वै॥९४॥मध्या लक्षन॥दोहा॥ज्ञातिय के हिय होतुहै लाज मनोज समान॥ताको मध्या कहत हैं सिगरे सुकवि सुजान॥९५॥सवैया॥ नेह्यौ चहै पिय कौं बिन ओट वैनेन कछू बिन घूंघट खोलै॥भौंहन संग छुटै पतिको सकुचै नवतारे कछू काम कलोलै॥चाहति बात कहौं न कह्यौ पर जात रह्यौ न रहे अन बोलै॥झूलतु है मन प्रान पियारी को लाज मनोज के बीच हिंडोलै॥९६॥दोहा॥कहि आरूढ़ जोबना आरूढ़ मदना जानि॥पुनि बिबिध सुरता कहू प्रगल्भा बचना मानि॥९७॥ आरूढ़ जोबना मद उदा हरन॥सवैया॥मन नैन बिसाल रसाल चितौनि पै लाज सुभाव लए अपनो॥कचला बलचै कुच भारसौं लंक सवै तन कंचन रंगगनो॥पगपैंजन औ बिछिया झलकैं कल किंकिनि ने दनादघनो यह पूरन जोबन चंद मुखी चली आवति मंद गयंद मनो॥९८॥आरूढ़ मदना मध्या॥*॥ कवित्त॥अब लोकनि मैं पलकौंन लगैं पलकौ अवलोकि बिना ललकैं॥पतिके परिपूरन प्रेम पगी मनि और सुभाउ लगैन लकै॥ति

यकी विहसौ ही विलोकनि मै मनि आनंद आल
नि यों झलके॥ रसवंत कविजन को रसु ज्यों अ
खरानके ऊपर ह्वै छलके॥ ९९॥ कवित्त॥
चैतकी चांदनी के ज्यौं चंद अवलोकन ते छीर-
निधि छीरके पूरन पूर उमगे॥ चिंतामनि
कहे मन आनंद मगन ह्वै के बिहरति दंपती र
स प्रेमसो पगे॥ अध खुली अखियां सुरति
सुख रसबस मानो भोर अध खुले कमल-
नि मै खगे॥ प्यारी के सकल तन श्रम जल
बिंद सोहे कनक लता में मुकता फल मनो
लगे॥ १००॥ प्रगल भा जोवना मध्या॥ सवैया॥
ऐहै प्रवीन महा सिगरी परि हास केलहन ल-
हगुने गी॥ मोसौं सबै रिहि बोलनको चतुराई
के बैन विचारि चुनेगी॥ नेक रहो मति बोलो
अबै जनि पादुन पैंजनि भांन उनेगी॥ जानती
हैं सगरी सखियां मेरे नेवर की भान कार सुनै-
गी॥ प्रौढ़ाकोल॰॥ दोहा॥ केलिकला में चतुर
अति प्रीतम सौं अति प्रीति॥ लाजत जैव्है मद-
न बस प्रौढ़ा की यह रीति॥ *॥ प्रौढ़ा भेद॥
दोहा॥ प्रौढ़ा जोवन प्रगल भा मदन मत्त पुनि
जानि॥ केहि पति प्रीति मती सुरति मोद परबस॥

मानि ॥१०३॥ प्रौढ जोबना प्रगल्भा ॥सवैया॥
कोटि विलास कटाक्ष वालोल वढावे हुलास
न प्रीतम ही तर ॥यौं मनि यामे अनूपम रूप
जो मैनका मैन वधू कहि ईतर।सुंदरि सारी
सुपेद मे सोहत यौं छबि ऊंचे उरोजन की तर।
जोवन मत्त गयंद के कुंभलसे जनु गंग तरंगनि
भीतर ॥१०४॥ आंखिनि मूंदि वेके मिसि आनि
अचानक पीठि उरोज लगावे ॥ कोंहू कहू मुस
क्याइ चिते अगराइ अनूपम अंग दिखावे ॥
नाह छुईछल सौं छतियां हंसि भौंह चढाइ
अनंद वढावे॥ जोवन के मद मत्त तिया हित
सौं पतिको नित चित्त चुरावे ॥१०५॥ रतिप्री
ति मती को उदा हरन ॥सवैया॥ लीनसी ह्वै त
न प्रीतम को सुभरे अति आनन सौं जियको ॥
मनि आपुहि ते मुख चुंबन को सुहरे मन मोह
न के हियको॥ छन मान विता वति है छनदै
सुछना छनदै सुख यौं पियको॥ रति केलि वि
लासिनि छोडिके और नभावे कछू तरुनी ति
यको ॥१०६॥ रत्या नंद परवसा ॥सवैया॥ प्रीतम
को रति रंग सभे सुमनो रसको वरसा उनई है॥
ऐसे भुजा भरि भेंटि रही जनु द्वै तन की करिए

कलई है ॥ सुंदरि मोहन के मुखसों मुख लाइ अ-
नंद मै लीन भई है ॥ ऊंचे उरोज लगाइ हिये जनु
अंगन बीच बिलाइ गई है ॥ १०७ ॥ दोहा ॥ मध्या
प्रौढा मान मै कवि मनि त्रिविध बखानि ॥ धी
रा और अधीरतिय धीराधीरा मानि ॥ १०८ ॥ व्यं-
ग्य कोप प्रगटै जुतिय मध्या धीरा होइ ॥ को-
प बचन बोलत प्रगट मध्य अधीरा होइ ॥
१०९ ॥ मध्या धीरा ॥ सवैया ॥ सांझते चंद क-
लंक ज्यों मन मेरो लै साथ रहे तुम प्यारे ॥ वैठि
बची मनि मंदिर बीच लगे सब दीप प्रकास
अध्यारे ॥ प्रातहि पाइ सुधा मद पान ना नैन
चकोर न मोहन प्यारे ॥ बैठि न अनूप कला प्रग-
टी अकलंक कलानिधि मोहन प्यारे ॥ ११० ॥ म
ध्याधीरा ॥ कवित्त ॥ कहां जागे रैन आस निपट
उनीदे हो जू सोइ रहो प्यारे विथो आछे पर
जंक है ॥ खेलत हैं चांदनी मै ग्वालन के संग काहू
ग्वालन को नाम लीने कहा कछु संक है ॥ योंही भले
मानसैल गावती कलंक हो कै देख्यो कहूं चिंताम
निहू के अंक हैं ॥ पीतरंग अंबर सुनील रंग भयो
लाल झूठी हो गुपाल तुम्है काहे को कलंक है ॥ १११
दोहा ॥ बचन हसित के संग कहि कोप प्रकासै नारि

मध्याधीर अधीर तिय कविजन कहत बिचारि
॥११२॥उदाहरन॥सवैया॥रातिमैहू मनिलालकहूं
रमिइहां दुखुबाल बियोगलहैहैं॥आरसौं आननो
रुख होत सरोस तिया दुख बैन कहैहैं॥लाल
भये दृग कोरनि आनिकै यों अंसुवानके बुं
दरहे हैं॥चौंचन चोप मनो सिथिले बिचखं
जन दाडिम बीज गहे हैं॥११३॥दोहा॥प्रौढा
धीरा नेकुनहि कोपै करै प्रकास॥पति को
अति आदर करै रतिते रहै उदास॥११४॥ता
वहि याको उदाहरन॥सवैया॥बोलति काहे
न बोल सुनै मधुरी बतियां मन मोहन भावै
बोलै कहा कछु चित्तमैहै दुख पित्त बढ़ैवातु
लागती तावैं॥ठाढे हैं लाल बिलोकैं नबाल
कौं तेरी बिलो कौन कौ अभिलावैं॥लालभ
ई बिन काजहि आजु रहैलौ कहा मेरि दूख
ती आवैं॥११५॥सादर धीरा॥सवैया॥आजु
कौं पलकाते परी पुहमी पर माथे हमारेन
पाव धरौ॥काह बोलौ मलीन सौं संभ्रम सौं हं
सि बोलि हमारे न ताप हरौ॥कित जात हौ पान
न खान कौं मान सौं आन भुजा भरि अंक भरौ
सुख देत हमैं बिन आदर ज्यौं बहु आदर आप

नौ दूरि करौ॥११६॥रत्यु दास धीरा॥सवैया॥
बोलौगी वैनतो कानन चैननबोलौगी वैनआ
नंद भईहौ अंचल सों मुख मूंदि रहौ तबध्या
नमें जो धरि चित्त लईहौ॥बैठति काहे न
हौ ढ़िग सुंदरि मोको दई सुख रास दईहौ॥
मोहि गनौ निजु दास मनौ तुमवों विन काज
उदास भईहौ॥११७॥जावक रंजित भाल र
किये मन भावन भावती गेह सिधारे॥दूरिते
भौंह कमान चढ़ाइ कै सुंदर नैन कटाछ ते डा
रे॥आइ कै वालम बांह गही ढ़िग चंद मुखी
झुकि कै झझकारे॥चंपक मालसी कोम
ल वाल सुलालच मैली की मालसों मारे
११८॥दोहा॥प्रौढ़ा धीर धीर तिय बोले धी
र अधीर॥चिंता मनि कवि कहत है समुझ
त बुद्धि गंभीर॥११९॥कवित्त॥मेरी कहा च
लीहैन आपनी कहति बात वही भली करौ कछू
काहूसों निवाहिजो॥मोहि अजिगरुजाइ वासों
सुकरम कियो यह कौन धर्म तजत अवाहिजो॥
चिंतामनि कहै कौनवाकी सुधिलेत जाइ जाको
मनको व्याकुल करिताहिजो॥जापैरति मानि
प्यारे आएहो हमारे घर एकौ घरी करौ वाकी

प्रीति कौ मुलाहि जो ॥ १२० ॥ दोहा ॥ जहां होति
है दैतिया तहीं रीति वह जानि ॥ पुरुष अ-
धिक घट प्यार ते ज्येष्ट कनिष्टा जानि ॥ १२१
कवित्त ॥ एक पलका पै बैठी सुंदरि सलोनी
दोऊ चाहिबे छबीलौ लाल आयो रतिकेलि
घर ॥ चिंता मनि कहे दिग बैठो आनिप्रीतम
पै काहू सों कछु न चाहि सकति दुहूं के डर ॥
सुख के मनाइबे कौ एक कौ दिखायो नाह
बिपरीति रतिकौ सुरूप लखि चित्र पर ॥ जौ
लौं सकुचन वह आंखें मूंदि रही तौलौं प्रान
प्यारे प्यारी के कुचन पर रख्यौ कर ॥ १२२ ॥ प
रकीया कौ लक्षण ॥ दोहा ॥ प्रीति करै पर पुरु
षसों परकीया सो नारि ॥ ऊढा और अनूढ
गति सो द्वै भांति विचारि ॥ १२३ ॥ ऊढा होइ वि
वाहिता अविवाहिता अनूढ ॥ परकीया द्वै भां
ति की जानत जगत अमूढ ॥ १२४ ॥ ऊढा को उ
दाहरन ॥ सवैया ॥ अलि सासु भये ननदी स
त रातलखै कुल कानकी हानपरी ॥ घरबाहि
रसों बलि बैर बढ्यौ सु अजो तुमकौ नहि जा
नपरी ॥ मनि मांझ गली तुम चांह गही सु-
तौ कौन अही यह बान परी ॥ वह बात कही

कुली कानन में सुती कानन कानन आनपरी ॥ १२५ ॥ दोहा ॥ सुरत गोपना चतुर कहि कुल-टा बहुरि बखान ॥ कहत ललिता सुकविजन अनुसैना उर आन ॥ १२६ ॥ सुरत गोपना को उदाहरन ॥ कवित्त ॥ ग्रीखम मे बावी कूप स-रवर सूखे सब जल नदी भिर नाते आवत (नगर मै ॥ तहां जात आवत लगत कांटे भार-न के होन जैहों होंही पानी पीवति हों घरमै ॥ अति दूरिहीते भारी गागरि लिआ ए बोमों छूट पसीना अंग कांपे थर थर मै ॥ कहति (हों पुनि सासु ननद अकेन मोपे जाऊंगी (तो आऊं मे भर दुपहर मे ॥ १२७ ॥ दोहा ॥ बर नत सुकवि जु नायका द्विविध चतुर सिरमौ र ॥ वचन चतुर कहि एक पुनि क्रिया चतुर पुनि और ॥ १२८ ॥ वचन चतुर को उदाहरन ॥ कवित्त ॥ एहो तुम कोहो नेकु घेरे कौन खोदे-खो चिंता मनि बागन मे कोपे लह लही है धनु मको धरम है है देव अर चनकाज संदुरी चमे-ली की काली कछु कच हीहै ॥ बाग मे अध्या-री डस लागतु है जात उत तातें हौं कहति वृहां जो लोग और नहीं है ॥ कैसे करि जाउं फूल ले

नहीं अकेली इहांतो आछे आछे फूलनकी बेली फूल रहीहैं ॥१२९॥ क्रिया चतुर को उदाहरन॥ सवैया॥ कैसेहु देव बधूनमें कोउ न होइ तौ ताकी बराबरि वाछे॥ सोहतिहै नखते सिखलौं मनि अंग अनूप सिंगारन वाछे॥ लीलबहाइ जनाइ बिनै चलैसासु औ नंद जिठानीके पाछे॥ नैनकी सैननि मोहनकौ मुरिकै मुसक्याइ बिलोकति आछे॥ १३०॥ दोहा॥ जहां प्रीति परपुरुष की प्रगटित जगमे होइ॥ ताहि लक्षिता कहत है चिंता मनि कबि लोइ॥१३१॥ सवैया॥ लोगकी लाजसों काज कहा मन मोहनते कुलकानि इगीहैं॥ बोलें कहा हम बावरी हैं वह सांवरी सूरति देखि ठगीहैं॥ जानति नंदजिठानी औ सासु चहूं दिसि मेरे दवारे जगीहैं जाने सो कोउ हजार कहो हम नंदकुमार के प्रेम पगीहैं॥१३२॥ दोहा॥ बहु पुरषनि की केलिकौ जाके मन अभिलाख॥ कुलटा तासों कहत हैं सब सज्जन कबिलाख॥१३३ सवैया॥ छैलनि गैलमे आवत देखिकै भांकि मारोखनि रीभि रिभावै॥ चंचल अंचल

डारे रहै अगराइ अनूपम रूप दिखावै॥ ला-
टू की गति नैनन की निरखै निरखै बिन
चैनन पावै॥ जोबनके मद मत्त तिया तजि
काम की केलि सु औरन भावै॥ २३४॥ अ
नु सैना॥ दोहा॥ संकेत स्थलके नसत भावि
स्थान अभाव॥ भीत गयौ हौं ना गई जो पोछ
पछि ताव॥ २३५॥ होइ अनु सैना त्रिवि ध
विधि बरनत सबका वि राइ॥ कामते देत उ
दा हरन सब सज्जनन सुनाइ॥ २३७॥ प्रथम
कवित्त॥ रुँदैहै सजीव कोउ काछे गोइ न केहै
त अधरम लेत कौन हाट रु ठाटत हैं॥ सिगरे
कासाई है इनके कहा सुभाइ औरनको तो हाइ
हाइ हियरा फाटतहैं॥ चिंतामनि सज्जन इहां हैं
तिन्हें पूछे देखो आगे न्याउ व्हैहै वैतो इनको डाट
त हैं॥ देखइ इहि देस आली खरे निरदई लोग हरे
हरे रूख असहरके काटतहैं॥ २३८॥ दूसरी सवैया
आली अटारी चौवारे त्यौ मंदिर बैठका महल सुहावन
जीके॥ खेलन को तुमको यनं ठौरहैं जैस उ
ते सुख पावैगी नीके॥ हैमनि सुंदर लोग उ
जा गर नागर नेह पगे परतीके॥ ज्यौं इहां
तौं ससुरारि तिहारी मैं बाग बड़े ढिग है ?

रिसकीके॥१३९॥तीसरी॥ सवैया॥ अपने भी
त परोसी सों सुंदरि सूने चौबारे सहेट बखा
नी॥ ह्यां उन बोलि कपोत की बान अटा पर
आनि दुसारत ठानी॥ जागतुहे भरता यह जा
नि मनोज के बान लगे यह रानी॥ आइ ग-
यो तनमे परसेद परी पति संगसुरी अकु
लानी॥१४०॥मुदिता॥सवैया॥ द्वै दिन को
पथ तीरथ न्हान को लोग चल्यो मिलिकै
सिग सोई॥ सासु वहू सों कह्यो यों रहो घर
और रहे नहि राखिवय कोई॥ सुंदरि आनंद
सों उमगी यह चाहति ही सुभयो अब सोई॥ प्रेम
सों पूरन दोऊ जने घर आपु रही की रह्यो
नन सोई॥१४१॥ दोहा॥ परकीया अविवाहि
ता सुतो अनूढा नारि॥ सब ग्रंथन को देखते
कवि मन कहत विचारि॥१४२॥ सवैया॥*
जामे कछू मनि सोचु स कोचन भाखिये
सो तो कछू लरकाई॥ आवत ही इन नैनको
रस मोहन के वसिको लल चाई॥ देखे वि
ना कल नेकु नहीं अरु देखे तो गोकुल गांव
च वाई॥ जामे हंसे हू कलंक लगे यह कौन
धों वैस विखा सिनि आई॥१४३॥ दोहा॥*

कहि स्वाधीन प्रिया बहुरि वासक सज्जा जा
नि ॥ बहुरि विरह उत्त कंठिता विप्रलब्ध पु
निमानि ॥ १५४ ॥ पुनि खंडिता बखानि पै
कलहं तरिता नाम ॥ पुनि कहि प्रोषित
भर्तृका अभिसारिका सुवाम ॥ १५५ ॥ तौस
ब भेद तिहून के भेदन हू के होत ॥ जे जैसे
संभवतते तैसे लहत उदोत ॥ १५६ ॥ सो स्वाधी
न प्रिया कही जाके नाह अधीन ॥ सुतो सदा
आनंद मय बरनत सुकवि प्रवीन ॥ १५७ ॥
मुग्धा स्वाधीन पतिका उदा हरन ॥ सवैया ॥
जोसो छबि मोहि दिखाइ भारोसेवड़े सोछ
वि पाइ कही सुर अंगनि ॥ त्यति नीलवधू
मनि नैन चकोर रु ज्याये कहा है सुधा रस
सींचनि ॥ अंबर लाल में योंमुख ज्यौं प्रतिबिं
बत चंद्र सरस्वति बीचनि ॥ मानो उदै गिरिकं
दरा अंदर इंदुरम्यौ कुर बिंद मरी च्यानि ॥ *
१५८ ॥ मध्या स्वाधीन पतिका ॥ सवैया ॥ फू
ल्यौ फल्यौ मृदुवाग बन्यौ मनि मंदिर की ग
ति त्यौं चटकीली ॥ प्यारे यों प्रेमकी खानि ख
ली अंखियां बिलसैं मुसक्यानि रसीली ॥ कं
चनके रंग अंग लसैं पिय ते रहीरंग रंगी

है रंगीली ॥ मे रेही संग विहा करिहै अब लाज सौं काजु कछून छबीली ॥ १४९ ॥ २ प्रौढास्वाधीन पतिका ॥ सवैया ॥ आपुहीपा इन देत महाउर वेनी गुहै अरु वेनी डुलावै आपुही वीरी वनाइ खवावै अनेक विला सनि रीभि रिभावै ॥ तेरी सखी मनि आपने मित्र सौं ते रेही प्रेमकी बातैं चलावै ॥ तोते २ त्रिलोक मे को वड भागिनि जो तिय यों पिय को बस पावै ॥ १५० ॥ देरवेन कौं सुख मान बनो मनि जासुख मानकौ सोर भयोहै ॥ सांवरो सुंदर जोसिगरी ब्रज नारिन कौ चि त चोरिलयो है ॥ आपने आइ अटामे भट्ट धन चोरि घटान कौ मोर भयोहै ॥ नंद कि सोर भारो खकी वोर सुतो मुख चंद चकोर भयोहै ॥ सामान्या स्वाधीन पतिका ॥ दोहा ॥ या पर नेह निवाहु तू है यह निपट सवाम तन धन मन सव तोहि दै तुही करी सव वाम १५२ ॥ पियको आगम जानिकै अंग सिंगा रै वाम ॥ सोध सेज सुंदरि रचै वासक सज्जा नाम ॥ १५३ ॥ मुग्धा वासका सज्जा ॥ सवैया ॥ मंदिर सुंदर धूपे सुधा मद जोन्ह की जोति

जहाँ अधिकानी ॥ प्यारी सिंगारी प्रवीन सखी मनि मोलिन की सुखमा सर सानी ॥ सेज रची पय फेनसी हां पिय आगम देखी जैहै निय रानी ॥ हेरी अली सों चली हँसि नेल बधू मुखकौ लख वादू लजानी ॥ १५४ मध्यावाः ॥ सवैया ॥ मंदिर धूप करे ऐसे मंदिर इंदिरा देवी प्रसन्न निहारति ॥ सेज संवारे इकांत मैं आपु रुकं तहि आपुन अंग सिंगारति ॥ फूलनि हार सुगंध रच्यौ जन मेरेसे औौर सखी को सुधारति ॥ इंदुमुखी पिय आगम औसर थोरति केलि की साज संवारति ॥ १५५ ॥ पौढावाः ॥ सवैया ॥ चंदन लीप्यौ मनोहर भोनसौं धूप्यौ भले अगरो इव धूपनि ॥ इंदुकला सित सेज रची पिय आगम सुंदरि सेइ सरूपनि ॥ अंग सिंगार धरे गहने जेवने मुकता मनि हंद अनूपनि वास मै ऐसो खुल्यौ वह मंदिर मंदिर मानो खुल्यौ रस कूपनि ॥ १५६ ॥ परकीया वासकसज्जा ॥ सवैया ॥ सेज रची मनि मंजु प्रसूननि आवनहीसुख पाइहै जोपी ॥ देखत सो भग वास वनी जिन कामवधूहूकीदीपति

ति लोपी ॥ बाहिर चंदकी चंद्रिका भीतर त्योंमु
ख चंदकी चंद्रिका वोपी ॥ है पग फूलके पुं
ज कुलाइ असो कावे कुंज विराजत गोपी
१५७ ॥ सामान्या वा ॥ सवैया ॥ सांझ समै न
खते सिखलौं मनि हंदनि मुंजुल अंग सिं
गारे ॥ नेकु चितै मुसक्याइ कटाक्ष सुरंगना
रूप गुमान निवारे ॥ कौसुकृती जाको वास
वधू मुकता फल हंदन वार संवारे ॥ सीस
धरे तम तार लमी पति आलन मानौ अभी
के दुलारे ॥ १५८ ॥ दोहा ॥ नायक के आगम
समै सुंदरि अंग सिंगार ॥ वे लावति है आ
भरन पहिरि मुदित वर नारि ॥ १५९ ॥ मु
ग्धा विरहोत्कंठिता ॥ सवैया ॥ वाल भरी
पहिलै पतिसों उर छूटी त्यों लाज कछू
न घटाई ॥ नेकु उदै मिलि मैन कला दुति
दूलह की यह लागी सुहाई ॥ दूसरे द्यौस
नि जामलौ बाहिर बातमें वालम वार विताई
बोलि सखीन सहेलिह सों चित चंदमुखी
के भई दुचिताई ॥ १६० ॥ खंडिताकोउदा हरन
सवैया ॥ जामिनि को पहिलो जब जाम वि
तीत भयो पिय गेहन आयो ॥ लाजन बोलि

सकै नसखीन सौं वाम कोकामहिहो अकुला
यो जोमन वीच विचार करै उनके हून मोहि
वियोग दिखायो ॥जानति हौंनकहा गति है
मेरे प्रानन को पति कै विल मायो ॥१६१॥
प्रौढा वि:उ०॥सवैया॥ आजु विलंव भई
काहु काज मे औरे पै प्यारे को चित्तन जैहै
कोकपटी वहु जाति वडी तुम पीउ तुम्हा
रे प्रभात मे ऐहै॥ आनंद ह्वैहै रीकोआऊरे
जन नैन सरोजन सौं सुख पैहै॥तेरो का
हो सव ह्वैहै सखी यहु पूरन चंदजो जीव
न दैहै॥१६२॥जीवति क्यौं अव मारत मा
र वडे दुख जामिनि जाम विताई॥देखे वि
ना जुग सौं पल जातु सुजानि कै प्यारे
हौं त्यौं तल फाई॥हौंलखि हौं मुसक्यात
मनो हर श्री मुख चंदु कवै सुख दाई॥आ
इ परयौ धौं कहा गुर काज जो वालम आ
जु विलंव लगाई॥१६३॥परकीया वि:उ०
सवैया॥इंदु उदै पहिलेही संकेत मैं आ
गेही दूती यहै ठह रायो॥नागरि आइ नि
कुंजके भीतर नागर नेकु विलंव लगायो॥
तौलग वाके हजार विचार भए अतिवाही

को मैन जगायो ॥ चंद्रिकालीक चढ़ी नभमें प्रभु गोकुल चंद कितै विलमायो ॥१६४
समान्या वि॰ उ॰ ॥ सवैया ॥ जाहु सखी चलि ल्याहु उन्हें यह बोलवो ताहि उतै तजि दाप हि ॥ आगम तेरो सुमेरहै मेरो हौं चाहति एक तिहारे मिलापहि ॥ लाजको मोहि उताल मिलाउ कहा तू रचै उपचार अमाप हि ॥ मोतिन हार मनोहर ह्वो वह मेटै गो मेरे वियोग सता पहि ॥ १६५ ॥ विप्रल: ॥ लक्षण ॥ दोहा ॥ जाहि बोलि संकेत पियजाय आन तिय पास ॥ ताहि विप्रलब्धा वधू कहि कवि करहिं प्रकास ॥ १६६ ॥ मुग्धा विप्रलब्धा ॥ सवैया ॥ पीतम भीतर जानि सखी निजपेलिकै मंदिर केलि पठाई ॥ पीउ गयो ग्रह मध्य छपे मग और पै इंदु मुखी इत आई ॥ जोवन चंदकी चांदनि मे मग प्रेम को चाहि हिये अकुलाई ॥ सेज निहारि कै सूनी सरूप गुमानकै भंगकी भीति दवाई
१६७ ॥ मध्या विप्रलब्धा को लक्षण

॥ सवैया ॥

इंदु मुखी मनि इंदुकी रैनिकछू गुर सेवनहीं

मे बिलाई॥पाइ नि देशनि वासहि आइ सखी सुखदे यह नेह पठाई॥ सोधके ऊपर खंड २ सिधाइ जहां रति मंदिर सेज सुहाई॥ नाह निहा स्योन है सिगरी सुख दायक सेज भ ई दुख दाई॥ १६८॥ प्रौढा विप्र लब्धा॥ सवै- या॥ कांति कपूरन चंदकि चांदनि पूरन छी रधकी छवि छीनी॥ सूनो बिलोकि विहार २ को मंदिर क्यों करि जीवेगी प्रेम प्रवीनी॥ वा हि बुलाइ हौं औरपे जात सु कैसे बने यह वा त प्रवीनी॥ वंचन मेरो कियो सजनी यह २ रंचन प्यारे दया मन कीनी॥ १६९॥ परकी या विप्रलब्धा॥ सवैया॥ आइ मनो रथ मे च ढिके दूत वाके थके सुकु मार घ कीहे॥ २ कौन सके रहि औरनि कुंजन खोजन हू कौन जाइ सकीहे॥ फूल प्रसूनके खान हजा रन मारन कारन मारतकीहे॥ गौन भुलानी २ मृगीसी दिले बति सूनेनि कुंजको चाहि चकी हे॥ १७०॥ सामान्या विप्रलब्धा॥ कवित्त॥ सुं दरि धनिक नव यौवन निरखि कोऊ

सुंदरी सुगंध ले गावन को लगीहे॥ बोली मु सकाइ नेकु बैठिये हमारे गेह इन कहीस

न मुरव छवि जगमगी है ॥ चमेलिन की १
काली सैं रचना अनूप रची मंदिर मे चंद
को उदोत जोति जगीहै ॥ यह तो अथ फूले
फूल हंसत हैं याहि जानु जग की ठगनी १
काहू भले ठग ठगीहै ॥ १७१ ॥ खंडिता लछ
न ॥ दोहा ॥ आन वधू रति चिन्ह धरि आ
यो जाको पीउ ॥ प्रात घरै सो खंडिता यह
रसिकान को जीव ॥ १७२ ॥ मुग्धा खंडिता ॥
सवैया ॥ आन वधू रति चिन्ह धरे इत प्रात
हि प्रीतम आगम कीन्हो ॥ आली के हाथमैं
आरसी दै मनि नोल वधू भजि भीतर ली
न्हो ॥ बोली सखी यह रूपकी रेख कहां य
ह वेष उपद्रव कीन्हो ॥ यामृग नैनी पत्या
नी मृगी को कहा चित्त लाल को कादूल १
कीन्हो ॥ १७३ ॥ उत्तमा ॥ कवित्त ॥ जोपै प्रान
प्यारे चितचाहन तिहारे कहो तुमही धौं
कहा गति मेरी तो विहारीहै ॥ नेह रस भरे
डीठि रारिवये अधीन हौं मै स्याम सचिप
रजात काम रुचि हारीहै ॥ चिंता मनि तौं
लौं लह लहे जौ लौं सींचि यतु मनसीची
कुम्हिलानी मालती निहारी है ॥ ऐसी पा

रपाई मरजा उगी बारने जाउजीवनि हमारी
हंसि बोलनि तिहारी है॥१७४॥ मध्याखंडि
ता॥ कुंकम लेपसों कीन्हो सबै तनु लाल हो
दीपति पुंज उज्यारे॥ दूखव हरे हम सीं चख
ईन के फूले ए लोचन कोल विचारे॥ बाहि
रआइते नारिनि की खुली नीविन केहौ बंधा
वन वारे॥ आइ प्रभात दिखाई दई तुम ली
जिय मित्र ए प्रान हमारे॥ १७५॥ प्रौढाखं·
कवित्त॥ आन अंगना के अंग संग चिन्ह
धरे आयौ पीउ जीउ दूखित जो अराध दो
षमे॥ कोप मुंद राई पर वोपसी चढाई भ
यो मोहन कोमनु प्रेम कोरी भितो समै॥ रै
नि मग देखि जगी पीतम पै आइ परी नीर
भरी अखियां अरुन अति रोसमै॥ ऊपर ह्वै
आई जल लहरि आइ कलमले भलि मानो
कोकनद को समै॥ १७६॥ परकीया खंडित
दोहा॥ ए सपने कौ रंक निधि समुभि आ
जु पछिताहि॥ भली करति इनसों सखी जो
रु चितवति नाहि॥ सामान्या खं:॥ दोहा॥१
आन चिन्ह लखि कंठते लीन्हो हार उतारि
लाल नैन करि हाथ सों गमन बतायो नारि

१७८ ॥ रिसते पिय अपमान करि पुनि पी
छे पछिताइ। कलहं तरिता कहत हैं ताही
सोंकविराइ ॥ १७९ ॥ मुग्धा कलः ॥ सवैया।
लाजन मै पहिचानिकैभे पुनि हों पहिले
पियको न पत्यानी ॥ पेच सौं आलिन दी
न्हो मिलाइ भई मन प्यारे के प्रेम विका
नी ॥ कालि अकेलिये सेज में सोईवे आये
न याते काहू मै सकानी ॥ प्रात पिया दे भ
जीहोबहांत खुसीह गयो उठिहौ पछितानी
१८० ॥ मध्या कलहं तरिता ॥ सवैया ॥ काज
र रेख लखी अधरा पर प्यारेके प्रातमै बात
वखानी ॥ काहू विलोकेयो विभाति वधूकहै
सोसुनिकै सजनी मुसक्यानी ॥ नाथके हा
थ दई उन आरसी वैतो लजाने सुमै यह
जानी ॥ पीउ गए उठिकै जवते तनु तापनि
तेअतिहीअकुलानी ॥ १८१ ॥ प्रौढाकः ॥ कवित्त
मृग मद चंदन सुरभि अंग आवै किवो प्रा
न प्यारे तेरे भौन गौन मेरे आगरी। ताको
मान वधू अंगराग परम लजानि तू कियो
कहल सव सखी वड भागरी ॥ तोहि हसी
जानि आगमन उठि गयो पीउ कहा धौं कर

त जो आवै वाहूं जागेरी॥ सबवैयांन भौंहैंता
नि मानि करि वैठी वाल लागी पछितान
मन मैल वान लागेरी॥१८२॥ परकीयाक
दोहा॥ प्रेम कियो कुल कानि तजि पठयो
रिसन रसाइ॥ गयो लाल मो हाथ ते कहा
लेउं पछिताइ॥१८३॥ समान्या कलहंतरि
ता॥ दोहा॥ भई विपुल धन वंत हौं जाके
पाइन सेइ॥ तासों रिसि अनु ताप यह
मोहि महा दुख होइ॥१८४॥ प्रोषित भर्तृ
का को लक्षण॥ शृंगार मंजरी यथा॥ प्रोषि
त यह भावर्थ या नितितिहूं काल प्रवासहि
कहत आन॥ सो जामे सो प्रोषित विचार
यह प्रिया प्रोषित भर्तृका जान॥१८५॥
*॥*प्रवत्स्यत भर्तृका और जानि॥ प्रव
त्स्यत प्रिया पुनि और मानि॥ प्रोषित भर्तृ
का और एक॥ योंतीनि भांति याको विवेक
१८६॥ वडे साहिव अपने ग्रंथ माह॥ निर्नय
कीन्हो कवि वुद्धि नाह॥१८७॥ दोहा॥ प्रिया
वासके हेतु कहि ताप धरै यों होइ॥ कही
सो प्रोषित भर्तृका समुझ लेहु सव कोइ
१८८॥ याके भेद कहत॥ दोहा॥ प्रथम प्रव

त्स्य पिया पुनि प्रवत्स्यत पतिका जानि॥ पुनि प्रोषित पतिका कही तीनि भांति यों मानि ॥१८९॥ प्रवत्स्यत पतिका को लक्षण॥ ॥ दोहा॥ प्रिय विदेस को गौनको उद्यम लखि दुख पाइ॥ होति प्रवत्स्यत प्रिया तिय व्याकुल चित्त बनाइ॥१९०॥ मु प उदा॥ सवैया॥ जानै अजो कुल हीन कछू यह आज मिलापते रातिहै सातैं॥ दूलह की दुलही बनि भूले कहा जुरहीहै संकोचि समातैं॥ हौं दुख सागर मे सखि बूडति आनि कही कातते चरचातैं॥ दंपति के पहिचानि समै कछु नीकी न पीके पयान की बातैं॥१९१॥ मध्य प्र॰ उदा हरन॥ सवैया॥ ॥ प्रीतम मांग्यो विदेस बिदेस सुने तिय के विरहागिनि जागी॥ नैननि मे असुवा झलकैं तियके हियते सिगरी सुधि भागी॥ सुंदरि सीस नवाइ रही सुमई मतिहै अति ही दुख पागी॥ यों निरख्यो मनो जीव सो पीवके संग सिधारिवो बूझन लागी॥१९२॥ प्रगलभा प्रवत्स्यत पतिका॥ सवैया॥ नाह विदेशकी चाह सुनी वह साहस काज विचार

कारयोहै॥ चित्रलिखी सी हली न चली वपुमा
नो कलेसन सों अवरीहै॥ जैवे कोलाल १
अलिंगन कीन्हो सुवाल दुहू भुजसों जक
र्योहै॥ बूड़त दुक्खपयो निधिमे पियको २
तियमानों गरो पकर्योहै॥१९३॥ परकीया
प्रवत्स्यत पतिका॥ दोहा॥ लोगन बूझति
लाल वह पुरीकिती धौं दूरि॥ तिया कह्यो
सखि आइहैं चंद आजुही पूरि॥१९६॥ १
सामान्या प्रव॰॥ दोहा॥ सखी वारन तमको
उचित सुवरन हीके पत्र॥ सुंदरि बहुत ग
ढाइके पुनि कैहै स्वतन्त्र॥१९७॥ कहत पी
उ पर हंसको अपने आखिन देखि॥ प्रव
त्स्यत पतिका नाम कहि नयो भेद यह ले
खि॥१९८॥ मुग्धा प्रव॰॥ दोहा॥ यह मुग्धा
अन सम्मुझ को राखे अंजलि जोरि॥ नि
ठुर होत सवार यह नई दुलहि याछोरि॥
१९९॥ मध्या प्रव॰॥ सवैया॥ लाल विदेस
की साज सजी सब सुंदरि हैं हियरे अकु
लानी॥ चाहे कह्यो अहो प्यारे रहो तब ला
जन तेनकढ़ी मुख वानी। तो लगि यों अस
वार भयो गुरु काज भयो गुरता अधिका-

नी ॥ नैननि ह्वै जल पूर बढ्यौ मृग लोचनी दुक्ख समुद्र समानी ॥ २०० ॥ प्रगल्भा प्रवत्स्यत ॥ सवैया ॥ मंगल साज पयान को जो हते प्यारे दियो पहिलो पग भूपर ॥ देखत लाल अलक्त भयो निकटै मह आनन को जैसे कूपर ॥ ता सम व्याकुल सुंदरि ह्वै असुवां परे टूटि उरोज दुहूं पर ॥ प्यौ अब ओट चढावे मनो दृग मोतिन माल महेश के ऊपर ॥ २०१ ॥ परकीया प्रवत्स्यत ॥ सवैया ॥ सुंदरि मंदिर के ढिग मंदिर सुंदर वैप्रस्थान बनायो ॥ झांकि झरोखे ह्वै नारि संदेस पठायो वही यह हेत पठायो ॥ वाकी लगी ते चिठी न्जुलईउन बांचि प्रवास उरोत जो पायो ॥ आपनो आनन चंद मुखी वकु सोस को आनन चंद दिखायो ॥ २०२ ॥ सामान्या प्रवत्स्यत पतिका ॥ दोहा ॥ लाल चलत लखि लाल उर बोली तिय सजि नेहु अपनी प्रतिमा लाल यह लाल निसानी देहु ॥ २०३ ॥ जाको पति परदेस को वाढ्यौ तु दुखित नारि ॥ प्रोषित पतिका होति है पंडित कहत विचारि ॥ २०४ ॥ मुग्धा प्रोषि

त पतिका ॥ सवैया ॥ जाके उरोज कढे उ
रमे तजि लाजनि बाल मसों अनुरागी
ऐसे मे पीउ बिदेस गयो यह जानि नही
तो महा दुख पागी ॥ पूनो को चंद वाला
सी मनोज कलान बढैगी जु जोवनजा
गी ॥ ✱ ॥ पूनो लौ याकोजो आवे घरे
पति दंपति तो गनिये वड भागी ॥ २०५ ॥
मध्या प्रो: ॥ कवित्त ॥ मोसों बूझिमली भां
ति समा धान करो तेरो कितनो वियोग
ताहि समझत जगुनहै ॥ सुनु सखी सपनो
मे लख्यो आजु नीको आप चित्र रूपवो
ल्यो भगवान जो छगुन है ॥ तिहारो सखी
को कंत या वसंत पंचमी को आवत वसं
तयाको भयो सुभगुन है ॥ वूझेगे कबे धौं
मेरे मन अभि लाख यह छपिके छबी-
ली कहा पूछत सगुन है ॥ २०६ ॥ प्रौढा प्रो
षित पतिका ॥ सवैया ॥ जीवित नाथबि
देस गयो हम जीवति हैं बिरहा गिनि
लागी ॥ तेरति यां कल पंत भई पियके संग
जे निसि रैं समजागी ॥ मोपर आपने
प्यारके प्यारे कहीजे अनूप कथा रस पागी

जो छतियां लगिके बतियां सुनिते छति-
यां अव सालन लागीं ॥ २०७ ॥ परकीया
प्रोषित पतिका ॥ दोहा ॥ दुसह होत पति
को काछू ललित दिखा बतिवात ॥ काव-
रे हे प्यारो सखी मोहि काछू न सोहात २०८
सामान्या प्रोषित पतिका को उदाहरन ॥
दोहा ॥ रोइ कहति है आइहै मेरो धन मो पा
स ॥ सुंदरि पिय मग लखन को कीन्हो द्वार
निवास ॥ २०९ ॥ अभिसारिका लछन ॥ दोहा
सुभ वेख धरि जोन्ह मै करै जु तिय अभि
सार ॥ सो जो लखा अभिसारिका सकल र
सिक रुचि सार ॥ २१० ॥ कवित्त ॥ तन सब
सुवरन दरपन समता मै मैन अधि काई
जो गुराई गहिराई है ॥ तामह पूर चंद्रिका भा
लक सों ही सारी सेत सुखमा समूह सर
साई है ॥ आभरन जडे मुकुता पाल विमल
दुति अंग अंग तारागन तेई जनु आई है
चली इंदु मुखी उत इंदु अधि देवता सी
सुकाती तिहारो कोऊ दर सन पाई है ॥ २११
तमे मिसा स्याम वेख धरि तम समय चलै जु पि
य पै नारि ॥ वह कहियतु अभिसारिका स-

ज्ञान लेहु विचारि ॥ २९२ ॥ सवैया ॥ मेचकरंग कै अंगकोरंग कुरंग मद दूबदां किउज्यारि ॥ चोवके रंग रगी पगिया पहिरे तन नील २ अनूपम सारी ॥ है रिवकी मग है निकरी सु अंध्यारी जैवे हुलसी अति कारि ॥ बागमे आनि रमी मन मोहनप्यारेके संग म नोहर नारी ॥ २९३ ॥ दिवा भि सारिका ॥ दोहा ॥ व्याज प्रगट अभि सारजो द्योस करै वर नारि ॥ सो कहि दिवा भि सारि का सज्ञान लेहु विचारि ॥ २९४ ॥ तन सिंगार आई जु करि बागवि लोकन काज ॥ पिय मिलाप लहि आपयह सफल भयो सब काज ॥ २९५ ॥ दिवाभिसारिका ॥ सवैया ॥ कातिक पुन्य महा नदी न्हान कढी तिय संग सखी मन भाई ॥ न्हाइ कैनी के सिंगारि कै अंगनि बाग बिलोकनि काज सिधाई ॥ कुंजइ कंतमे मित्र मिल्यो धनि मा नि उते दिन राति बढाई ॥ लोग मिले मेरे नेहरके घर घातमे आई यों बात बताई ॥ २९६ उत्तम मध्यम नीच ए तीनि भांति करिजा नि ॥ इनको लक्षण उदा हरण कहत लेहु मन आनि ॥ २९७ ॥ जोपै प्राणप्यारे कछू चाहिन ति

हारे कवित्त पीछे लिख्योहै ॥ पिय कृत हे-
त अरु अहित मे करै हिता हित नारि ॥ क-
वि चिंता मनि कहत है सो मध्यमा विचारि
२२८ ॥ सवैया ॥ पाछें जो प्रीति करी सोक-
री अब आनिपरी तुम्हें औरन की ढब ॥ है
मनरीति गई सो लई तुम ऐसी करी अधि-
काई कहौं कब ॥ कोविद काज करै बका-
वाद हो जैसी हुती सुतो तैसी हुती तब ॥ आजु त
राजु करौ बलि जाउं सो काज कहा हमसों तुमसों
अब ॥ २२९ ॥ दोहा ॥ हितो करत लखि नाह को अ-
हित करै जो नारि सो मध्यमा है नाइका सज्ज-
न कहत विचारि ॥ २३० ॥ कवित्त ॥ चिंता म-
नि होइ कोऊ नीकी की अनैसी सोभा सोई
पावै जामै प्रीति पतिकी उदोति है ॥ तूही यों
विचारि दूरि करि मोती हार गरे पहिरे तो
कहा छवि पावति यौं लिहै ॥ कहा कीजै नं-
कु तूहै पीके उर बसी नतोकेती हैन जिन्हें
उर बसी केसी जोतिहै ॥ कैसेंहे निकाई ऐं-
ठ बैठी मुख नायकौ री नायक रिझाइ तें
निकाई नीकी होतिहै ॥ २३१ ॥ कवित्त ॥ स्या-
म सर सिज अंग रंगे सब सिज मानों रा

रह्यो सिरपर घनस्याम रंग थनेराग॥ चिंताम निकेहे मानो वदन कमल पर मधुकर पुंजम नो प्रगटत परभाग॥ पीठपर बैठीतन सहज सुगंध लोभ मानो अलि अवलि बिसारि कै चमेली वाग॥ वेनी मृगनैनी की यों मंडित सु मनि रूपनिधि की रचीहै मनो दत्तामनिध रनाग॥ २२२॥ स्यामा जू के सनेह की स्यामता मेरिझें स्यामता मै सव रीझि रह्योजगुहै॥ चिं तामनि कहै जु और वचन की टौर मैन ऐसो कछु सुखमाको समूह अदगुहै॥ पाटी द्वै सिं गार घन घटन के वीच मै मयूष सीसफूल वाल रवि लाल नगुहै॥ सेंदुर सुभग तिय मांग रंग भरे अति मानौ पियमनु के गमागम को मगुहै॥ २२३॥ स्यामा जू के सुंदर सकल अंग पेखि स्यामनि पायो ससि सैन मैन को अलंक है॥ वृषभान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि म हा दुकवन कुरंग भयो रंक है॥ चिंतामनि कहै लालमनि वेंदी भाल लयो न अलंकृत कीन्हो ...है॥ दीपति वितान महा मंगल निधान म नो मंगमिलत वार आठे को मयंक है॥ २२४॥ प्रातप्रफुलितमहि देखि है दिखाऊंगी हौ केलि

सर वर अर बिंद जो अनि दुंदहै॥ योंका छूहै वाते अलि मधुर अधिक छवि कवि चिं ता मनि ज्यों नरन रिंदुहै॥ सरद की पूनो की निसाको महा नीको कहा फीकोसो लगत याके आगे चंदु इंदुहै॥ सुंदरी जु सुंदरि के सुंदर बदन आगे सुंदर लगत हमैं दुंद नार बिंदहै॥ २२५॥ याही की लै सुभदेस करत है गंध बंध ऐसो बामै साह जिकसौ रभ चमेली को॥ अंग मनो नाना रंग फूलनि की रासि उन अंगन मे बिमल बिलास अल बेली को॥ चिंता मनि चंपक कुसुम दोय अभि राम दिव्य रूप काम काला आनंद के कली को॥ जाके अव लोके सब दूरि होत दुक्खसो है नैननि को सुख मुख कमल नवेली को॥ २२६॥ सोहन मोहन मंत्र देवता बिराजै राधा वासों देव बधू हंद कैसे अकसतुहै॥ मुख बिधु बिंब पर रचना रची बिरंचि जामे बडो सुखमा समूह सरसतुहै॥ चिंता मनि सु ललित अलका कलाकै लसै भाल पर मृग मद बिंदु बिलसतुहै॥ वृष भान नंदनी की भौहैं अति सोहैं

ऐसो अरथ गुविंद जाके वस मे वसतु है॥
२२७॥ जाकी नासिका मे तिल फूल भाव
प्रकासक तिलरच्यो बिधि यों जोति सों १
तमाम सोभा घर॥ तेरी छबि देखि वाकी
ऐसी छवि छीन होति मुख दुति दीन जै-
सो प्रभात को सुधा कर॥ चिंता मनि काहे
कहा चंपक सुमन चुन लें लाल कीन्हो सु-
वाती हल प्रभानि भर॥ कहा अति रिजु १
नौल नायक रिझायो रीझी नाक नाय-
की है तेरी नाक की निकाई पर॥ २२८॥ अम
ल कपोल प्रति बिंबन सहित मनि जटित
ताटंक चारि चारु छबि धाम है॥ चिंता म-
नि वदन मयंक रथ रचि रचि मीन नहे-
मंजुल है महा रथी काम है॥ सारी जरता-
री हेम पंजर मे खंज मुख सुखमा सरोव-
र कै सरसिज स्याम है॥ चाहे नैननैन जाने
जैसा चैन होत वैन कहांलों कहेगे जैसे
नैन अभि राम हैं॥ २२९॥ चिंता मनि का-
हे तारा इंदु नील आसननि सदा विलस
ति भांति बिबित बिहारी हैं॥ सोहे नैन मैन १
बान खंजनसपछ मानो मंजुल अंजन गु

नगुंपित निहारीहै ॥ मोद मंदिरन किर
नावली की छजनकी छवि अवलो का
नि रुचिर सचि हारीहै ॥ हगन मैलागीम
न मृगकी दावरि मनो घनी बावी बरनी रा
तरानी तिहारी है ॥ २३०॥ सोहै अंग चिंताम
नि नगन जटित दिव्य कंचन की वेली कै
से सुंदर नवेली के ॥ सकल जगत पर एका
सुकली हो तुम नायकन वल ऐसी नाय र
का नवेली के ॥ एक ठौर देखो छवि आप
नी नहकी प्रति विंवित है आप रूप आन
रवे केलीके ॥ सुवरन आरसी से अमल
अमोल कहि गोरे गोरे गोलहै कपोल अ
ल वेलीके ॥ २३१॥ अह निसि चरचा सखि
न संग स्यामा जूकी स्याम सुमिरन और
काज सब नाखेहै ॥ एक मान नंदनी केमा
ह नद नंदन पै चिंता मनि नेह काहातोमैं
नात भाखेहै ॥ गोविंद के चरित अठार हो
पुरा नन मे सुनि हियो भरि पुनि अभिला
खेहैं ॥ सुवरन रेख नव अंक दुहू कानन मे
दुगुनित दुग्ध निधि मानो लिख राखे हैं
२३२॥ केसरि सौ अंग नाग वेसरि कीछ वि

यह हरति छबीली अप सरन को चेतुहै॥
चिंता मनि कहै अल वेली अक लंका सु-
खी सरद मयंक अंखि यन सुख देतुहै॥
ललित कनक मय कलप लतामें लग्यो
सुधा मय बिंब फल सुखमा निकेतुहै॥
लाल यों कहत धन्य जीवन मुकत ये ध-
न्यजो मधुर ऐसे अधर को लेतुहै॥२३॥ वृ
ष भान नंदनी की दसनि की कांति कहि
चिंता मनि कहै ऐसी कहां ते प्रवीनोहै॥
सुंदर श्रीजको वासरचना रची बिरंच या
ते उन बिरंच वधू संग लीनोहै॥ हरि गुन
सुनिवाको आपने समीप जी भज पाकोसु
मन सु ललित थल दीन्होहै॥ सुललित इं-
दिराके मंदिर के द्वार करतार कुविंद राज आ
वरन कीनोहै॥२४॥ सवैया॥ ज्ञानु भयो ज-
वते तवते तिय एक लखी मनि आजु अन-
लमें॥ दामिनि ज्यों जमुना प्रतिबिंवित यों झ-
लकै तनु नील दुकूलमें॥ देखत ही सुख है
बिना दुख जाइ परी कितते उत भूलमें॥ ठो
ढी मै स्यामल बिंदु गुपाल मनो अलि वा-
ल गुलाब के फूलमें॥२५॥ सारी सुपेत प्र-

वाह मनो सित फैल रह्यो तनु सोनेके भूप-
र॥जोरी जुरे चकई चकवा मनो यों रुचिरा
जतहे कुच ऊपर॥वांटते ऊपर आनन की
छवि यों वरनै कविरोक कहूं पर॥दिव्य धुनी
मधुनी मधि कंचन कंवु लसे जनु कंचु-
के ऊपर॥२३६॥ ✱ ॥श्री नंद नंदन कीजे
तिया गुर लाज पहार हजारन पेलिकी॥का
न्ह कसौटी के सोने की रेखसी मेचक अंग-
न ऊपर मेलिकी॥मैन महा धन साधन सो
लगति स्याम तमाल अलिंगन केलिकी॥पी
न विलासिनि वाहु लसै मृदु मारवा मनो भु
ज कांचन वेलिकी॥२३७॥दूरिते दीपति देख-
तही पुति पत्त वधून के होतरुजाहें॥चारु प
योद घटान के वीच मनो विजु रीकी जरी अ
नुजाहें॥यौंछ विसों अधि काति मनो हरि
राधिका की अग राति भुजाहें॥कायके कौ-
न अलंकृत अंकित मैन की मानो विजे की
धुजाहे॥मेरुके श्रृंगते गंग की धार धंसी उर
है सुभ हार धसेहें॥चंदकी चंद्रिका मे सिव
है जनु यो सित कंचुकी वीच वसेहें॥कीचन-
हीं विंव नारि के तारको यों मति पीन उतंग

लसेहैं ॥ तो उर सौं उर नाह धसे वैधसे कुच
आपु समाइ धसेहैं ॥ २४९ ॥ बाल पने की
निकासी भई बल बाके अयान दै आदि
भुठार ॥ जोवन को बिधराजु दियो उन
आन किये सब काज सुठार ॥ चूचका मे
चक वै मनि छत्रन के कलसा करि कात
नुठार ॥ देवता है रति मैन के हैं कुच सोने
के है मठ मानो उठार ॥ २५० ॥ कवित्त ॥ वृ
ष भान नंदनी के नैन निहारि हारि मानि
कहा सब सुनारि हूं खंजन के ॥ चिंता मनि लाल
दर सन हेत लल कात सुबरन संभु जुग
सोहत सुलज्ज के ॥ मैन रति मंगल के सुब
रन कुंभ कैधौ कैधौं कुंभ कुच जुगल जोवन म
द गज्ज के ॥ खग कैधौं कुंभ कैधौं श्रीफल सु
दारके धौं स्यामजूके मोहन को सोभन गुच्छ कंज
के चिंतामनि सोहैं कुच कांचन कलस चारु
नव गन पति कुंभ रोचन के रंगको ॥ बिम
ल बदन दूज राज राचि गुर कीन्हो सेवत
बिमद जाहि जगन कुसंग को ॥ हरि जूकी
प्रीति हेत जग उल ह्यो पायो जोवन नरे
स राजा राधाजू के अंगको ॥ २५१ ॥ सवैया

और तिलोक मे कौन त्रिया अति रूपवती वृ
षभान ललीतें। चोर भये को भयोन चल्यो
उत जोवन राज प्रताप थलीतें॥ मैन महा
बली सौंपि दियो मनु छूटन पावत क्यौंह्नि
वलीतें॥ श्री नंद नन्दन मोहन हेत विधाता र-
ची मनो वाज्ज कालीतें २४३ को महा मूढ़ छबीले
के अंगन जाय परैो ज्यो ससारो वहीर में॥ ठा
ने अनठान अधील जो आपते ताहिको आ
नि सके पुनि तीरमें॥ जोवन पूर विलासत
रंग उठे मनमोद उमंग समीरमें॥ मैल उरो
ज ते कूदि परैो मनु जादू प्रभानदी भौंरगं
भीरमें॥ २४४॥ जोवन को आगमन समुझ
के पद छोड़ि चंचलता चारु चख पद चा
हि धाई है॥ जघन पुलिन लखि आई थिर
ताई चाव छोड़ि पग चाहि वे उर जतट
आई है। पानिपमे त्रिवली तरंग नाभि भौंर
रूप नदी मध्या अंगने प्रकासी यों निकाई
है। चंचलता थिरता उता बन कारन रोम
राजी नील मनि सेत रेख उल हाई है २४५
कोर कटाछ तुरंगम हे पुतरी असवारन की
छवि छाजे॥ मत्त गयंदके कुंभ उरोज्ज विलो

कत मानस धीरज भाजे॥ श्री मनि चारु र-
थंग नितंबहि पत्ति विलासन ते जनु साजे॥
सुंदरिके चतुरंग चमू नृप मंजुल मध्य अनं
ग विराजे॥ २४६॥ कवित्त॥ सोहत छबीले
अंग फीर ति नंदनी को देखि मंद मुसक्यानि
चारु चंदहु तुलन है॥ चिंता मनि इंदिरा को मं
दिर अनूप अर विंदतो प्रभात हू में सकात खु
लन है॥ सेत सारी हारी सो निहारी नेकु मन मु
ख सुख निरषि मन सकात डुलन है॥ सरद
मे प्रगटत नीर निघटत मेरु मही पर मानो
मंदाकिनी को पुलिन है॥ २४७॥ अभि नव उ
दित मदन रवि रथ चक्र पर पंथी बाल द
शा निशामय वेली को याही को सुर दसनस
म भात घन स्याम खंडन विरह वैरि सेना घे
रि मेली को॥ चिंता मनि याते कहावे चक्र चि
त चकित भयो है लखि चक्रपानि मेली को
* कुं कुमके मानो कुच कुंभ द्वै भवाद्व धरे
जोवन कुलाल चक्र नितंवन वेली को॥ २४८
सोभा के मदन अवतरे हो मदन तुम देखिये
ललित रूप रीति रतिकेली को॥ * ॥ चिंता
मनि कहत गुंजरत भौंर आस पास अंबान-

मे साह जिका बासु है चमेलीकी ॥ दीपनिकी दीपति सी दीप जब बसन बोट कदलीके मूलसी ए मंजुल नवेली की ॥ सुर पति सुख हूतें सुख सरसैगो उरपरसैगो लाल ऊरू अल बेली की ॥ २५८ ॥ चिंता मनि सोहत सुभग हेम खंभ चारु जोवन मदन मंद पुंडरीक नालसी ॥ सोनेकी तरकसी है कामकी चरन नख चंद फूली अंगुली बंधुक काली वानसी ॥ जेहीं रतन जोति चित्र रंग अंग अदर सो वह सित गोपन निदान सी ॥ राधा जूकी जंघा मकर ध्वज प्रधान केधौं सिरी को निधान राजे गर्भित निधान सी ॥ २५० ॥ सवैया ॥ यों मनि मैन महीप प्रताप त्रिया तन वैर सुभाउ गिलेहैं ॥ आनन पूर निशा करके दिग बार घने तम आइ हिलेहैं ॥ वै सुखमा के समूह कछू अंगुरी परवीन प्रकास दिलेहैं ॥ छोडि सदा को विरोध कहा कर कंजन सों नख चंद मिलेहैं ॥ २५१ ॥ कवित्त ॥ बरनत इनको सदाही मुक्ति चिंतामनि कीन्हो जो मुदित मन महा मोद मदतें ॥ नाह मनु मत्त मोद उलहावे नीके अभिन-

व ललित कल पलता छदतें॥ स्यामको हैं
सं जीवनि वेलको पल्लव ए ज्याइ लियेजो
वचाइ विरहा गिनि हूदतें॥ महा उर रंग रं
गे रंगत है लाल उर राधिका के चरन अधि
क कोक नदतें॥ चिंता मनि लेइ काहे चंद
मुखी याकी वडी वडी छवि छाती जिनि
सौतन की दहीहैं॥ चंद मुखी औरें को
काहि सकत याके आगे अर्थ रात चंद
हू प्रात रुचि चाहीहै॥ विमल वदन देखि
याको तुमहू तौ चंद मुखी कहि कान्ह मोह
नदी अवगाहीहैं॥ निरमल दसननधवार
सुंदरि के चरन अंगुरि यन सेवत सदा ही
हैं॥ २५३॥ इति श्री चिंता मनि विरचिते क
विकुल कल्पतरौ श्री राधा वर्णनं पञ्चम प्र
कर णम्

॥ अथ नायका वर्णनं

दोहा॥ सकल धरम जुत निपुन धन विक्रम
पूरो होइ॥ ताको नायक कहत हैं कवि पंडि
त सबकोइ॥ १॥ प्रथम धीर पद दै गनौ नाय
क ए निरधारि॥ कहि उदोत उद्धत वहुरि ल
लित संत ए चारि॥ २॥ महा संत गंभीर अ

ह क्रिया सिद्ध जो होइ ॥ अवि कामन धीरादि
मन यो उदात कहि सोइ ॥ ३ ॥ धीरा उदात
लक्षण ॥ कवित्त ॥ पिता राम राज अभिषे
क कौ बुलाए पुनि बनकौ पठाये नहीं बद
ल्यौ बदन रंग ॥ प्रबल बैरीकौ भैया सर न
हि आयौ तासौं कहत नो निकेत आपु रहौमि
लि एक संग ॥ हन्यौ इंद्रजीत कुंभकरन औ
रावन ए एक एक तिहूं लोकन के जेता अ
भंग ॥ दूजा द्विज देव तानि बरनी बडाई आ
पु नेकु नाव नाही काहू प्रगटयौ गरब अंग
४ ॥ दोहा ॥ प्रबल गर्ब मत्सर सहित चंडवि
कथन होइ ॥ मायावी जो जगत मे धीरो (
द्धत है सोइ ॥ ५ ॥ सवैया ॥ याहि यो उग्र स-
भाउ परयो सब छत्रिय वार इकै संघारे ॥
गर्भ लगे इन छत्रिन के कुल खंडित की
न्हे भये वार भारे ॥ तैं जग के गुर संकर कौ
धनु तोरयो कहा मन मोह विचारे ॥ राजकुमा
र यो तीक्षन धार परयो है न कान कुठार तिहारे
हे ॥ धीरल लित लक्षण ॥ दोहा ॥ सुंदर अ
ति मन हरन गन सुखी कान्ह सो होइ ॥ क
ला सर्ग जिहि चित मृदु धीर ललित है

सोदू ॥ ७ ॥ सवैया ॥ मोर किरीट लसे चप-
ला पट नील वला हक रंग हरेहैं ॥ गोप को
कंध धरे भुज दंड अनूप विलास प्रभा-
नि भरेहैं ॥ कान्ह लिये नव मंजरी मंजुल
वंजुल कुंजन तें निकरेहैं ॥ सुंदर मार हु
तें सुकुमार सौं वे लखि नंद कुमार खरेहैं

॥ ८ ॥ धीर प्रसांतको लक्षण

दोहा ॥ विप्र सखा गोविंद को धरम ज्ञान
निविष्ट ॥ इंद्रिय विषयन तें विरत सो प्रथा
न अति शिष्ट ॥ ९ ॥ शृंगारी नायक वहु
रि चारि भांतिके जानि ॥ प्रथम कह्यो अन
कूल पुनि दक्षिण नाम वखानि ॥ १० ॥ वहु
रि धृष्ट पुनि सठ कह्यो लक्षण फिरि अ
नुरूप ॥ वरनत ए शृंगार के आलंवन सु
हु रूप ॥ ११ ॥ एक स्वकीया में रमें सो अनु
कूल वखानि ॥ सवमें सम वहु नारि रत सो
दक्षिण मन आनि ॥ १२ ॥ अनुकूलको उदा
हरन ॥ सवैया ॥ पीतम और वधू सो मिल्यो
मनि जाने सवै गुन देख विसरवे ॥ मैं सव
के ते उपाय रचे पिय के सहं और तिया मु
ख पेरवे ॥ मेरो विचार अचार विच हन १

मोपेउनु उतरु दै हसि देखै॥ पावै कहौ कित दूसरी बात चकोर जो चंद्रमा के समले खै॥ १३॥ दक्षिण को उदाहरन॥ दोहा॥ सव अपने सन मुख लखत होत सकल सानंद॥ कलनि कलित मनि अति ललित प्यारो पूरन चंद॥ १४॥ धृष्ट लछन॥ दोहा पुरुष प्रगट अपराध जो निरभै आवै गेह कहै धृष्टति य धन्य तैं तासों करै सनेह॥ १५॥ रिसनि निकारो गेहतें निपट निठुर करि जीउ॥ कर वटले देखै कहा संग सोवत है पीउ॥ १६॥ सठ लछन॥ दोहा ॥ छपि तिय को विप्रिय करै बाहिर प्रीति दिखाइ ऐसो नायक होइ जो सठ करि वरन्यो जोइ॥ सठ को उदाहरन॥ सवैया॥ प्यारी कहौ हमसों निसि वासर मैं कछू प्रीति की रीति निहारी॥ कैहूं कृपा करि मोहि चहो मनि हौंतो उपाइ चले करि हारी॥ कैसे छपे हमसों जो छपाइ भयो नित और के संग विहारी॥ और कहूं हिय अंतर की हमसों सुखकी प्रिय प्रीति तिहारी॥ १८॥ अथ श्रृंगार लछन॥ हास्य प्रत्यंग-

वर्णनं॥सवैया॥पौली उछ्या रीन सेरह्यो तम माया निसाके सहायन को॥कुरवंद सुधा भर दंद भरे अक लंबा अनूप सुभायन को॥अंगुरी मनि नीलको पासिनके मनौ अंक परे सुभ दायन को॥उर अंतर संदूर आनि उये नख इंदु गुविंद के पायन को॥१९॥तेरे नहोइ संतोष तरु जो रहे तिहुं लोक की संपति को गिलि। दी धितिवै मकरंद सुधा भर वेलि संतोष की रासन मे खिलि॥तोहि सुहातु है राग घनौ मनि राग लसै जिनि मे तिनमे हिलि॥चाहे जो सीतल ता हियरे हरिको पग मंजुल कंजन सौं मिलि॥२०॥कान्ह की ऊरु लखे जग को कदलीन को मूलन की छबि लाजे॥यौं बल खानि उदंड लसै लखि दिग्गज सुंडन को मद भाजे जो हरिके हर रोमको कूप अखंड बनी व र भंड समाजे॥ता गुरु भारके धारन कौं मनौ नील महा मनि खंभ विराजे॥२१॥ खेलमे सैल उठाइ लियो बलको अधिकाई सुयौं दरसे॥कर ऊपर सोहत शृंग

मनौ मोहि पाइ दवाइ सुभाउ ह्वैसे॥मनि मेच
क मंजु महा गिरि की सुखमा हौ अंगनि
मेजु लसै॥मनौ नील पयोधर बीच मनोहर
दमिनि की प्रतिमा दसै॥लोचन मीन लसै प
ग कूरम कोल धरा धरकी छवि छाजै॥ए
वल मोहन सांवरे रामहैं दुर्जन राजन कोह
नि काजै॥हैं वलमै वल ध्यान मै बुद्ध लखै
कलकी विपदा सब भाजै॥मच्छ नृसिंह हैं
कान्ह जूमै सिगरे अवतारन के गुन राजैं॥
२३॥कान्ह की देह कलिंद सुता त्रिवली सोत
ंग की पाँति नचीहै॥नाभि गंभीर द हारनि
हारिके रीझि समान समान सचीहै॥लाल
महा मनि मालके बीच रोमावलि रूपकी
रासि रचीहै॥दिव्य दिये दुहु तीर नदीय र
सुमध्य मनो तम रासि वचीहै॥२४॥श्रीह
रिके उर ऊपर चारु खुले मुकता हल हाल
खरेहैं॥ह्वै प्रतिबिंबित ऊहां नग दुगुने सुखमा
के समूह धरेहैं स्याम महा मनि सैल सिला
नखता वलि के प्रति बिंब परेहैं॥आपने बंधु
समाज को साजकै बंधुन मानौ मिलाप करे
हैं॥२५॥सई उधारतहैं तिन्हैं जे परे मोह म

दे दधिके जल फेरे॥ जे इनको फल ध्यान ध
रैं मन तेन परैं कबहू जम घेरे॥ ताके रमार
मनी उप धान अभे वर दानि रहे जन नेरे॥
हैं बल भार उदंड भरे हरिके भुजदंड सहा
क मेरे॥२६॥ कान्ह कौ कंबुज कुंकुम रं
जित भागनतें मनहू मन आनौ॥ श्रीकम
ला बल याबलि अंकित सुंदरता जग ऊपर
जानौ॥ हैं रस नीयन्निरख मनौ अब तामें ल
सी मुकतालि बखानौ॥ एक निवास के नेह
मिले सुभ संख सौं म्रतिन के सुत मानौ॥
२७॥ लखि लोचन नील सरोज मिले हैं प्रका
सत प्रेम प्रमोद घनौ॥ मनि कानन मैं मुकु
ता भलकौं उठिहैं परिवार मनौ अपनौ॥ मुस
क्यात सदा नंद नंदन को मुख यौं सुख मा
को समूह गनौ॥ यह सांवरी स्वच्छ पसारत
चांदनी सांवरी सुंदर चंद मनौ॥२८॥ कान्ह
के अंगन की छबि देखत नीको न अंग लगै
आरसी को॥ ऐसी मनो हर मूरति मैं मन
लागत है मनु धन्य जसी को॥ सोहै सुभाव
कपोलनि मैं नंद नंदन को मृदु मंद हसी २
को॥ नील महा मनि आरसी माहं मनौ भा

लखो प्रति बिंब समीको॥२९॥जहि याकोतो स्वादु अचेतनहूं मुरलो कियो नादत्रिलोकछ येयो॥पुनि याही के स्वाद सिरी भई पूजित जे वसवो काठ कानन ज्यों॥इत वाकोतो स्वाद लिये कबहूं सब लोग सदा बिन बुद्धि त- येयो॥मनि मंजुलता हरिको अधरे वह क्यों करिपावत बिंब पयो॥३०॥जाहि लखे ब्र जकीवनिता नितजी कुल कानि लिये सब लाजे॥ भूलि गयो गुरलोगनि को डरछो डि दियो सिगरो ग्रह काजे॥पूरन चंद ते जो अधिके मन आनन चंद बड़ी छबि छाजे॥ऐसो अनूपम औधकी नाक सुनं द कुमार की नाक बिराजे॥३१॥कान्हजू का म स्वरूप धरयो पठये मनो हैं सब अंगन टो ने॥मोही सबै ब्रजकी बनिता बरनी तरुनी नई आइ जे गौने॥भौहैं कमान सों अंबुज बान चलाइ लगाइ के कानन कोने॥क्यों नि करे मन यों हिय रांसे लगे नंदलाल के लोयन लोने॥३२॥आपने को सदा सील भरी कोऊ बूझे तो तासों करे मन सोंहें॥ सज्जन को सुख रास प्रकासही दुर्जनदा-

नव दाहक जोहैं ॥ मानिनि के मन को यौं जु
री सर नैननि मैन कमान मनोहैं ॥ बेदनि वी
च बिचार यहै सदा सेइये नंद कुमार की
भौंहैं ॥ ३३ ॥ पैठे जबै सुख सा जल न्हान
को व्याकुल ह्वै बिरहा नलडाढे ॥ जो राव
री जिन सैं चलिये मनिहै ब्रज नारिन के
मन गाढे ॥ श्रीनद नंदन जू के मनो हर का
नन कुंडल यों छबि बाढे ॥ दै ध्वज बाह म
नो मकर ध्वज राखि सुधा रस कुंडल गाढे
३४ ॥ कान्ह की मूरति देखी हुती जिन तें ।
सिगरे ब्रज ऊपर जानो ॥ काहिन ध्यान ध
रो निसि वासर भागन तें मनहू मन आनो
ऐसी लसी नंद लाल के भाल में कुंकुम
की अस नाइ बखानो ॥ दिव्य उदै के समै भ
लको विधु भाग में राग विराजत मानो ॥
३५ ॥ लाग निरंतर जाहि बखानत हैं सिग
रे निगमो पचि हारे ॥ स्याम की सो मन रू
प कला कहं पावत कोटि अनंग बिचारे ॥
आनन ऊपर मोर किरीट सुधार बिराजत
घूंघुर वारे ॥ इंद्र के चाप समेत मनो विधु
मंडल ऊपर बादर कारे ॥ ३६ ॥ दोहा ॥ जे

रत उही पित कौरै तेऊ ही पल आनि ॥ चंद्रबना
दिका सलिल रचन्नु चिन भै आनि ॥ ३ ॥ कवि
त ॥ प्रफुलित बाग कुंज मल्लिका पराग पुं
ज ल्याई जोन्ह बेपसी चढ़ाई उज राई मैं
चिंतामनि कहै ऐसी सौध मध्य भरि राखी गम
धन सारकी सघन ग्राग नाई मैं ॥ * ॥ दूध
कैसी धारा धौरी धाम मैं पसारी चंद्र तेज बढ़ौ
कंदरप कुटिल कसाई मैं ॥ औरऊ तिया
को बैधौ मेरो मंद भागिनि को बांत है बिंदे
स या बसंत की जुन्हाई मैं ॥ ३६ ॥ सवैया ॥
वा मनि मंदिर की छवि वृंद छपा कर की
छवि पुंजन पोषौ ॥ पाइकै रहत मनोहर
चांदनी चापुलै मैन महाबल रोष्यो सुंद
रि के मुख चंद को छोहि चकोरन चंद म
यूखन चोख्यौ ॥ चंद शिलान ते नीर भरयौ
लो लखै सिखके विरहानिन सोख्यौ ॥ ३८ ॥
कवित्त ॥ शालन की सिलनि को ललित
पटऊ लाल जटित हिवालन को चौकी
चहूं वोरको ॥ लाल बहु भूमि है महल खंड
खंड लाल खंभन खूलनि छवि छर्वो भौ
रको ॥ चिंता मनि माने मय भावै रतन के

बैठकनि गान मृदु चूमुन मुसंग धन चोरकी संदर रतन मय मंदिर सुंदरिनि संग खेल नि ललित लाल ललित किसोरकी ॥ ५०॥ प्रा तीप सदीप कर्यो यो उद्दीपन विभावको वि वेक कियोहे ॥ दोहा ॥ आलंबन गुन इंगितो अलंकार स्वीन ॥ पुनि तटस्थ चौथो कह्यो उद्दीपन स्वीन ॥ ५१ ॥ आलंबन गुन रूप अ रु जोनादिक चित आनि ॥ बहुरि हाव भावा दि ये चेष्टा ताकी जानि ॥ ५२ ॥ नूपुर अंगरहा रञ्जन आदि अलंकृत देखि ॥ मलया निल चंद्रादि ए सब तटस्थ अब रेखि ॥ ५३ ॥ यापर हम यों कहत हैं ॥ * ॥ दोहा ॥ उद्दीपन जे भाव ए सुने कहूं हम नाहिं ॥ चंद्र यानादिक क हे समुझे नीके जाहिं ॥ ५४ ॥ आलंबन के गु न समै आलंबन के बीच ॥ ते उद्दीपन कोक हे कथन लगे यह नीच ॥ ५५ ॥ सौंदर्यादिक गुन रहित आलंबनै नहोइ ॥ आलंबन गुन र हित जो बरनि सके नहि कोइ ॥ ५६ ॥ चेष्टा ता की आपुही बरने मे अनु भाव ॥ अब उद्दीपन कहत हैं कैसो बुद्धि प्रभाव ॥ ५७ ॥ आलंबन की अलं कृत है आलंबन माह ॥ सो उद्दीपन

होतहै जोबरनत कवि नाह ॥ ४९ ॥ रस उद्दीप
न कैसें कहै रस प्रधान है जानि ॥ जो आलंब
न मध्यहै ते आलंबन मानि ॥ ५० ॥ जे तट-
स्थ उन कोहहै चंद्र बाग वन आदि ॥ ते उद्दीप
न कहि सबै है यह बात अनादि ॥ ५१ ॥ उ
द्यान उद्दीपन ॥ कवित्त ॥ मधु मद माते मंजु
मंजरी रसाल भेद बार मधुर मधुकर वाना रली
चिंता मनि कहै फूल फल निवाल लउत है
सी महा राज आनि ललित लता गली ॥ कुं
जनि मै छाह थानि वाल्ली कदंबन की बिम
लसुगंध जल नलिन नदी चली ॥ राज अ
भिषेक समै आपनी संपति सबलै रसा
लकी न्हो रितु राज हूं महा बली ॥ ५२ ॥ आ
स पास मंदिर वनेहै दिव्य मध्य वेदी चाढ़ि
राम चंद्र छबी सुखमा सुहाई है ॥ चिंता म
नि चन्द्रिका मंदिर परि जातन की सकल दिस
नि मै सुगंध भर लाई है ॥ मढ़ि पर सत मं
जु भोरन ए आमन मै गत बल कोकिल
न मधु कुर गाई है ॥ आगम ऋतु राज को
निरखि मानो वन्दी जन ललित सुरन सह
नाई बजाई है ॥ ५३ ॥ इति श्री चिंता मनि कृ

ते कवि कुल काव्य तरी पञ्चमं प्रकार सो ॥

॥ दोहा ॥

इति कारज अनु भाव गनि स्वाटाक्ष दै आ
दि ॥ मधुर अंग दूहा कहे सहृदय सुखद
अनादि ॥ १ ॥ जेपुनि थाई भावको प्रगटक
रै अनयास ॥ ताहि कहत अनु भावहैं स
व कवि बुद्धि बिलास ॥ २ ॥ कवित्त ॥ जोबन
सिंघासन मैं सुंदरि को रूप भूप पीतम ८
नैन जाके उप सर पनमै ॥ चिंता मनि का
धि बिलोकनि मुस क्याइ पाइ होतहै मु
दित जैसे पित्र तरपन मै ॥ मोहन बदन वा
ल घूघट की ओट पिय कीन्हो तन मन ८
धन जाके अरपनमैं ॥ बिलसत मनो प्रतिबिंबि
त सरद चंद बिमल पदुम राग मनि दरप
न मै ॥ ३ ॥ लाल रंग कंचन किनारी हार सा
री तैसी नाकको नखत मुकतान को उजेरे
है ॥ बीद्युत की छटासी छबीली की काट
नितैसी चिंता मनि नील घन घटनको घे
रेहै ॥ मोहि देखि मुरकि मधुर मुसक्याइ
चाइ कीन्हो चित चपल कटा छन को चे
रेहै वाके घेर घुमर ललित पटुलहंगा

की मनोहरभ्रमनमैंभ्रमतमनमेरोहै॥४॥दोहा॥
स्वेदतंभ रोमांच कहि सुनि सुर भंग वनाइ
वहुरि कंप वैवर्ण गनि आंसु अपुलीना
इ॥५॥ आठ सात्विक ए काहत सज्जन गन
मन आनि॥इनको रोत उदा हरन एका कवि
त मे मानि॥६॥कवित्त॥लोचननि भाल
कैधौ प्रमोद जल कंप स्वेद सलिल अचल
तनु पुलक पसारयौहै॥पीत रंग भयो मुख
वैन निवारैन मैन हूं गति हरन करि खेल
यों उचारयौहै॥देखत परस पर यहै गति भ
ई उनदेवता स्वरूप धैर्य आपनो विचारयौहै
वचन अगोचर को परम आनंद नंद नंदन
को वृष भान नंदनी निहारयौहै॥७॥सं
चारी भाव लछन॥दोहा॥जे विशेषते था
इकौ अभिमुख रहै वनाइ॥ते संचारी व
शियै कहत वडे कवि राइ॥८॥रहत सदा
थिर भाव मे प्रगट होत इहि भांति॥ज्यौं
कल्लोल समुद्र मे यों संचारीजाति॥९॥
सोनिर्वेद विभ्रम जड़ता धीरज हर्ष
दैन्य उग्रता चिंतत्रा सादूखोहे अमर्ष॥१०
गौरव सुमिरन मरन मद सुप्न नीद चपलो

ध॥व्रीडा पस मार मोह मत आलस वेगो बोध २१॥काहि वितर्क अव हित्थ पुनि मिलि उन्माद बिषाद॥उत कंठा अरु चपलता तीस काहे निर्वाद॥२२॥ए सिगरे सब रसनमेंइ न को इहै सुभाउ॥जांर समै नीको जुहै ता को इहां बनाव॥२३॥तत्व ज्ञान दुख ईरखा दिक निः पालना ज्ञान॥होत आनि संसार मै सोनिर्वेद वखान॥२४॥निर्वेद लक्षण॥* साहित्यदर्पन मत॥दोहा॥तत्वग्या विपतीर षा विरहा दिक अपमान॥जहां कीजि यतु आनसो तह निर्वेदवखान॥निर्वेद को उदा हरन॥२६॥कवित्त॥मिहिर मरी चिन मै मृग जलकै सो भ्रम सुखन मैंतो यके तरंग को हैं गुहै॥छोडि सदा शुद्ध ज्ञान आनंद परम पद वोर काहू वाहू विसराम कौन अंगुहै॥चिंता मनि काहे कहो कौन सो सनेह कीजे सबही सो घाट वाट हाट के सो संगुहै॥नीको हैतो कहा परनाम सब फीको होत तन धन जोव न कुसुम कैसो रंगुहै॥२७॥मनि जो परमार थ चातुरी कीचरचा ही भयो चितु चैन चही जगकी विना काज की वातनको बिन काज

को काहे को कीजे हाहा ॥ परमेश्वर के पद पं
कज सों परतीति सों प्रीति भई जु महा ॥
अब ता पर विद्या जो और कछू जु सिखी
तो सिखीन सिखी तो कहा ॥ १८ ॥ आजु क
हा मनि रूठि सी बैठि है बैठीं अति ऊंची उ
सासन लीजतु ॥ मोसों कछू अपराध प
रो कत अंचल लोचन के जल भीजतु
॥ * । * ॥ कैधों तुमसों अपराध परे पिय कों
तुम ऊपर रोसु है कीजतु ॥ फेरि हमा रेही
यो सनको मन मोहन जू तुम्हें रोसु न दी
जतु ॥ १९ ॥ दोहा ॥ रत्या दिकते होतु क
छु जो निर्बलता जानि ॥ वे वर्ण्यो दिका-
सों कहूं बहुरि सु ग्लानि बखानि ॥ २० ॥ म
ग पग मंद गयंद गति धरति सनि कुच
भार ॥ छबि अभंग रति रंग की थकित अं
ग सुकुमार ॥ २१ ॥ जो तो को अवनी तिकै
रवनि कुराइ हेत ॥ जो मन मैं संकोच सो
शंका कहै सचेत ॥ २२ ॥ शंका को उदा हर
न ॥ सवैया ॥ जाने बिना हूं न जानत हैं य
ह जानि र है मुंह नाइ लजानी ॥ कोऊ का
हूं कछु बात कहै समुझै सब आपनि यै

पै कहानी कोहू हसे जो सखी जनतो गहि

जाति सकोचन वाल भयानी ॥ स्याम ति

हारे सनेह रहे मृग लोचनी सोच संकोच

हमानी ॥ २४ ॥ श्रमको उदा हरन ॥ सवैया ॥

रति अंतकछू अल साइ उठी तकि यामे

तिया करि एक हिये ॥ मनि वेनी है पीरि प

री विथुरी अपने कर कूसरी थाम लिये ॥ भालके

श्रम बिंदु छुटी अलकें बिह सोहें से गोल

कपोल किये ॥ अब वेउप जावत लोचन

को सकुचोहे सलोचन आन हिये ॥ २५ ॥

धैर्यको लक्षन ॥ दोहा ॥ ज्ञान एक आदि

कनते जोसंतोष भूत मानि ॥ निज अदृष्ट

परि पाक मो व्यग्न चित्त पहि चानि ॥ २५ ॥

धैर्यको उदा हरन ॥ कवित्त ॥ पूरव करम बस

भमत है भूलत मैं पूरव जनम जो दियो

है सोई पायहे ॥ तिनसों महीप कोऊ काहे

को गुमान करै चिंता मनि जिनको सहज

चित्त चाहहे ॥ कोस दस बीस के नरेस वि

सरायो कहा होत बिस राये परमेस्वर सहा

यहै ॥ सबके सराही साथ अनाथन के ना

थ हमे कहा दीन बंधु विस्व नाथ विसरा

येह ॥ २६ ॥ दोहा ॥ सकल आचरन ज्ञान को अक्षमता जित होइ ॥ प्रिय अप्रिय देखे सुने जडता कहिये सोइ ॥ २७ ॥ जडता को उदाहरन ॥ दोहा ॥ अन मिख लोचन देखिवो चुप रहिवो इत्यादि ॥ होत काज वरनत रहत यों सब सुकवि अनादि ॥ २८ ॥ अन मिख लोचन व्है रही हली चली नहिं वाल ॥ चित्र पूतरी करि है छरी अप छराल ॥ २९ ॥ इष्ट वस्तु पाए हरख मन प्रसाद जो होइ ॥ आंसु स्वेद गद गद बचन वरनत है सब कोइ ॥ ३० ॥ सवैया ॥ योंमन वैठी विसूरति हो मधुमे अब होन वचोगी अनंगसों ॥ पीउ अचानक आइ गयो सु परीप गयो सिगरो दुख अंगसों ॥ वाहिर भीतर पूरन ऐसो भयो घट मेरो अनंद उमंगसों पूर उमंग भगी रथके तप जैसे विरंचिकमंडल गंगसों ॥ ३१ ॥ दोहा ॥ जो दारिद विरहादि ते होइ मलिन ता कोइ ॥ चिंता मनिस्वासादि करि होत दीनता सोइ ॥ ३१ ॥ ताप तीनहीं तपत हो जग मे पाप प्रवीन ॥ अवकों दया सुदीन पे कीजतु दया नदीन ॥ ३३ ॥ दू

सरो उदाहरन ॥सवैया॥मोहके चोसन मांह
विदेसन चाहि संदेसन पाती पठाई ॥सोच तिरा
ति सवै पलकौ पलको नभरै सुत हांई ॥
बैठति नारि जहां सुकुमारि है सोचन वारि
न आंखि लगाई ॥सांई मिले मनौ याप
लको मनि बैठीहै आंसुन की जल साई ॥
३३॥दोहा॥कछु अपराध लखे जहां रोस
चंड उत होइ ॥तर्ज नादि कारन जहां होइ
उगनता सोइ ॥३४॥राम सील जगता पह
र सीतल सुखद अपार ॥रुकसन के संहा
र को अनल भयो इक बार ॥३५॥चिंता के
हि यत ध्यान है सून्य तादि जित होइ ॥आ
हर स्वासिता पतित बरनत हैं सब कोइ ॥३६॥
चिंताको उदाहरन ॥कवित्त ॥संधति है मानौ
मुकता हलको हार वह चारु भीर नैनीन २
की धार यों ढरतिहै ॥ अरुन अधर काहिका
हे को दुखित करै कौन हेत आजु ऊंची सास
न भरतिहै ॥ अचल है रही वोलि मंदिर मैं
चिंता मनि सघन बदन चंद्र चंद्रिका पर
तिहै ॥बैठी कात आजु कर कोमल कपोल
धरि ध्यानतु कोमल नैनी कौनको करतिहै

भर भाव भरसो अनुरागे॥ ५३॥ गर्वलक्ष
ण॥ दोहा॥ विद्या द्रव्य प्रभाव कुल रूप
अहंकृत गर्व॥ होत अन्य अपमान कर
जामै चेष्टा सर्व॥ ५४॥ क॰॥ मेरी आखैं देखैं १
मृग नाखैं नाना गर काहा को मृग नैनी क
है ताको कहा कहनो॥ फिरि जनि कहौ क
छु प्यार चुप रहौ हमै चंद्रमुखी कहे दे
खौ चंद्रमा को लहनो॥ जानु ईन जात क
छू मेरे लोने गात पर मोहि पिय सोनेकौ
गढ़ावो जिन गहनो॥ ५५॥ दोहा॥ सहस
ज्ञान चितादि भ्रू विला सादि जितहोइ
सुमिरन पूरब अर्थ को स्मृत कहियत है
सोइ॥ ५६॥ चिंता मनि घन स्याम मे सोइ छ
वि घटा उमंग॥ सुमिरन बाल कदंब को पु
लक भुजा सब अंग॥ ५७॥ सवैया॥ मोही
है ग्वाल गुपाल लखे ब्रजबाल कछू कान मे
रन पावे॥ बोलन बोल ठगी सी लखे मनि
मैन के बानहि यों अकुलावे॥ रोमन अंग
कदंब काली मनमे घन स्याम की योंछवि
छावे॥ सारति मंद कपोल हंसी उमगी अ
सुवा अखियां भरि आवें॥ ५८॥ मरन ल

रता ॥ दोहा ॥ प्रान त्याग कहियत मरन सु
तौ प्रगट जग माहि ॥ संगरामादिक छोड
कै और वरन वैनाहि ॥ ४९ ॥ जो वह वाव
हु वर्नियै तौ ताको उद्दोत ॥ शृंगारादि पवं
धनै मर नन वर नन जोग ॥ ५० ॥ कवित्त ॥
दुरयोधन प्रबल विरूप रूप जयद्रथ और
भास काल केतुआए पोर दल हैं ॥ एक सर
दुरयोधन मारो कापे धर अंवर मे जाहु भर
अंवर चंचलहैं ॥ और वान लगनन पाए ह
नूमान तन फूलकैं प्रवल भर गिरिसेय
चलहैं ॥ असनि से परे सुत स्यंदन तुरग
सेना साथ दुरयोधन भिलाय सही तलहैं
५१ ॥ मदलक्षण ॥ दोहा ॥ धन विद्या रूपोइ
व आसव जोवन जाल ॥ * ॥ उपजत है
मद भावतित कहति अलस गत वाल ॥
५२ ॥ मदको उदाहरन ॥ दोहा ॥ रूप छकी
जोवन छकी मदन छकी मृदु वानि ॥ प्रेम
छकी आसव छकी भई छविनि की खा
नि ॥ ५३ ॥ आन नैन गति लटकि लखि हो
त लद्दू वलि हार ॥ छकी छबीली नारि ह
रि आसव छकी निहारि ॥ ५४ ॥ स्वप्न लक्ष

रा॥ दोहा॥ स्वप्न नींद अरु अर्थको अनुभ
व जो कछु होइ॥ सुखदुख दा इक हेतु य
ह स्वप्न कहावे सोइ॥ ५५॥ प्यो आयो परदे
स्ते सुनि सपने की बात॥ पति आगम प्रति
बिंब सखि सांचु भयो यह प्रात॥ ५६॥ स
पन संग जागि दुख उठे पिय आगमन नि
हारि॥ सखी कलप तरु बाग है बीच अर
न्य उजारि॥ ५७॥ मन में मीलत जाद काहि
अस्मा इकांनिते होइ॥ स्वासा इक तहं दे
खिये सब इंद्रिय लय होय॥ ५८॥ सवैया॥
मांगते छूटी लसाट लटें लसें लर मोतिन
की लटकी च्वट बीली॥ बेसरि की मुकता
हल डोलत यों मनि या मन मेति रगीली
ढीली भुजा कीर पीठि छ्वे लपटाइ र ही
रति अंतर सीली॥ सोई अजो छतियां हेल
गी रहे ज्यों छतियां मन माह छबीली॥
५९॥ दोहा॥ निंदा को अवसान जो सो बिबो
ध मन आनि॥ दृग मर हल अग रादु अरु
जंभा इक इत जान॥ ६०॥ उघरत लियद
ग जुगल छवि निरखत नंद कुमार॥ खुल
त जलज जुग जागि जनु चुल बुलात अ

लिचार ॥ ६३॥ लज्जा कौ लक्षण ॥ दोहा ॥ हानि छि
दाई की मुहै सो लज्जा मनि आनि ॥ मुख
ना ख्रलि आदिक कछू होति तहां है वा
नि ॥ ६४ ॥ बेंदी पिय पद मे लगी लीन्हो अ
ली उतारि ॥ बूडि गई अब लोकि इत सकु
च सिंधु सकु मारि ॥ ६५ ॥ जो गृहादि आ
वे समय सुख दिक ते होन ॥ अप स्मार
भूपात लित फेन सोन अधि काल ॥ ६४
मोह लक्षण ॥ दोहा ॥ मोह कहत है ताहि
कों जहां ज्ञान मिटि जात ॥ विमल दुख
चिंतानि ते जहं अति विह वल गात ॥ ६५
खान पान पर थान सब ज्ञान बिसार्यो बा
ल ॥ यों भाही तुम कों निरख तुम निरमोही
लाल ॥ ६६ ॥ मति लक्षण ॥ दोहा ॥ नीरपं
थ अनु सारि है आदि अरथ निर धारि ॥
मति ताते कछु हास्य रस अस संतो ष अ
पार ॥ ६७ ॥ विन प्रयोजन मित्र जो सोई मि
त्र बखानि ॥ मित्र प्रयोजन ते जहै सतो मि
त्र किय मानि ॥ ६८ ॥ बिन मतलव को १
यार जो तासों कीज्यो प्यार ॥ मतलबलों यारी क
रै कहा मतलबी यार ॥ ६९ ॥ निद्रा दिक

ते होतहैं उत आलस अंग राइ॥ नैन अध खुले भांति यह बरनत सब कविराइ॥७०॥ आलसको उदा हरन॥ कवित्त॥ टूटे हार मि टैहैं सिंगार सब अंगनि पै कोटिन सिंगा रन की अंग भाल बाल की॥ चिंता मनि कहैं अहा कापै कहि जात गोरे कुंदुसोव दन पर आभा अलकन की॥ गुरजनि २ लखिहैं अगौ छले सलोनी यह लागी पी की लालित कपोल पल कान की॥ राति र ति रंग पति संग आज खुली कोनी खुली २ छवि आजु अध खुली पल कानकी॥७१॥ दोहा॥ काज माह उद्योग जो मंदसु आल स जानि॥ यहु आलस लछन गए विद्या नाथ बखानि॥७२॥ और कौरे को काम न नु कामहु सिथिल जुवाम॥ जो करिवे पि य संग सो प्रवल करावत काम॥७३॥ दुष निसा दिकनते संभ्रम अस्मिक होइ॥ ता ही सो आंवे सकवि बरनत मथनलोइ॥ ७४॥आवेसकोउदा हरन॥ सवैया॥ श्री वृष भा न कुमारि को संगमै केलि रची हरिजू जमु ना तट॥ दंपति कुंजके मंदिर मे बदलीव

नमाल बनीमुकता छूट ॥ भूखन वास गि
रे रति रंगमें पायो त्यों काहू के बोल को
आहट ॥ व्याकुल ह्वै हरि मेचक अंबर
राधिका ओढ़ि लियो पियरो पट ॥ ७५ ॥
चिंताको उदाहरन ॥ दोहा ॥ मिलन गई
कुल काल बन मिले मुई यह कालि ॥ नि
रखि तुम्हें नंदलाल जो सोचति है वह बा
ल ॥ ७६ ॥ वितर्कः लक्षणः ॥ दोहा ॥ जो
विचार संदेहते सो वितर्क यह जानि ॥ सि
र अंगुन देनहै जहीं चिंता मौन मन आ
नि ॥ ७७ ॥ संगो पन आकार को सो अव
हित्थ बषानि ॥ प्रस्तुति तजि कछु और
को कवि वो कथन सबानि ॥ ७८ ॥ आन
त लोका अलि न लगी कौन लालन को
न ॥ दोऊ एको ह्वै गए कहा मैनही मौन
७९ ॥ व्याधि वियोगा दिकन ते हासता
दिको निरधारि ॥ कंप ताप भूपात दूत २
आदिक यों जु निहारि ॥ ८० ॥ सवैया ॥
काहू की वात सुनैन कछू नकहै कहा
चिंताके बीच विचारै ॥ नैननि नीर भि
रासे भिरै कछू अंगन हूं की नवानि सं-

भोरे ॥ गात लगो विरहानल भूखन भोज न भूखन भौन विसारे ॥ सुंदर ऐसे भए नंद नंदन वारक तो मुख चंद निहारे ॥ ८१ ॥ दोहा ॥ मनके भ्रम उनमाद कहि काम भया दिक जात ॥ विन कारन रोदन हसन कार्य अनर्थक वात ॥ ८२ ॥ उछलति रोवति लखि रहति हसत कहति गोपाल या ऊपर अब और कछु सोन होइ नंद लाल ॥ ८३ ॥ जहां उपाय अभाव ते होइ चित्त को भंग ॥ सो विषाद लच्छन सुडत वढ़त तापके संग ॥ ८४ ॥ सवैया ॥ मोहि कछू नहि सूझि परै दृग देखतहू दिन होति अंध्यारी ॥ कैसे वचौं इहि आगम नो चहुं ओर लगे निसि चंद उज्यारी ॥ सीरे उपाइ चलैन कछू विरहागिनि १ व्याधि वढ़ै अति न्यारी ॥ होइ हौं कौन उपाइ रचौं यह जानै को प्रेम की पीर पियारी ॥ ८४ ॥ दोहा ॥ तरुनि वदन विधु सांचु निसि आगम रुचि अधिकात ॥ प्रात होत पति संगते छुटत छवि छुटि जात ॥ ८५ ॥ उत्कंठा लच्छन ॥ दोहा ॥ अ

भिलाखिता रथ लाभ मैं नहिं विलंब सहि
जाइ ॥ उत्कंठा जामें कछू ऋाकुलता ऋ
धिकाइ ॥ ६६ ॥ दूल हिनके विछिया वज
त घरमैं इत उत जात ॥ ज्यों ज्यों होइ वि
लंब ऋति त्यों त्यों ऋति ऋकुलात ॥ ८७ ॥
रंगा दिखाते होतु है थिरता कछू जहान ॥
स्वछंदता रचनादि को है चापल्य निदान ॥
ऋावति ढिग छूवतिन तन हसत दृगन निहारि
छरका पल ऋति मद छकी छकी छबीली नारि
इतिश्री चिंतामनि विरचिते कविकुलकल्पतरौ षष्ठ प्रकरणे
दोहा ॥ भाव हाव माधुर्य वहु हेला धर्म
वखानि ॥ लीला ऋौर बिलास कहि पुनि
विछित्त जो मानि ॥ १ ॥ विभ्रम किलकिंचि
त कह्यौ मुट्टा यत पुनि ऋानि । वहुरि कु
ट्टुंमित वरणिये पुनि विवोक बखानि ॥
ललित कुतूहल चकित गन समुझि
विहृत ऋरु हास ॥ चेष्टा ऋष्ठादस गनी
या शृंगार प्रकास ॥ ३ ॥ जो प्रतीप कोन्ही
यके साहितदर्पन माह ॥ दस रूपक मत
क्रम कहे विस्व नाथ कवि नाह ॥ ४ ॥ जो
वनमैं सत्यजु कहत ऋलंकार ए बीस ॥

दस रूपक मैं तिन कहि सुनहु सुकवि मग
हंस॥ ५॥ साहित्य दर्पन मैं कहे आठ औ
र अधिकाइ। विस्व नाथ सत कवि कह
त ते अब सुनहु बनाइ॥ ६॥ भाव हाव
हेला प्रथम तीनौ एकै जानि॥ सोभा कां
ति कही वहुरि दीपति और बखानि॥ ७॥
पुनि माधुर्य प्रगल्भता औदा रज गनि
और॥ धीर्य सांत अज नाम यह कहत
सुकवि सिर मौर॥ ८॥ लीला और बि
लास कहि पुनि विछित्ति बषानि॥ वि
भ्रम किल किंचित बहुरि मुहायत पुनि
जानि॥ ९॥ वहुरि कुट्ट मित बरनियै पु
नि विवोक विचारि॥ चिंता मनि कवि क
हत यों सज्जन लेहु विचारि॥ १०॥ ललि
त विहृत दस ए कहे ए दस रूपक माह॥
आठ और बरनै उतै विस्व नाथ कवि ना
ह॥ ११॥ तपन मुग्ध विक्षेप पुनि बहुरि कु
तहल मान॥ हसित चकित अरु काल
पुनि आठ दस ए जानि॥ १२॥ इत प्रता
प सद्दीपकै कहे अठा रह भेद॥ तिनकै
लखन उदा हरन बरनत सबै अखेद १३

से सब जोवन संधिमें मैनके रचै विका
र॥ भाव वरन यों कहत हैं विधा नाथ प्र
कार॥ १४॥ कोकिल कूक सुने उमंगे स
न ए पीछे लिष्यौहै॥ दोहा॥ भ्रू नेत्रादि
वि कारजो कछु उपजे मन माहि॥ कछू
सलक्ष विकार वह भाव हाव है जाहि॥
१५॥ हौं निकरौ दिग है सुयों अंगन पु
लक जनाइ॥ ॥हेरि विहारे दृगन सों
चली बाल मुस क्याइ॥ १६॥ जहां देह
दृग भौंह मुख इंगित अति अधिकात।
अधिक प्रगट मन भावते हेला सो क
हि जात॥ १७॥ सवैया॥ करसों कर जोरिकै
आनन इंदु कौं बंदु लला पर वेख वोर॥
अंगिराइकै अंग दिखाइ दुरै मन मोहन
को मुसक्याइ हरै॥ मृग लोचनी नैन वि
लासनि सों पियकै हिय भीतर मोद भरै
मन मोहन मोहन भावनही सो बुलावै वि
ला सिनि कुंज घरै॥ १८॥ दोहा॥ विना वि
भू खन मधुरता सो माधुर्य वखानि॥ स
कल अवस्था मै सदा लसे छविन की खा
नि॥ १९॥ कवित्त॥ ओठ मनो रवि बिंय प

कैधों मनो दामिनि दीपति अंग निहारे ॥ *
वार वडे वडे नैन लसैं मनो अंबुज पातनि
भोर सुधारे ॥ पून्यो निसाके काहा नखता वलि
मैं मन मैं यों विचार विचारे ॥ ए अकलंक
मयंक मुखी तेरे अंग विना ही सिंगार सिं
गारे ॥ २० ॥ धर्म लक्षण ॥ दोहा ॥ कुला मिला
दिक भाववन सोधीरज मन आनि ॥ पिय
को जो अनु कारन सो लीला नाम वखानि
२१ ॥ कवित्त ॥ पीरी पीरी होति लागे सुर सुर
भिव यारि सीरी पीरी चंद्रा काहू पे अचल
चित राखै जू ॥ चिंता मनि काहे मोहि तात
मात व्याहि देडु देवतानि सेदु एही वात अ
भिलाखै जू ॥ खान पान छांडे निज देहनम
म्हारे वह काहू सो वात निज मनकी न
भाखै जू ॥ ऐसो हाल करि वह विरह वि
हाल लाल केहू कुल वाल कुल कान पै
न राखै जू ॥ २२ ॥ लीला को उदा हरन ॥ *
कवित्त ॥ सांवरे स्वरूप मे मगन मन मृगनै
नी मृग मद अंग राग अंगमे धरति है ॥ २
वरह मुकुट धरि तन पीत पटका रि ललि
त लकुट हाथ हिरा हरति है ॥ चलि चं

द मुखी मंद समद गयंद गतिमोहि है। कहि मन मोदनि भरति है॥ छबिनि की खानिप्रे म छकि यौं छबीली कान्ह राधिका तिहा रौ अनु कारन करति है॥ २३॥ दोहा॥ यौंरे ही आभरन जहं अधिक रम्यता होइ॥ सो विछित्तवखानि यै कहत सुकवि सब कोइ॥ २४॥ काहेकौं भूखन धरति पुहप मृदुल वपु माहि॥ नायक नायका जीति सब ए क नाक मुक ताहि॥ २५॥ विलास लछण॥ दोहा॥ पिय के देखत अंगमे इंगित जो क छु होइ॥ तत कालिक सु विलास लखि बर नत हैं सब कोइ॥ २६॥ ललिता जु केललि त पर परे अचा नक नैन॥ नभ मग है कुव ले अवलि सर वर से जनु सैन॥ २७॥ प्रगटी नाम भरा चपल अंचल हगनग हार॥ सुंद रि मनि सो पानि मग उतरो रूप उदार॥ २८ कवित्त॥ आजु अब लोकी एक अलवेली बाल पुह मी तलमैं आय उरबसी बिल स तिहै॥ अजौं वा छबीली की वदन मयंक छ वि लोचन चकोरन कौ सुधा बरसति है॥ भी ने पट ओटकी करनि ताको भेदिकारि कै

सी बार चंद्रिका बाहिर निकसति है ॥ मृग
लोचनी की वह कछु अचानक हंसि हेरि
कै मुरनि मेरे मनमें बसति है ॥ २९ ॥ विभ्र
म लक्षण ॥ दोहा ॥ आनद अंग आभार कौ
अंग अंग आवेस ॥ त्वरित समै विभ्रम य
है बरनत सुकवि सुरेस ॥ ३० ॥ सवैया ॥ देख
त कौन हसै अवलोकिधौं आली कहा य
ह वेख कियो है ॥ कौ करि है चित जायो च
है मन मोहि गयो इहि भांति हियो है ॥
नूपुर हाथन पाइन में पहुंची कटि हार
लपेट लियो है ॥ तेरे कहा उर नैन महाउ
र अंजन ओठन बीच दियो है ॥ ३१ ॥ दोहा
क्रोध आसु अरु हास भय आदिक नाहं
इक वार ॥ किलि किंचित तासों कहत स
व कवि बुद्धि विचार ॥ ३२ ॥ कवित्त ॥ दंपति
अनूप वैस सुरति अरंभ समै ते दोऊ रस
रीति मैन सरसति है ॥ तरुन चढ़ाइ त्यौरी
भूठै भिभि कोर कंप मनि मन छतिया
की छुवनि सुहति है ॥ वहिया गहत पिय मा
न तिन प्यारी भारी कोपते निहारि टेढ़े
नैनन करति है ॥ ❋ ॥ नहियां करतिनीवी र

खोलति नवेली वाल मेवति विसाति मर
माति मुसक्याति हे॥ ३३॥ दोहा॥ जहं पि
यकी बोतें सुनति भाव प्रवाप्ति होइ॥
ताहि कुदृ मित काहत हैं यों बरनत सब
कोइ॥ ३४॥ सवैया॥ कान्हकी रूपको पावै
नवे विधि कोटि अनंग नन कोप बिचारै
मैसे कान्ही सुनि वै उत औसी भई वह वै
मौलि आपु निहारै॥ रोम उठे दृग मूदे मे
नीर सों कीन्हो वधू मन मोह बिहारै॥ मो
हिगई मन मोहन जू मन मोहन मोहन
मंत्र तिहारै॥ ३५॥ दोहा॥ प्रिय कर तन म
रदनहु मन सुख पावै वर नारि॥ फिरि ह
ग सिर कंपन करै सो कुट्ट मित विचारि
३६॥ कुट्ट मित को उदाहरन॥ सवैया॥ का
हू देखति चिनहू त्यों जित में तित आनि
अकेलि ये ठाढ़ी भई॥ विहसौहैं से नैननि
से ननिसों मनको मनि प्रीति भई जु नई
कुच गाढ़े गह्यो कर खोचकमे भिभक ९
कारत हाय अनूप भई॥ हिय पीरी वहेति
य पीर जनावे कछू सिसकी मुसक्याइल
ई॥ ३७॥ दोहा॥ ईठहु को अप मान जोवा

रै गरव गहि नारि ताही को विबोक तहं बरनत सुकवि विचारि ॥ ३८ ॥ सवैया ॥ बसउठौनमैं डीठ भये लगे जोरन जो अखियांन हठाई ॥ मोसों सुनौ दुहुं वंसकी प्रीति सुलागति वंसकी रीति सिठाई ॥ माखनकीन मिठाई भयो सुख लागे जुमांगन ओठ मिठाई ॥ ऐसनु ढोटा जसो मतिके अब छोड़िदे आजुते ढीठ ढिठाई ३९ ॥ दोहा ॥ ललित अंग विन्यास जो ललित कहावे सोइ ॥ चिंता मनि कवि कहत यों सुनौ सुकवि सब कोइ ॥ ४० ॥ कवित्त ॥ रासको विलास देखि चिंतामनि धुनि सुनि मेखला की भानक नूपुर बिछियानकी ॥ चंद्र मुखी चंद्रिका पसारी आनि अवनि मैं देखत जो धन्य दसा ताहीके जियनकी ॥ तुम्हे देखि प्यारी ऐसी मगन भई है जाते दरकि गई है तनी अगीया सियनिकी ॥ देखो लाल ललित छबीली ऐसी नीके चली आवति जु पीकी करे दीपति दियनकी ४१ कुतूहल लक्षन ॥ दोहा ॥ रम्य वस्तु के ल

वन को जो चंचलता होइ॥ताहि कुतूह
ल वरणिये यो वरनत सव कोइ॥ ५२॥ *
कवित्त॥वाजे जव वाजे महा मधुर नगर
वीच धुनि सुनि नगरेकीभललकि अकु
लाईहे॥ पौली मह लनि मनि मेखलाभा
नक संग महा मनि नूपुर निना दनकी
भाईहे॥मीठे मीठे सुरनि जो वोलति मृगनैनी
तहा मुखते निकसि गंध दूत उत छाई
हे॥ *॥ पहिलेउज्यासन जोभूखन मयूखन
की पाछेते मयंक मुखी देखन को आई
हे॥५३॥दोहा॥पीतम को आये कहू भ
य संभ्रमजोहोइ॥ चिंता मनि तासो चकि
त वरनत हैं सव कोइ॥ ५४॥ तिय संगसो
भ अचानका गरुड वाह का गाहि॥स
खी चकित अतिही भई अंचल लोच-
न-चाहि॥५५॥वोलन हूके समय मै लाज
न वोलन देइ॥ विहत कहतहैं ताहिसों
चिंता मनि गुर सेइ॥५६॥सवैया॥ पग
भूमि लखे वह ठाठी ही द्वार विलोकत मो
ह हिये उलही॥ विह सौंहें से गोल कपो
ल किये सो सकोचन लोचन नाइ रही

उघरो अधर लगि बोल कछू पर गायोन वोल यों लाज गही॥ सुधि आवन ही का सकी छतिया जो कछू दतिया को लिखन कोही॥५७
दोहा॥ जोवन के आगम समै विन कारन जो हास॥ हसति नाम हो तियन को लसत अनूप विलास॥५८॥ उदन चढ़त जोवन सखी प्रगटो हास प्रकास॥ लो नीको आयो भाल कि नैनन ललित विलास॥५९॥ रूप भोगता पुराय ते सोभा अंग सिंगारि॥ मनमथ उत्थापित सुतो कांति कहति निरधारि॥५०॥ कांतिहू को विस्तार वो सो दीपति पहिचानि॥ चिंता मनि कवि कहत है रस ग्रंथन को जानि॥५१॥ सोभा कांति दीप्त प्रभा धुर्य को उदाहरन॥ कवित्त॥ वैसकी उठौन ठौन रूप की अनूप कान्ह अंग अंग औरै कछू वोप उलहति है॥ चिंतामनि चंचला विलास वो रसाल नैन मदन के मद ओर आभा उमहति है॥ कुंदन की वेली सी नवेली अलवेली वाल कैतिक गरव की सो मौरता गहति है॥ उमकि झरोखे तुम्हे चाहिवे को चंद मुखी धोसहू में चंद्रिका पसारति रहति है

५३॥ संभ्रम॥ संभ्रम को साहित्य जो साघ्रा
गल्भ बखानि॥ चिंता मति कवि कहत है
सुकवि लेहु पहिचानि॥ ५४॥ आलिंगित
अति नाह को आलिंग न को देत॥ चुंबन
चुंबत जो तिया पियहि वास करि लेत ५५
सदा खिले जो नारि में औदार्य कहि सोइ॥
ताको हेत उदा हरण सुकवि सुनो सब को
इ॥ ५६॥ वह मेरो मृग लोचनी नित उठि दे
खति रोष॥ परम सरल मति सुंदरी कबहु
करति न रोष॥ ५६॥ उक्ते जो साहित्य दर्पन
के भेद तिन को उदा हरन॥ दोहा॥ प्राोष्व
स्वो बिरह ते तन संताप जु होइ॥ तपनि क
हत हैं ताहि सो विश्वनाथ कवि कोइ ५७
सवैया॥ बामनि मंदिर को छवि छंद छपा
कर की छवि पुंजन पोख्यो॥ पाइके स्व
त मनो हर चांदनी चापु लै मैन महा बल रो
ख्यो॥ संदरि के मुख चंद को छोडि चकोर
न चंद मयूखन चोख्यो॥ चंद्र सिलानि ते
नीर भर्यो सबै तिय के बिरहा गिनि सो
ख्यो॥ ५८॥ दोहा॥ पीतम को अब लोकिबे
रहे जहां नहि ग्यान॥ उपजत बिछेप तहांव

र नत सुकवि सुजान ॥ ५९ ॥ सवैया ॥ लो
ग लखै नंद लाल विलोकत वाल कहा
यह हाल भई है ॥ तोहि विलोकत मोहि
महा दुख मोहि कहा इहि भांति गई है ॥
आनि धरी ढिग मै गगरी अपनी कत
ए यह छोड़ि दई है ॥ ताहि कहा मयो मे
री अरी गगरी सिर छूछी उठाइ लई है
६० ॥ मद को उदा हरन है आये है संचारी भा
वन मे सोई जानवो ॥ दोहा ॥ तासो कहियत
मुग्धता कवि जन मनमे आनि ॥ जहां पी
व सों जानि तिय कहे आपनी वानि ॥ ६१
सवैया ॥ ह्वां इनको विवहार लख्यो महि
मंडल और प्रवीन कहाती ॥ ह्वां उते उत्तर
है को सके कहै वात सखी इन्है कौन स-
काती ॥ कौन पलै विटपी मुकता फल
वोलो हहा कहि यों मुसकाती ॥ जावै जवै
पियके निकट तवहीं एसदूजो अजान
ह्वै जाती ॥ ६२ ॥ दोहा ॥ नायक के संग खे
लिवो केलि कहावे सोइ ॥ विश्व नाथ को
मत कहत समझ लेहु सव कोइ ॥ ६३ ॥
झूलति नभ दामिनि वधू जलद भए ढ्ज

राज॥ कान्ह कुवर की बनी की काहा बनी छबि आज॥ ६४॥ इति श्री चिंता मनि विर चिते कवि कुल कल्प तरौ सप्तमं॥

प्रकरण

दोहा॥ जामे पाई रति सुतो मनकी लगन अनूप॥ चिंता मनि कवि कहत हैं सोसृं गार सरूप॥ १॥ सुतो एक संजोग है विप्र लंभ कहि और॥ द्विविधि होत शृंगार यों वर नत कवि सिर मौर॥ २॥ जहां दंपती प्रीतिसों विलसत रचत विहार॥ चिंता मनि कवि कहत है यों संजोग सिंगार ३ शृंगारकोउदा हरन॥ कवित्त॥ कंचन की सा कारन संजुत ललित मंच नग जडितजा मै उलहै मरीचवर॥ वैठी प्रान प्यारी सं ग राधा सुकुमारी जाके चिंता मनि अंग गन विलास है अनंग सर॥ कोऊ मृगनै नी लिये हाथ मैं चमर चारु काहू वेज राऊ राजे पानन कोड व्या कर॥ निरमल मनि मय महल मैं खेलै चंदू वदनी झु लावै लाल झूलत हिंडोले पर॥ ५॥ तीसरो उदा हरन॥ सवैया॥ चंद्रिका सो

थकियो सिगरो जगसोय्यके ऊपर दंपति सोहैं॥ दूधके फेलसी सेजके ऊपर रूप अनूप प्रभा मन मोहैं॥ ह्वां पिय प्यारीके च्वासजुरे दृग दूर दुरेही सखी जन जोहैं॥ स्याम भयो ससि देखि मनो छिय दंपति पंच जुरे दृत कोहैं॥ ६॥ कवित्त॥ चैतकी चांदनी केथौ चंद अव लोकनिते छीरनिधिछिरकै पूरन पूर उमंगे चिंता मनि कहै मन आनंद मगन ह्वैकै विहरत दंपती परम प्रेम सौं पगे॥ अध खुली अखियां सुरति सुखरसवस मानो भोर अध खुले कमल नमें खगे प्यारीके सकल तन स्रम जल विंदु सोहैं कनक लता मैं मुकता फल मानो लगे॥ ७॥ चुंवन आलिंगन हिंदे आदि विविधि विधि भोग॥ चिंता मनि सृंगार मे सो रचो संजोग॥ ८॥ जहां मिले नहि नारि अरु पुरुष सुवरन वियोग॥ विप्रलंभ यह नाम कहि वरनत सव कवि लोग॥ ९॥ विप्रलंभको साधारन उदा हरन॥ ज्यों ज्यों जलु डारत जलद त्यों त्यों जागत जागि॥ सम उपाय विरहित विरह यह पानी की आगि॥ १०॥

दोहा ॥ सो पूरब अनुराग अरु मान प्रवास
बखानि ॥ पुनि कहिये करुनात्मक सुजन ले
हु मन आनि ॥ २२ ॥ होइ मिलन ते प्रथम ही
सो पूरब अनुराग ॥ यामैं बरनन करत सब
रस कवि दसा विभाग ॥ २३ ॥ पूर्व अनुरा-
ग को उदाहरन ॥ दोहा ॥ लखत सुधा सी
लव लगी सब जागति ज्यों आनि ॥ बिसेषि
खा मिलि की भई वह मुख की मुसक्यानि ॥
२३ ॥ प्रेम प्रीति अभिध्यान को पुनि मन सं
गम जानि ॥ पुनि संकल्प बखानि ये पुनि
प्रवास उर आनि ॥ २४ ॥ बहुरि जागरन बर
निये कृसता और विचारि ॥ अरति लाज
को छोडिबो पुनि सज्जन निरधारि ॥ २५
पुनि उनमाद बखानिये मूर्छा और बखा
नि मरन अंत की दसा ए बारह भांति सुजा
नि ॥ २६ ॥ प्रथम बरन अभिलाष पुनि चिं
ता चितमे आनि ॥ बहुरि बखानौ गुन कथ
न बहुरो सुमति बखानि ॥ २७ ॥ पुनि उद्वे
ग प्रलाप गनि पुनि उन्मादो मानि ॥ व्या
धि और जड़ता कही मरन अंत मे जानि
२८ ॥ काहू ग्रंथ करता कहे समंपन दसा

भेद ॥ इनके लखन उदाहरन वरनत सुनो अंबद ॥ १९ ॥ आनंद मोंदरसन जुहै चहु प्रीति सों जानि ॥ मन लागन मन संगग नि चिंता मनि मन आनि ॥ २० ॥ जुहै म नोरथ दृष्टमै सो संकल्प बखानि ॥ वातें प्रिय संमध्य को सो प्रलाप मन आनि ॥ २१ ॥ संज्वर तनको ताप गन मूर्छा ज्ञान अभाव ॥ मरन वरन वेनाहिना सोतो प्रा न अभाव ॥ २२ ॥ नैन गन को उदाहरन ॥ दोहा ॥ रूप परस पर अटन चढ़ि निरख त स्यामा स्याम ॥ हिम गिरि वंदर जेठको भरि दुप हर को घाम ॥ २३ ॥ मन लगन को उदाहरन ॥ सवैया ॥ उलहै नद नंदन के तनमै छवि नील घटा घनकी निदरै विलसै मनि कुंडल कानन मे मुख चंद मयूख पियूष झरै ॥ अब लोकन कोत रुनी लल्कैं पहिरे मुकता हल मालगरे ॥ ॥ पियरो पट मोर किरीट लसै नट नाग र मोमन ते नटरै ॥ २४ ॥ दूसरो उदाहरन ॥ सवैया ॥ संग सखीन के आइ गली हंसि वाल अचा नक को विलवैनी ॥ आइ

गए उत लाल लखी छबि ज्यों कछु चंद की दीपति पैनी॥ ज्योंही चले दृग वार भई जु कै कोरेकटाक्ष की कोरै जु पैनी॥ प्रेम सु धा सीत पाकि गई जु लिलाग गई मनमै सुग नैनी॥ २५॥ सा पाल्य को उदा हरन॥ सवैया॥ जो कबहू वृष भान लली कहं न्यौति जसो मति माइ बुलावै॥ चित्र बनि चित्रित गेह बिलो कानि सोमनि भौनके भीतर आवै॥ मोहि बिलो कत ही हंसिकै भुज चंपक माल गरे पहिरावै॥ लागी रही हियरा मै यही अब जो हियरा हि यरा मे लगावै॥ २६॥ आनि कढै कबहू ये गली कढि वैो निरखै गुर लोग स को चन॥ त्यों धरकै खरको हियरे इम जानतिहैं मर जाइगी सोचनि॥ कुंडल लोलह सोहैं कपो लन नंद लला लखि ते दुख मोचन॥ पाऊं कहूं सखि ठौरइ कंत हो देखी जहां हरिको भरि लोचन॥ २७॥ प्रलाप को उदा हरन॥ दोहा॥ काह कहत कैसे लखै कैों बोलत नंद लाल॥ पुनि पुनि बातें राबरी यों बूझति ब्रज बा-

न॥२९॥ दूसरो उदाहरन॥सवैया॥रूपअ
नूप कदंबके कानन कुंजनि केलि कलो
ल कलाको॥काम करोर की मूरति स्या
म की धीरज कोन कहा अबला को॥
मोर किरीट गरे बन माल बिसारि सबै
सखि रंक पलाको॥मंद हसी मुख चंद
मनो हर नंदको नंद गुबिंद ललाको२९
दोहा॥चंद मंद अनु मत सरनि मारत
मदन अराति॥मोहन सों अखियां लगी
अखियां लगी नराति॥३०॥कूमती को
उदाहरन॥दोहा॥ओकार मूलन मेंगडे
मनि कंकन हैं पात॥तुम्है देखि जानन
उन घरहि जात गिरि जात॥३१॥अर
ति को उदाहरन॥सवैया॥तीनो तिलो
क संघारन अन्न धरे हर आपने अंगस
हाई॥जामे वडी विष माई हती त्योंहीं
ताको दई थल माह उचाई॥कंठ लिला
टमे सीसमेई सभ ली यह दाहका पां
ति वसाई॥तीदे हला हल आगि काला
नि मों जोरेसु कौन वाला निधि माई॥३
२॥व्रीडा त्याग को उदाहरन॥कवित्त॥

चिंता मनि स्याम जूको सुंदर वदन पर ह
मैंहैं विकानी कौन यामैं छल छंदहै॥ का
हौ कुल कानि जाति कौनपै निवाही
जाइ देखतुहै याही ताहि लाग्यौ प्रेम
फंदुहै॥ मधुर कपोलनि मधुर मुसक्या
नि माई मधुर विलोकनि मधुर मुख चं
दुहै॥ जैसे सब कालनि अमृत मय चंद
ऐसे निर्भर अनंद मय नंद जूको नंदुहै
३३॥ संखर को उदा हरन॥ कवित्त॥ मंड
प मृणाल जल जालन के पातन को से
जहू मै विछे जल जातन के पातहैं॥ का
हे कवि चिंता मनि विकल विरहिनी को
सीतल अपार उपचार अधिकातहैं॥
चंदन अगर ताके जलकी वहाई नदी
सिकता कपूर चूर अति अव दातहैं॥ ए
ते परपूति फल विरह वियो गिनि के पी
रे पीरे होत पेन सीरे होत गातहैं॥ ३४॥
दोहा॥ ॥ विमल वदन की प्रकासते वि
रह महा दुक पाइ॥ हनी चंद तीखनि कि
रनि परी वालमुरझाइ॥ ३५॥ प्रथम वर
न अभि लाष पुनि चिंता म न मे आनि

बहुरि बरनि यै गुन कथन पुनि उद्वेग ब
खानि॥ ३६॥ पुनि प्रलाप उन माद मि
लि व्याधि सु जड़ता होइ॥ इसो दसा स
गनत हैं सुकवि ग्रंथ कर कोइ॥ ३८॥ र
म्यो वस्तु अरम्य सम दुःखद यह ह्वै जाइ
चिंता मनि कवि कहत हैं सो उद्वेग ग
नाइ॥ ३९॥ वचन अनर्थ प्रलाप कहि
उन्माद वृथा व्यापार॥ व्याधि सु सरत्वा
दिक बरनकविजन बुद्धि विचार॥ ४०॥
जड़ता चेष्टा रहित तनु मरनन बरनो
जोग॥ चिंता मनि कवि कहत यों कह
त ग्रंथ कर लोग॥ ४१॥ अभिलाख कौ
उदा हरन॥ कवित्त॥ नैननि की मुसक्या
नि अनूप सु नैननि बीच सुधारस नाऊं
या जग ऊपर मै अपनो यह तो धन
जीवनि भाग गनाऊं॥ श्री गरग नाथ
अभीष्ट के दातहि वार अनेक मैं शम्भु म
नाऊं॥ ०॥ वार कहो जु विलासिन को मु
ख चंद विलास बिलो कन पाऊं॥ ४२॥
ज्यों निसि वासर चाहतु वाहि सुतो कब
हूं वह चाह धरै गी॥ हेरि हसौंहे कटाक्ष

न सो मृग लोचनी मो ढिग आनि ढरैगी॥
या निरदै निसा नाथकी ए घनी रातन के
घन ताप हरैगी॥ आनन रूप कला कवि
ता निशा नाथ सों मोहि सनाथ करैगी॥
५३॥ सवैया॥ मोहि कछू नहिं सेरव परै
दृग देखत हू दिन होत अंध्यारी॥ केसव
चौं छुहि आगि मनो चहुं ओर जगी नि
सि चंद उज्यारी॥ सीरे उपाइ चलैं न कछू
बिरहा नल व्याधि चढ़े अति न्यारी॥ हा
हू मै कौन उपाइ करौं वह पावै कों प्रेम
की पीरको प्यारी॥ ५४॥ स्मृत का उदा ह
रन॥ सवैया॥ मो हियते निसरैन सुक्यों बि
सरै छबि रंग अमोलनि की॥ स्रुति मै दिल
सैं वर कुण्डल लोल जु सोहत सुन्दर बोलनकी
लगि यों नलहै लगि संजुत पंकज कांति
कटाछ कलो लनकी॥ मुस क्यानि मैं दामि
नि सों दमकै चमकै मुख ओप कपोलन
की॥ ५५॥ पानीन पीवति पानन खात स
वै तनको व्यवहार निवैरे॥ सुंदरि तेरे स्वरू
प को सोरत बोलैन बार पचासक टेरे॥ चं
द्रिकासी मुख चंद हसी कछू सीरे भये पु

लके तनु हेरै॥नैननि नीर भिराति सेरै वि
सरैन दिलास विलासिनि तेरै॥५६॥ना
यका की स्मृत॥सवैया॥मोहीहै ग्वालि गु
पाल लखै ब्रजकी वनिता कछु भेदन पावै
बोलैन बोल ठगी सी लखै मन मैन के बा
न हियो अकुलावैं॥रोमनि अंग कदंवका
ली मन मै घन स्याम की यों छवि छावैं?
सोरति मंदकियो हसिकै उमगें असुवां अ
खियां भरि आवैं॥५७॥गुन कथन॥पेखत
ही प्रगटी मनको मनि वैनी महा विषना
गिनि गाई॥ताप चढाइ गयो निरखे सुर-
ची तरुनी मुख चंद ठगाई॥नील सरोरुह
मैनके बानन नैन निसारिकै पीर जगाई॥
आगि अंगारके रंगन अंगनि कैसी अनंग
की आगि लगाई॥५८॥उद्वेग॥सवैया॥
मैनके बान गनै विष संजुत बागके फूल
नि भोर विहारे॥चंदउतै निसि मे लखि-
कै वाहै जोर जगी जग अगिलि हारे॥होत
नहीं वाल व्याकुल होत हित उप चारनि
के पचिहारे॥ऐसे भये मन मोहन लाल
विला सिनी वाल वियोग तिहारे॥५९॥

ताछिन तोहि विलोकि विलासिनि ताछि
नते कछु औरन भावै ॥ तेरियै बात सुहा
ति सदा पुलकै कोउ तेरोजु नाम सुनावै ॥ ने
क नहीं कल मोहन लालहि यो सव लंक
मयंक सतावै ॥ तौ वनि आवैजो आनन
तेरो अरी अकलंक मयंक जिआवै ॥ ५०
नायका को उदाहरन ॥ वीछी को डंक म
यंक किधौं आगे लिखेहै प्रलाप ॥ सवै
या ॥ मूरति तेरी मनोहर मै रचि बोलत
यों कछु मोहन प्यारे ॥ आवैजू वैठो किते
ही किते चली भाग खुले कछु आजु
हमारे ॥ बोलत क्यों यह संक गई जो क
है मृदु मंजुल नाम तिहारे ॥ बोलत क्यों
हौ जू वूझै जवै लखै वैन कछू कै कछू कहि
डारे ॥ ५१ ॥ उनमाद ॥ सवैया ॥ माया म
नोज की मोहन के बहु चार रचे बहु रू
प तिहारे ॥ सामुहे आवति मूरति पै परि रं
भन को भुज दंड पसारे ॥ हाहा करै मुख चुं
वन मांगै हसै है कपोल लसै छवि वारे
ऐसे विलासिनी राधे प्रेम पै वावरीसी
है कछू वार डारे ॥ व्याधि ॥ सवैया ॥ जे

मनि कंकन गाढे गड़े कर मूलन ह्वै छल
काढू निकाई ॥ तैगिरि भूमि परे नहि जा
नत ऐसी भई तनमे दुबराई ॥ नीरीन नै
ननि नीद कहू निसि पीरी कपोलनि मे
परि आई ॥ तेरी बिलो कनि पाइ बिला
सिनि ऐसी दसा मन मोहन पाई ॥ ५३ ॥
छूटि गयो हसिवो सब खेलिबो लिबे को
भयो आजु निबेरो ॥ ज्ञान कछून रह्यो
उनको अब ऐसी बियोग की आपदा
हेरो ॥ अंग भली नहलै नचैले अनमे
रवे घट्यो यह साहस मेरो ॥ ऐसी दसा
सुनि मोहन लाल की बैध मन होत द
यालन तेरो ॥ ५४ ॥ दोहा ॥ कबहू मरन बर
निये जीवन कबहू होइ ॥ तौ पुनि वाको
ज्याइयै यो कवि सिक्षा कोइ ॥ ५५ ॥ दं
पति की रिसि परस पर मान बखान्यो
जाइ ॥ प्रनय ईर्षा भेद सौ द्वै विधि ता
हि गनाइ ॥ ५६ ॥ प्रनय मानलः ॥ दोहा
होत प्रनय की कुटिल गति बिन कीन्हे
जो रोस ॥ दंपति कोइक सेजमे प्रनय
मान बिन दोस ॥ ५७ ॥ सवैया ॥ तू मन

दर्पन अरु विचित्र भलीहि जो मेरी काही सिख माने॥ जाहि चहे सो सदापति विं वित तोमें कहा तू रहे अकुलाने॥ बाहिर कीन रुखाई काहू जुपे अंतवाहि भ ले पहि चाने॥ जो मुस क्यानि में लीन रहे तो तू आप को ताप काछू नहि आने ५८॥ बात कही अपने मनमें मुख वाहि रके हम हू को सुनाइ॥ ताकोंन उत्तर दी जिये आपु तो होति गुमानहि की अधि काइ॥ जानेको कौन सो बोलत को जुहे काहू के अंतर की गति पाइ॥ जाकी चु भी मुस क्यानि है चाहिय तासो सु कैसे करेगी रुखाइ॥ ५९॥ दोहा॥ प्रनय मान गत दुहुन को ईर्षा मान जु होइ॥ सुतो बरनिये तियन में यों बरनत सब कोइ॥ ६०॥ और तियाके देखते करै रोस जो ना रि॥ लघु मध्यम गुर भेद स मानस त्रिवि धि विचारि॥ ६१॥ कौतुक छूटत मान ल घु मध्यम कीन्हे सोंह॥ गुर छूटत पाइन परे फेर चढति नहि भोंह॥ ६२॥ लघु मा: सवैया॥ म न मान कियो ह ष भान लली

अनतें अव लोकत लाल लहे॥ उत आ
इ जुरी सखियां सिगरी पिय आयो स
खी इक वीज कहे॥ दृग मूंदि रहो चित
रा जु पे मान लला हसिते दृग मूंदि रहे
मुस क्याइ कै राधि का आनंदसों भुजमा
लसों लाल लपेट गहे॥ ६३॥ मध्यममा
न। दोहा। प्यारीकी पदवी हमें दीन्ही आ
जु गुपाल॥ तेरीसों लाइन उर समुभि
और तू वाल॥ ६४॥ गुरु मान॥ दोहा॥ ह
सति कहा मोपे निरखि लखि लखिइ
नके अंग॥ लहे और तिय नेह सों नेह
हमारे संग॥ ६५॥ सवैया चैतको चंद औ
मंद वयारि वहे अति सीत सुगंध भई
दून॥ जाको घनी लल चाहत हैं वाल सो
लाल सलोनो परयो मति पाइन॥ जोवन
के दिन पाहुन हैं पछ ताउगी पीछे के
मेरी गुसाइन॥ केलि करौ मिलि मोहन
सों कहा ठीक जुठानती हो ठकु राइन॥
६६॥ दोहा॥ मान हरन के कारन को वर
ने छयो उपाइ॥ छोडत हुन तेरो सति
य ऐसे सदा सुभाइ॥ ६७॥ माना पमानो

भेद ॥ दोहा ॥ साम भेद अरु दान कहि
त्योंही पुनित बखानि ॥ बहुरि उपेक्षा कहि
तहें फिरि रस अंतर मानि ॥ ६८ ॥
मधुर वचन सो साम कहि भेद सखी
की बात ॥ दान व्याज भूखादि को प्रनि
त चरन को पात ॥ ६९ ॥ सामा दिका की
छीनता होत उपेक्षा चित्त ॥ त्रास हरख
इनआदि दे कहि रस अंतर मित्त ॥ ७०
सम्यापाइ ॥ कवित्त ॥ बैन सुधा तुही सी
चै विलासिनि मोमन मोद लतानिकी
क्यारी ॥ मोहि कहा कल होत कहूं मनि
जो पल एक रहे जब न्यारी ॥ मेरियेनैन
चकोर छके मृग लोचनी तो मुख चंद
उज्यारी ॥ जो कछु जानो सु जाइ कहौ तु
म मेरेहो प्रानन ते अति प्यारी ॥ ७१ ॥ क-
वित्त ॥ चिंता मनि जोपै तुम्हे उनसोहै र
सवतौ काहेको उनको मनु बांध्यो प्रेम
फंद सो ॥ वेतोहैं बिलखै मुख तुम बिनतु
महूं तौ दुखित हौ विरहित आनंद को
कुंद सो ॥ हमतौ जानति एहो तुम्हें हैं स
यान देखे पूरन अयान मान ठान्यौ नंद

नंदसों॥वैतुमसैं मिली तुम इनसौं मि
लेहीखुल्यौ चंदजैसेचांदनीसेचांदनी ज्यौंचंद
सौ७२ चिंतामनि होइ कोऊ नीकी अने-
सी कवित आगे लिख्यौहै॥दोहा॥सो
तन के कुच दुरग तजि पिय मन मिल्यौ
निदान॥अव मानि रुका पर चढ़ी कार
री भौंह कमान॥७३॥दानो पाइ॥कवित
मानसौं निहारि रुख भानकी कुमारि-
का हिल्याए नंदलाल गूंदि कर माल
लीकी माल॥आनि अनवोली केमरे मे
पहिराई कह्यौ वैसी नीकी लागी प्यारि
दुति उलही विसाल॥नेक मुस काइ ऊं
चे हेरि फेरि नीचे हेरि पुलकित अंग २
चिंता मनि यों लखे गुपाल॥चिवुका क
पोल चूंमि चूंमि गहि कंठ भूम भूमि हं
सि लाल भुज माल भरि भेटी वाल॥७४
प्रनति को उदा हरन॥दोहा॥छोडि मान
पाइन पर्यो जो पिय कह्यौ अधीन॥नी
ल कमल से दृगनि मे तियके भाल कौ
नीर॥७५॥उत्प्रेक्षा उदा हरन॥दोहा॥पीव
गयो उठि इकि यों ऐसोकछु वहु मान॥

यह नहि देखति चलौ सखि यह क्यों सहै गुमान ॥ ७६ ॥ रसांतर ॥ सवैया ॥ मान कियो हृष भान कुमारिन मान्यो गुवा रिन भो र मनाई ॥ और उपाइ थके सिगरे मन मोहन यों तब बातें चलाई ॥ पीछे तिहारे कहा है तिया कहि जोवतियां मनमें भर माई ॥ यों भि भकी उनको लपकी हंसिके नंद नंदन कंठ लगाई ॥ ७७ ॥ करुना तमः ॥ *

दोहा ॥ जहां पुरुष तिय जुगल मे मृत्यु एक की होइ ॥ पुनि जीवनि की आसमें करुना तम गन सोइ ॥ ७८ ॥ जीवर नौका दंबरी पुंडरीक वृत्तंत ॥ सो करुना तम गनत हैं सब पंडित वलवंत ॥ ७९ ॥ प्रवास लछन ॥ दोहा ॥ तन मन होत तियान को ताम नि पास प्रकास । पीतम को परदेसको वास सु बरन प्रवास ॥ ८० ॥ होन हार अरु भयो जो द्वै विधि बरन प्रवास ॥ ताको देत उदा हरन सज्जन सुनो प्रकास ॥ ८१ ॥ भविष्य त प्रवास ॥ क॰ ॥ कैसी करी मनपानेश्वरी सुर तोन धरी छिय हेरि हेरवन ॥ सोर कियो न काहा सजनी उत दादुर मोर पपी हन

वे गन॥ पावस मै परदेस गए पिय ऐसेन
हे कबहू निरदै मन॥ आए नहीं घन स्याम
घेरे कहा देखे नही उनए उनए घन॥ ८२
दोहा॥ प्रथम हेत अभिलाख पुनि विरहा
ईरषा मानि॥ पुनि प्रवास अरु सापपुनि वि
प्रलंभ के जानि॥ ८३॥ अभिलाष हेतु॥
सवैया॥ नैननि की मुस कयानि अनूपम
नैननि बीच सुधा रस नाऊं॥ ओठन को
घन राग लखे मनमे अनुराग प्रमोद बढ़ा
ऊं॥ यो जग रुपर मै अपनो यह तो धन
जीवन भाग गनाऊं॥ बार कहो जु विला
सिनिको मुख चंद बिलास विलोलन पा
ऊं॥ ८४॥ विरह लछन॥ दोहा॥ गुर जना
दि परतंत्र जहं निकटहु मिलनन होइ॥
दंपति को बुध जन कहत विरह का हा वत
सोइ॥ ८५॥ ललित कथा निसि केलि की वि
रह जलधि को सेतु॥ होत दुहुन को द्यौ
समै नख पद पद को हेतु॥ ८६॥ सुंदरि
निरमल सौध रहि सरद चांदनी राति॥ २
कौं रूठी पिय सौं अरी मिहरी मूरख जाति
८७॥ प्रवास हेत॥ दोहा॥ मोहि तोहि चाति

का कहा जल धर जीवन देते ॥ पीउ पीउ रटि रटि मरै निठुर कहा सुधि लेत ॥ ८८ ॥ सेपहेतु का भेघ दूत मै ॥ दोहा ॥ विकृति औकृत वचन जो और वेष कछु होइ ॥ ताते उपजत हास्य जो बरनत हैं सब कोइ ॥ ८९ ॥ वचना दिक बिहात निरषि होत जु चित्त विकास ॥ विग्येषा वहं देखिकै काहत सुकवि जन हास ॥ ९० ॥ हास्य तु थाई भाव जित सुतौ हास रस जान ॥ चाहे उपजत है सुतै आलंबन पहि चान ॥ ९१ ॥ चेष्टा ताकी कहत बुध दीपन इतको होइ ॥ अव हित्था सम आदि पुनि संचारी सो होइ ॥ ९२ ॥ हासस्मित अरु हसित पुनि कहिये और विचारि ॥ और वरनिये उद्ध सित अरु अपहसित निहारि ॥ ९३ ॥ पुनि अति हसित छ विधसु रस है है भिन्न गनाइ ॥ उत्तम मध्यम अधम जन गतस समुझा बनाइ ॥ ९४ ॥ स्मित वाहि विक सित दृगन कछु लखि परै न दंत ॥ काछ्क सित उत मैन को है वर नतवु धवंत ॥ मधुर सु स्वर विहसित सिर: कंप उद्ध सित जानि ॥ मध्यम नर गत हास के

ये द्वै भेद बखानि ॥ आसुन जुत कहि अपहसित बहुरि अति हसित जान ॥ तन परसे युह मीत लै अधमन के मानि ॥ ९७ ॥ सेतवरन यह प्रथम पति दैव तहां सब खानि याको देत उदाहरन सुकवि लेहु मन आनि ॥ ९८ ॥ सवैया ॥ आरसी देखि जसो मति जू सों कहै तुतरात यों बात कन्है या ॥ बैठते बैठ उठते उठै अरु कूदते कूदै चलेते चलैया ॥ बोलतें बोलै हसतें हसै मुख जैसो करौ त्योंही आपु करैया ॥ दूसरौ कौन दुलारो कियो यह कौहै जु मोहि खिभावत मैया ॥ ९९ ॥ इष्ट नासकि अनिष्ट की आगम तें जो होइ ॥ दुःख सोका याई जहां भाव कारन कहि सोइ ॥ १०० ॥ आलंबनिग सोक इत ताकी दाह क्रियादि उद्दीपन अनु भाव गनि रोदन भूपातादि १०१ ॥ निर्वेदा दिक होतहैं जामे बहु विधि चारि ॥ तेसब अपनी बुद्धि बल लीजे बिबुध विचारि ॥ १०२ ॥ यह कवार रंगरस कहो जमदैवत जहं जानि ॥ याको देत उदाहरन सुनो सुजन मन आनि ॥ १०३ ॥ कवित्त ॥ १

ऐसी भाँति राम सब नीतको प्रकार पूछो भरत सुनायो रोइ पिताको मरन है ॥ विहूल अंगनते अचेत ह्वै गिरेहैं भूमि भाइ दूनको गन देखि भयो असरन है ॥ तेरेही वियोग तें तिहारे पिता प्रान तजे तुमको धराको अब धीरज धरन है ॥ यह सुनते ही राम सूनो सब जग लख्यो वाही समै ह्वै गयो वदन विवरन है ॥ १०४ ॥ वैदेही रोवै तीनो भाई लगे रोवन त्यों जागि रघुनाथ ए वचन मुख काढ़े हैं ॥ रोवो जिन कोउ कहा तुम्है कौन दोसु राजा मेरे काज प्रान तजे मेरे प्रान गाढ़े हैं ॥ तुमहू नहुतें ढ़िग जीवें वाहे कौन भाँति मैंतो दूरजन जिन आगहू नठा ढ़ेहैं ॥ ऐसी बातें कहि कहि भरतसों रोइ राम नैन जल जनते विपुल जल बाढ़े हैं ॥ १०५ ॥ भरत वचन बोलो एअबहू तु कहा उठो तीनो जने चलि उदक क्रिया करो ॥ लछि मन सीताको बिलोकि कहो ऐसी भांति अब उठो चलो धीरको धरो ॥ साथमै सुमंत आरु भाइ सब मंदाकिनी जल क्रिया करें भेरे असुवान सो गरे

पुनि गिरि चढ़ि आर उटज के द्वारमैं पुका
रसब रोर संसार की दसा जरी ॥ २०६ ॥ *
दोहा ॥ अरि विरचित अप राधतें चित्त
प्रज्वलन क्रोध ॥ सोथाई जित रौद्र सों ब
रनत निर्मल बोध ॥ २०७ ॥ आलंबन अ
व बरनि ये उद्दीपन मन आनि ॥ ताको जो
आचार सब बुधजन लखत बखानि २०८
भृकुटि भंग दृग अरुन अरु अधर दंस
इत्यादि ॥ अरु बरनत अनु भाव रु व्यभि
चारी इत्यादि ॥ २०९ ॥ अरु बरनत अनु
भाव रु ॥ दोहा ॥ रक्त रंग रुद्राधि पति सो
द्र बखानो जाइ ॥ ताको देत उदा हरन सु
कवि सुनो मन लाइ ॥ २१० ॥ घनाक्षरी ॥
वाह्यो खरद अस गुनको गनतु छिनस
बामैं त्वक तप मीन मारौ ॥ धरनि पारौ
सरन छेदि नभतारिको समर मैं सचीप
तिको संघारौ ॥ मीचुको मीचु संनिहत
कर सकत हो भुज नवल प्रवल पट्टै उ
खारौ ॥ मद वैमान कुमार ह्व मारद्वै उत्तम
निमित्त तिनको बिचारौ ॥ २११ ॥ अति
अपार आकास धूरि पूरन सम गाकारि ।

अह निसि बासर छंद चलिय उद्दाम सर प
धरि॥ दिक्किय पूरन विपति सोक रावन
के देसहि॥ चलौ उजारौं लंक दौरि मारौं लंके
शहि॥ चिंता मनि बल गन धरत सब बल उ
द भट समर भट॥ अति प्रबल बिपुल क
पि बल जलधि पहुच्यो दक्खिन जलधि
तट॥०॥११२॥ जो लों को नर काज में थि
र जंत उत्साह॥ सो जामें पाई सुरसुवी
र कहत कबि नाह॥११३॥ जेत व्यालंबन
वरन ताको इंगित कोइ॥ उद्दी पन धृत्या
दि पुनि संचारी इत सोइ॥११४॥ नायक को
आचरन जो सो गनिये अनु भाव॥ दान
धर्म के सह्य के दयासु आदि गनाव॥११५
इंद्र देवता कनक सम वरन सुया को जानि
उत्तम नायक बिषम जहं होइ सुकबि म
न आनि॥११६॥ सुभावादि इनके जु कछु
बुध जन बुधि बल जानि॥ इनके देत उदा
हरन सुकबि सुनो मन आनि॥११७॥ सह्य
वीर को उदा हरन॥ घनाक्षरी॥ गए गिरि
दरी वन लखन लै जानि कीहि रामजू का
वच निज अंग कीन्हो॥ दिव्यत नीर सों

है सुभग अंग मौरा चिर रघुवीर कर चाप लीन्हो॥ कियो घन गरज घन धनुष टंकोर अस ललित मुख हरष झलकोन वीनो॥ आइ भरि व्योम मुनि सिद्ध गंधर्व जै बोलि रघुनाथ को विजै दीनो॥११८॥ तबै घरको पकरि आप आयो उतै जिते सर चाप धरि राम राजें॥ संगले सघन घन संघ समर ह्वगन तिष्य तमयास्त्र वरखा नि साजें॥ परस त्रिसूल आस पास मुद्गर विपुल असनि सम राम पर डारि गाजें॥ समुद्र ज्यों आप गावेग सहि आपु घन वेग सहि छविन रघुवीर राजें॥ ११९॥ ❋ राम भुज दंड पाछे लिख्यो है॥ दान वीर॥ कवित्त॥ करिये लखन अभि षेक विभीषन जू को लखन विभीखन को कीन्हो अभिषेकहै॥ वडो सुख पायो वानरन रीछ राकसन भयो मनो सवनि सुर ससेकुहै॥ ल्याए राम जू को साध मोदक अछत राज मंडलकी साज भयो उछव अनेकुहै॥ रावन संघारो राज्य दियो विभीखन को जगत सरा हो रघुनाथ को विवेकुहै॥१२०॥

परम अपार भवसागर उतारि वेको॥ पीछे
लिख्यो है॥ कवित्त॥ अवधनि घट नंद गा
उ कोस एक पर निरख्यो करवाए पदधा
री होग साथको॥ चिंता मनि काहे मृग चर
म जटानि धरे मुनि वे ष जगत अभयका
र हाथको॥ वंस अलं कृत करि आपने
चरित्र सत्यकारी भागी रथ आहरन गाथ
को॥ जाइ हनूमान देख्यो धरम वृतन धरे
पेख्यो है भरत उतभैया रघुनाथको॥ १२१
दया वीर को उदा हरन॥ दोहा॥ इंद्र कह्यौम
न मोद धरि यों सुनिये श्रीराम॥ कौसि-
ल्या सु प्रजा भई पाइ पूत गुन धाम॥ १२२
इंद्र कह्यो अव माग वर यों वोले दृतराम
वे जीवें कपि रीछजे मरे महा संग्राम ॥
१२३॥ जे फल मूल अकास हू पावें वानर
वीर॥ होंइ विमल वेसवनदी विलसैंजिनके
तीर॥ १२४॥ इंद्र कह्यो ह्वैहे इहे राम तिहा
रे हेत॥ सुने काहू संसार मे जीवत काह परे
त॥ १२५॥ ह्वैहे सब जो चाहियतु यों कहि
गयो अकास॥ सबके देखत समरमे वरस्यो
अमृत प्रकास॥ १२६॥ परसोन राकस लोथ

पर काहूं अमृत को बिंदु ॥ मोह गयो मृत क पिन को उयो ज्ञान को बिंदु ॥१२७॥ उठे ह्रू त्तिन विन कपि सवे जग ईश्वर भगवान दसरथ नंदन रामजू करी भलो किवठा न ॥१२८॥ रौद्र चित्त भव चित्तको विकलता भय जानि ॥ सो यामे थाइ सुरस भयान कहि पहिचानि ॥१२९॥ जाके उपजत हैं सुरो ते आलंबन जानि ॥ ताके इंगित जे कछू उद्दीपन ए मानि ॥१३०॥ वे वर्नादिक वने ए जाके द्रुत अनुभाव ॥ शंका भ्रांतादि क कहे ते संचारि गनाव ॥ १३१॥ काल वरन याको वरन काल देवता मानि ॥ याको देत उदा हरन सुकवि लेहु मन आनि ॥१३२॥ भयानक को उदाहरन ॥ अति अनीत रुकामी मरो राम विसरो गात ॥ भजे कलिंगाधिपति के रोरउखोरे दांत ॥१३३॥ वीभत्सलक्षण ॥ दोहा ॥ देखे कुत्सित वातको चित्त जुगुप्सा जाने ॥ सोहे थाई भाव जित सो वीभत्स वखानि ॥१३४॥ रुधिर मास दुरगंध अरु आलेवन मज्जादि ॥ महा काल पति नील रं

॥ उद्दी पन क्रम आदि ॥ १३५ ॥ अपस मा
र आवेश अरु मोहा दिक अभिचारि ॥
बरनत रस वी भत्स में सज्जन लेहु बि
चारि ॥ * ॥ १३६ ॥ कवित्त ॥ * ॥ विप्र विपु
ल निअ्गर वानर वपु विगत प्रान रन मं
डल खंडिय ॥ सज्जत गज्ज उदलतन
वाजनु निरखि निप पति साहस छं
डिय ॥ समर भूमि पर तुरत वेगि उठि
भिरत रुधिर जल सरित उमंडिय ॥ *
ढाल काच्छ भुज खंड मच्छ सम सिकाता
अस्थि मुसल्ल शिल्ल कंडिय ॥ * ॥ १३७ ॥ *
दोहा ॥ निरखि अलौ किक — वस्तु जो
होत चित्त विस्तार ॥ सो विस्मे थाई जि
ते सो अद भुत रस सार ॥ १३८ ॥ वात अ
लौ किक जो कछू सो उद्दी पन जानि
महिमा जाके गुनन की सो उद्दी पन मा
नि ॥ १३९ ॥ आलं वनगनिवस्तु जो वरन
अलौ किक सोइ ॥ उद्दी पन ता गुनन
की महि मा जो कछु होइ ॥ १४० ॥ नेत्र
विकासा दिक जहां वर नत हैं अनु भा
व ॥ हर्ष विलकों दिक इते संचारी स

सुभाव॥१४१॥पीत वरन सो वरनियै म
न मय दैवत मानि॥याके देल उदा हरन
सुकवि लेहु मन आनि॥१४२॥कवित्त॥
बाल पन कौसिक के मख के विघन का
र निसा चर मारे सिलापगरज तारी
है॥गहहर चाप तोरौ बाप सत्त वैन
कीन्हो कानन सिधारे गज सिरो नानि
हारी है॥वाली मारौ महा बली राक-
स संघारे पांति रावन के भुज दंडन
को मही पर पारीहै॥दीन्हो निजु धा
मल अवधि दया निधि को अव धन
रेस राम अवधि उधारीहै॥१४३॥कवित्त
कोमल कर कमल कर कस गिरि तै
उतारि धरि लाल मेरौ मनु अकुलातु
है॥जीवैगो सोजीवै जो मरैगो वहु मरै
मोसों कैसे निजु वालक कलेस देख्यो
जातुहै॥मेरो कह्यो करन तो निकारि म
हैगी कहि चली जहां कर का सिलानि
को निपातु है॥जहां कढे गोपी गोप म
न संग नंद रानीतहां रसा करिबे को अ
चल अधि कातु है॥१४४॥संत लहरा

॥ दोहा ॥॥ सम कहियत वैराग्यते नि
र्वि कार मन होइ ॥ सो थाई जित सांत
रस वर नत हैं सब कोइ ॥ २५५ ॥ कुंद इंदु
सम धवल यह श्री नारायरा आप ॥ या
रसके अधि देवता जे मेटत सब ताप ॥
२५६ ॥ आलंबन संसार के निश्चित सत्व
बखानि ॥ के पर मारथ अरथ जो सो आ
लंबन जानि ॥ २५७ ॥ पुन्या श्रम हरि क्षे-
त्र अरु तीरथ रम्य बनादि ॥ ताके उद्दीप
न गनत महा पुरुष संगादि ॥ २५८ ॥ र
पुलका दिक अनुभाव गनि संचारी ह
र षादि ॥ सकल साधु सेवत लसत यह
अति विमल अनादि ॥ २५९ ॥ कवित्त ॥

पूरन विमल गुरु कृपाके प्रभा
व सब बिगरे प्रपंच भरु व्याप
क गगन है ॥ प्राचीन कर्म भोग
करति जो देह ताकी सुधिनका
छुहै ऐसे मान्यों जगत है ॥ का
म क्रोध लोभ मद मतसर आदि
महा मोहके बिलास ठग सत
ठगन हैं ॥ धन्य जन कोऊ राम

अभिराम ब्रम्ह ज्ञान आनंद १
अपार पारा वार में मगन हैं १५०

॥ दोहा ॥

यह रस पुनि सु अलक्ष्य क्रम व्यंग आतु धनि हारि ॥ शृंगारादि विसेष पद वाच्य कहत विचारि ॥ १५१ ॥ वाचक पद रसु य है जो सब साधारन नाम ॥ चिंतामनि कवि कहत है समझौ बुध अभिराम ॥ १५२ ॥ इन शब्दन तें कहत हू वंधन रस को होइ ॥ यातें रस सब ठौर में व्यंग्य कहत सब कोइ ॥ १५३ ॥ कछु विभाव अनु भाव कछु अधिक बहुत संचारि ॥ व्यज्जित थाई भाव सों रस क्रम यह निर धारि ॥ १५४ ॥ व्यज्जित सुरस को क्रम जु य ह समुझै रस ध्वनि नाम ॥ जो रस या सो होत है सज्जन मन अभि राम ॥ १५६ ॥ त्योंही भाव विचार रस भावन के आभा स ॥ भाव शांत्या दिकौ पुनि अक्रम व रन प्रकास ॥ १५७ ॥ देव पुत्र गुर आदि जे तिनमें जो रति भाव ॥ कै संचारी व्य ज्जित सो थाइ भाव समु भाव ॥ १५८ ॥ देव

विषय करति भाव को उदा हरन ॥ सवैया ॥
ऐसे बैसे अजहू नहि होतु रखसो जोप
सो तिहु ताप के तायन मे ॥ काछु पंच
न दोसु कहा पर पंच जुपै नहीं के सभा
यन मे ॥ मनि होतु सदा शिव रूप तुही
जो प्रकास वडो यो सुहायनमे ॥ यहु बं
धन जो मन ही को कियो मैने बांध भवा
नीके पायन मे ॥ १५९ ॥ दूसरो उदा हरन ॥
कवित्त ॥ चारु मुख चंद मंद हसनि मनो
हर है चिंता मनि मोतिन की माल हरि
के गरे ॥ लाल पीत पट नटकटिल पटा
ये नट नागर निपट रम नीय रूपकोकरे ॥
का ननको मोतिन की चंद्रिका कपोल
चम कत जरी चीरा पर मोर चंद्रिका
धरे ॥ कोटि काम सुंदर बिरा जत कुंवर
कान्ह कालिंदी के कूल मे कदंब तरुके
तरे ॥ १६० ॥ शुद्ध विषय करति भाव को उ
दा हरन ॥ कवित्त ॥ कुलही ललित जरक
सी जग मगी भरे भालर मे भलकत १
मुकता हसी सुढार ॥ केसर के रंग रगी १
झीनी सी भगुलि या मे भलकत अंग दुः

वलय रल सुकुमार ॥ हसत बदन रतिया है देखि चिंता मनि जनम सुपाल कारि माने दसरथराय ॥ गोद लैके राम जू को आनंद मगन मैया ललकि कै बलैया लेत बार बार ॥ १६१ ॥ रसाभास ॥ दोहा ॥

अनुचित विषय बारति जुहै
सोई रस आभास ॥ अनुचित
विषयके भावजो सो पुनि भा
वाभास ॥ १६२

बैठि भरोखे मारि दृग बानन बारति कुवाज ॥ मृग नैनी मृगया रची तरुन मृगन पर आज ॥ १६३ ॥ भावा भास ॥ दोहा ॥ पाइ न परि ईश्वर काहे जाको सुर नर नाग ॥ पग मिधि वध रावन कियो रघुपति जू रन जाग ॥ १६४ ॥ उपसमया वें भाव र जो भाव संत सो जानि ॥ भाव उदै आदिका सुतो उदया दिका पहिचानि ॥ १६५ माल वती पीतम लख्यो खरो दीन मुख दूरि ॥ औचक ही लोचन जलज आरज लसों पूरि ॥ १६६ ॥ भावो दय को लछरण

॥ दोहा ॥

बेंदी पिय पट सों लगी लीनी अलीउता
रि॥ चूड़ि गई अब लोकि उत सकुच सिं
धु सुकु मारि॥१६७॥ भाव संधिको उदा
हरन॥ कवित्त॥ चारु मुख चंद राम चं
द अर विंद नैन दूंदी वर देहु दुति लल
नि सुहाई हैं॥ कानन के मुकता फल
नों की झलकि मंद हसनि कपोलनि
अमोल छबि छाई हैं॥ रीझी सुकुमा
रि दसरथ के कुमार लखि भीषम धनु
ष दीन सुख सुर भाई हैं॥ ह्वैके बिह ब
लतन जानुकी बिकल मनहि मनसैल
सुता कुल देवता मनाई हैं॥१६८॥ *

भाव सबलता

कवित्त॥ दूरहीतें सोंही चारु चचल हसो
ही ऊंची भौंहन के संग सोहे सुभग नवे
लीकी॥ आयो जब ढिग तब सुबरन बे
ली पर लीन्ही उन हारि है खंजन जुग
केलीकी॥ पुनि अध खुली दूंदी वर
की वालीसी आइ परी है तिरी छीडीठि
बचा के सहेलीकी॥ बिबिधि कटाक्ष भाँ
ति मैन सर पांति खरी खुली आसु अ-

रियां अनूप अल बेलीकी ॥ १६९ ॥॥

इतिश्री चिंता मनि बि
रचिते कबिकुल कल्प
तरौ अष्टमं प्रकारणाम्
समाप्तम् शुभ मस्तु ॥॥

हस्ताक्षर चराडी दत्त ब्राम्हण कान्यकुब्ज